अप्रैल-जून, 1999; अंक 5

10 रुपये

राष्ट्रीय विचार पत्रिका

● बाल श्रमिकों की मुक्ति - डा० शुभंकर बनर्जी ● सौतेली माँ का खौफ - कृष्ण कुमार राय ● राजनीतिक कलाबाजियों का शिकार 12वीं लोकसभा ● अपने से धोखा खाये मुलायम सिंह यादव ● वंशवाद के विरूद्ध बिगुल ● रेणु की कथाओं में सामाजिक चेतना - सिद्धेश्वर ● कानून तोड़ने का कानून - प्रो० रामभगवान सिंह ● बिहार की विभूतिः अमेरिका की चुनौती

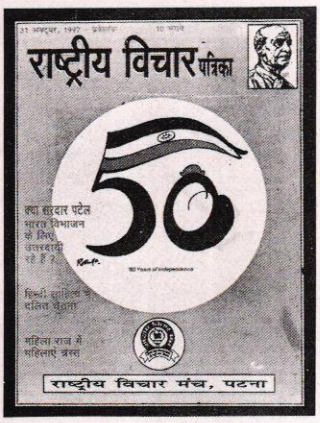

अंक-1

अंक-2

अंक-3

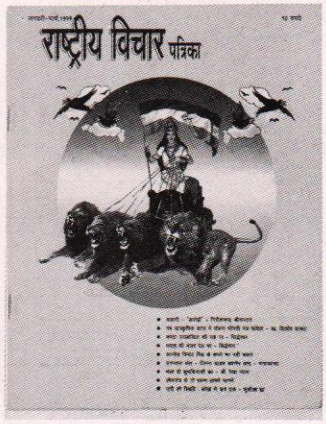

अंक-4

राष्ट्रीय विचार पत्रिका

सदस्यता / ग्राहक प्रपत्र

हम **राष्ट्रीय विचार पत्रिका** के वार्षिक/दो वर्षीय/पांच वर्षीय/दस वर्षीय/आजीवन सदस्य/संरक्षक सदस्य बनना चाहते हैं।

सदस्यता शुल्क.......................................रुपये मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट/चेक सं. ....दिनांक .... भेज रहे हैं।

हमारी प्रति निम्न पते पर भेजें।

नाम .... पता...पिन कोड..............

सदस्यता शुल्क

राष्ट्रीय विचार पत्रिका

		भारत	*विदेश*
वार्षिक	-	50 रुपये	3 डॉलर
दो-वर्षीय	-	100 रुपये	5 डॉलर
पाँच-वर्षीय	-	250 रुपये	10 डॉलर
दस-वर्षीय	-	500 रुपये	18 डॉलर
आजीवन	-	1000 रुपये	50 डॉलर
संरक्षक	-	5000 रुपये	500 डॉलर

राष्ट्रीय विचार मंच

		भारत	*विदेश*
वार्षिक	-	25 रुपये	3 डॉलर
आजीवन	-	500 रुपये	50 डॉलर
संरक्षक	-	1000 रुपये	100 डॉलर
संपोषक	-	2000 रुपये	200 डॉलर

बैंक ड्राफ्ट / चेक 'राष्ट्रीय विचार मंच' के नाम देय होगा।

राष्ट्रीय विचार पत्रिका

विज्ञापन दरें

आवरण पृष्ठ (रंगीन)

	एक बार	चार या अधिक बार
1. अन्तिम पृष्ठ	8000 रुपये	6000 रुपये
2. द्वितीय पुर्ण पृ.	4500 रुपये	4000 रुपये
3. द्वितीय आधा पृष्ठ	2500 रुपये	2200 रुपये.
4. तृतीय पूर्ण पृ.	4500 रुपये	4000 रुपये
5. तृतीय आधा पृ.	2500 रुपये	2200 रुपये

भीतरी पृष्ठ

	एक बार	**चार या अधिक बार**
6. रंगीन पूर्ण पृष्ठ	1500 रुपये	1200 रुपये
7. रंगीन आधा पृ.	800 रुपये	700 रुपये
8. साधारण पूर्ण पृ.	1000 रुपये	800 रुपये
9. साधारण आधा पृ.	600 रुपये	500 रुपये
10. साधारण चौथाई पृ.	400 रुपये	300 रुपये

विज्ञापन के लिए संपर्क करे

राष्ट्रीय विचार पत्रिका, 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1, दूरभाष 228519, **Email-ranjansudhir@hotmail.com**

राष्ट्रीय विचार पत्रिका

राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित
मंच का त्रैमासिक मुख-पत्र
वर्ष-3 अप्रैल-जून, 1999 अंक-5

------ पत्रिका परिवार ----
संरक्षक :
रामरतन चौधरी, कलकत्ता
प्रधान संपादक :
सिद्धेश्वर
संपादक :
डॉ. हीरालाल सहनी
सह संपादक :
कामेश्वर मानव
उप संपादक :
विनय कुमार सिन्हा
सहायक संपादक :
राधेश्याम, मनोज कुमार
संपादन सहायक :
दिलीप कुमार सिन्हा

कार्यालय : नई दिल्ली
सुधीर रंजन, प्रबंध संपादक
118, मस्जिद मोठ, साउथ एक्सटेंसन-II
नई दिल्ली-110049
दूरभाष- 91-11-6255190
Email-ranjansudhir@hotmail.com

कार्यालय सहायक :
विष्णुदेव प्रसाद, अयोध्या प्रसाद
संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800001
दुरभाष : 0612-228519

मूल्य : एक प्रति 10 रुपये
आजीवन सदस्य : 1000 रुपये

ब्यूरो प्रमुख, प्रतिनिधि व संवाददाता

नई दिल्ली	:	डॉ०मेदनी राय, प्रो०राजेश
मुम्बई	:	बालकवि प्यासा
कलकत्ता	:	कमलेश कुमार
बोकारो	:	सुरेश कुमार
जबलपुर	:	भवानी प्रसाद चौकसे
पटना	:	विन्देश्वर प्रसाद गुप्ता
रांची	:	राजेन्द्र प्रसाद
धनबाद	:	प्रो०बी०बी०शर्मा
डाल्टनगंज	:	अरविन्द प्रसाद
रक्सौल	:	रवीन्द्र ठाकुर
मधुबनी	:	बिल्टू सहनी
जयनगर	:	डॉ. राजकुमार गुप्ता
खगड़िया	:	मुल्कराज आनन्द

प्रकाशक :
राष्ट्रीय विचार मंच, पटना
शब्द-संयोजनः रंजन कम्प्यूटर्स, पटना
मुद्रकः प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड,
ओखला, नई दिल्ली

सृजन और सृजनहार

	पृष्ठ
पाठकीय पन्ना-	2
संपादकीय-	4
विचार / चिन्तन :	
बाल श्रमिकों की मुक्ति - डा०शुभंकर बनर्जी	5
कहानी :	
सौतेली मां का खौफ - कृष्ण कुमार राय	7
राजनीति :	
भारतीय लोकतंत्र- डा० वैद्यनाथ शर्मा	9
शख्सियत :	
डा० राजनारायण राय और उनका बाल-साहित्य- बाबूराम वर्मा	12
भेंटवार्ता :	13
कोई महापुरुष भारत को बचा लेगा-श्री राजेन्द्र पालपुरी	
लघु कथा :	14
राजनीतिक नजरिया : विनय कुमार सिन्हा	
राजनीतिक कलाबाजियों का शिकार 12 वीं लोकसभा	15
अपने से धोखा खाये मुलायम सिंह यादव	16
कम्युनिष्टों का कांग्रेसी प्रेम	16
वंशवाद के विरूद्ध बिगुल	17
समाचार दर समाचार :	18
काव्य कुंज :	21
प्रदीप गौतम सुमन, शत्रुघ्न प्रसाद, राम स्नेही वर्मा, वीणा जैन, जयनारायण मिश्र हेम, डा०पुष्पा चौरसिया, श्रीमती सुधा गुप्ता 'अमृता', अमरनाथ मेहरोत्रा, भारत कु०अतुल, अनिरूद्ध कु०सिंह, भुवनेश्वर मिश्र, शेखर कु०श्रीवास्तव,	
गज़ल :	23
गौरी शंकर श्रीवास्तव पथिक, यादराम शर्मा, घनश्याम, सलीम अंसारी, शैल शिखर	
समीक्षा :	
मौन मुखर कविताओं का संवाद-परेश सिन्हा	24
अवचेतन की अमूर्त्त रचना-सत्यारायण लाल	25
आलेख :	
रेणु की कथाओं में समाजिक चेतना-सिद्धेश्वर	26

	पृष्ठ
अध्यात्म :	
धर्मग्रन्थों में श्राद्धकर्म नहीं-बनारसी सिंह 'विजयी'	27
व्यंग्य :	
कानून तोड़ने का कानून-प्रो०रामभगवान सिंह	28
न्याय-जगत :	
न्यायपालिका में प्रतिनिधित्व का सवाल -कामेश्वर मानव	29
नारी जगत :	
भारत में नारी शोषण - डॉ०नारायण दास	30
समाज :	
जाति धर्म सब एक समान -अशोक जोशी	31
सेहत-सलाह:	
पीलिया रोग का होमियोपैथी उपचार -डॉ०सी०पी०साह	32
साहित्य समाचार :	33
कला-संस्कृति : बिन्देश्वर प्रसाद गुप्ता	36
गतिविधियां :	
मंच के कार्यकलाप- मनोज कुमार	37
श्रद्धांजलि :	
देशभक्त महापुरुष एवं शहीदों के लिए	38
बिहार पर विशेष :	
बिहार में बहार नहीं - रामसंजीवन शर्मा	39
बिहार की खोई प्रतिष्ठा वापस लाने का प्रयास	41
देश-विदेश :	
बिहार की विभूति अमेरिका की चुनौती : -पद्मश्री लक्ष्मी नारायण दूबे	42
खेल-खिलाड़ी :	
सातवां विश्वकप-प्रभात कुमार सिंह	44
फिल्मावलोकन :	45
विविधा :	46

पत्रिका-परामर्शी

1. मान. न्याया. श्री बी. एल. यादव
वरिष्ठ अधिवक्ता, उच्चत्तम न्यायालय
2. पद्मश्री डॉ. श्यामसिंह 'शशि'
सुप्रसिद्ध साहित्यकार
3. श्री गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव
अपर उपनियंत्रक-महालेखापरीक्षक
4. श्री जियालाल आर्य, भा.प्र.से.
राज्य निर्वाचन आयुक्त, बिहार
5. प्रो. रामबुझावन सिंह
पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष
6. कविवर गोपी वल्लभ सहाय
सुप्रसिद्ध गीतकार
7. श्री बाँकेनन्दन प्रसाद सिन्हा
पूर्व केन्द्र निदेशक, आकाशवाणी
8. श्री अयूब खान
सुप्रसिद्ध समाजवादी

रचनाकार के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं

रचनाकारों से ही कुछ उम्मीद बची

संपादकीय में आपने कई सामयिक प्रश्नों पर विचार-विमर्श के लिए उकसाया है। राजनेता जिस अशिष्टता और अभद्रता से संसद में, एक-दूसरे से पेश आते हैं, उसे देश-विदेश में करोड़ों जन देखते हैं और नेताओं की चारित्रिक पतन की पराकाष्ठा देख हमारा शिर शर्म और क्षोभ से झुक जाता है। अब रचनाकारों एवं समाजिक कार्यकर्ताओं से कुछ उम्मीदें बची हैं कि वे निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर आम जन की चिंता करें, उन्हें उनके अधिकारों के लिए लड़ना सिखाएं। दोनों कहानियां अच्छी हैं एक परिवारिक मूल्यों के विघटन की कथा है तो दूसरी धर्म की आड़ में राजनैतिक कुटनीतियों की।

चन्द्रकान्ता, बी-769, पालम विहार, गुड़गांव

प्रभावशाली संपादकीय

आवरण पृष्ठ और पत्रिका में समायोजित सामग्री ने मन को मुग्ध कर दिया। संपादकीय बहुत ही प्रभावशाली है। राजनीतिक नजरिया पृष्ठ पर लेख **ममता जयललिता की राह पर** बड़ा चुटीला और सटीक है। निर्भिक और स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिए कृपया मेरी बधाई स्वीकार करें।

कृष्ण कुमार राय, अर्दली बाजार, वाराणसी

सम्पादकीय उपयुक्त

पत्रिका उत्तरोत्तर आकर्षक है, अधिकांश रचनाऐं उत्कृष्ट कोटि की हैं। **'ड्योढ़ी' और 'चूहे का शिकार'** कथाशिल्प की दृष्टि से उच्च स्तरीय हैं। सम्पादकीय में देश के प्रति कर्त्तव्य निर्वाह का आग्रह है, जो वर्त्तमान संदर्भ में उपयुक्त है। दलगत राजनीति से अपने विचार को ऊपर रखें तो पत्रिका निश्चय ही गले-गले की कंठहार बन जाय।

नृपेन्द्रनाथ गुप्त, शेखपुरा, पटना-14

पत्रिका मासिक हो

पत्रिका का मुख्य पृष्ठ देखकर ही मैं काफी प्रभावित हुआ क्योंकि यह इसके नाम की सार्थकता प्रकट करता है। संपादकीय प्रभावकारी लगा। 'चूहे का शिकार' कहानी काफी रोचक एवं सामाजिक है। उपन्यास एवं काव्यांश भी प्रभावकारी है। पत्रिका को मासिक करने का नम्र निवेदन। अन्त में राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत पत्रिका के संपादन के लिए आपको बधाई।

प्रो०(डा०)राम नारायण साह, दरभंगा

बेबाक संपादकीय

पत्रिका के आद्यान्त अवलोकन से लगा कि आपने इसे अपने प्रयासों से बहुआयामी, स्तरीय सामग्रियों से संबधित राष्ट्रीय व सामाजिक अस्मिता के पार दृश्यों का दर्पण और समसामयिक विषयों पर बेबाक सम्पादकीय से सुधी पाठकों को बरबस अपनी ओर आकृष्ट करने योग्य बनाया है।

भारत माता के चित्र से सजा हुआ कलेवर अच्छा लगा। कविताएं, कहानियां लेख सभी अच्छे लगे। जीवन के अनेक पहलुओं को छूते हुए लेख, व्यंग्य, समाचार, राजनैतिक तथा साहित्यिक और भी अनेक जानकारियां मिली।

वीणा जैन 29/10 वालीगंज पार्क, कलकत्ता

राष्ट्रीय सोच की आवश्यकता

राष्ट्रीय सोच के आधार पर प्रकाशित आपकी यह पत्रिका बहुत ही उपयुक्त, सुन्दर तथा मनोहर लगी। आज के युग में जिस तरह की गंदी राजनीति, भष्ट्राचार, लूटमार, जात-पात, आतंकवाद, हत्याकांड, अपहरण, बलात्कार अभद्र तथा अमानवीय व्यवहार देखने तथा सूनने को मिलता है, उस हालात को देखते हुए आपकी पत्रिका राष्ट्रीय सोच के आधार पर लेख तथा कविता के माध्यम से जन-जागरण के लिये संजीवनीबूटी का काम करेगी।

आपका संपादकीय लेख, सम्मानीय श्री गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा रचित ''ड्योढ़ी'' तथा श्री जी० सी० एल श्रीवास्तव की रचनाएं यौन विकृतियाँ इत्यादि बहुत समुचित ढंग से प्रस्तुत की गई हैं।

'करुणेश' तथा घनश्याम की गज़लें पसंद आई। बच्चों के लिए चुटकुलें तथा तीन माह तक पंचांग संबंधी विवरण भी अपेक्षित है।

डॉ०बद्रीकांत झा 68/4, पुष्प विहार, नई दिल्ली-17

इन दिनों पत्रिका निकालना बहुत साहस का काम है और बहुत ही सजावट के साथ राष्ट्रीय विचार पत्रिका निकालने के लिए मैं आपके साहस की सराहना करता हूं।

भोलानाथ आलोक, नया सिपाही टोला, पूर्णिया

एक भारतीय आत्मा

पत्रिका की सामग्रियां अपने नामानुरूप लगीं। आज फिर वह समय आ गया है, जब राष्ट्रीय हित के लिए एक मुहिम चलाने की जरूरत आ पड़ी है। रचनाकारों को फिर 'एक भारतीय आत्मा' बनकर कलम चलाने की नौबत आ चुकी है। संपादकों को 'विद्यार्थी' बन जाना है और कथाकारों को प्रेमचन्द। 'चन्द्रकान्ता' की उपन्यासिका से कश्मीर में एक आन्दोलन हो सकता है जो अत्यन्त जरूरी है।

डॉ.प्रमनाथ मिश्र, कछाड़ पेपर मिल, असम

सुरूचिपूर्ण सामग्री से भरपूर यह पत्रिका गागर में सागर है।

प्रो.रामभगवान सिंह, लोहरदग्गा

यथा नाम तथा गुण

यथा नाम तथा गुण को सार्थक करती यह पत्रिका विभिन्न युगीन समस्याओं पर प्रासंगिक विचार प्रस्तुत करती है। डॉ. किशोर काबरा का लेख विशेष रुचा काव्य-कुंज' के बहुगन्धी सुजन-सुमन भी अपने सौरभ से आप्यायित करते हैं। साधुवाद।

अनन्तराम मिश्र 'अनन्त', खीरी'(उ०प्र०)

रेखाचित्र का अभाव

यह अंक उत्कृष्ट बन पड़ा है, इसमें संदेह नहीं। प्राय: सभी सामग्रियां पठनीय हैं तथा सुरूचिपूर्ण भी। सबसे बड़ी बात कि इसमें वैविध्यता है, जो विभिन्न रूचि के पाठकों को इसके अवलोकन अध्ययन हेतु मजबूर करेगा। अंदर के पृष्ठों पर कुछ रेखाचित्र होते तो सुंदरता निश्चित की बढ़ जाती। लघुकथाओं को भी स्थान दिया करें।

संजय सिन्हा, पो.बॉ.नं.-164, आसनसोल

सामग्री शिक्षाप्रद

अंक की सामग्री रुचिकर व शिक्षाप्रद सिद्ध हुई। अंक में प्रकाशित लेख 'नव सांस्कृतिक काल में यंत्रणा भोगती मंत्र कविता' गहन स्तरीय, शोध त्मक व ज्ञानवर्द्धक सिद्ध हुआ। लेखक को बध ाई दें। 'कामरेड विनोद मिश्र' पर अच्छी जानकारी दी गई है। कवि राजा चौरसिया की कलम भी चमत्कारी रही है। बधाई व अभिनंदन।

प्रो. शरद नारायण खरे,

गागर में सागर

राष्ट्रीय विचार पत्रिका का ताजा अंक देखकर और पढ़कर मुग्ध हो गया। राष्ट्रीय विचारों से ओत-प्रोत विविध रचनाओं के संकलन ने यह प्रमाणित किया है कि गागर में सागर भरा जा सकता है अत: संपादकीय परिवार न केवल बध ाई के पात्र हैं अपितु श्रद्धा और आदर के पात्र है। आपके इस महान यज्ञ में अपनी सदस्यता के लिए शुल्क भेज रहा हूं। स्वीकार कर अनुगृहीत करेंगे।

राधेश्याम केशरी, मुंगेर-811201

बहुआयामी पत्रिका

पत्रिका सभी के सरोकार की है। इसे एक सम्पूर्ण बहुआयामी पत्रिका बनाने की चेष्टा की गई है। सम्पादक पर्याप्त सक्षम और पहुंच वाले प्रतीत होते हैं। पत्रिका का भविष्य भव्य है। छपाई उच्च कोटि की है। गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव की कहानी **'डयोढ़ी'** प्रेमचन्द के स्वर और टक्कर की हैं झकझोर देनेवाली पत्रिका की पहली कविता मधुप पांडेय की है, जिसमें हास्य-विद्रूप जरूर है, कविता नहीं है। राजा चौरसिया, डा. उदयशंकर(मगही कवि)की कविताएं टिकाऊ है। गज़लों ने परम्परा और लफ्जों को ढोया है-पुरानी-पुरानी सी बातें हैं। डा. श्यामसुन्दर घोष ने बाबा नागार्जुन को याद करते हुए उनके रचना कौशल की छवि उतार दी है। इसका राजनीतिक मंच साहित्यिक मंच से अधिक तगड़ा है। एक सफल और सार्थक पत्र है।

नलिनीकान्त, अण्डाल, प०बंगाल

असंगत परिवेश में सुन्दर

नाम सुना था, किंतु यह पहला ही साक्षात्कार है पत्रिका से मेरा। बिहार पत्रकारिता के लिए भी उर्वर क्षेत्र रहा है, किंतु संसाधनों की दृष्टि से विपन्न है, आप इस असंगत परिवेश में इतनी सुंदर-सी पत्रिका अच्छे कलेवर में निकाल रहे हैं। यह निश्चय ही आश्चर्य और हर्ष का विषय है। आपने पत्रकारिता का बाजार पकड़ने की कोशिश की है हर वर्ग के लिए रचनाएं देकर, किंतु आलेखों में मुझे कुछ वैसा नहीं नजर आ रहा। बहरहाल, कैफ अहमद कैफी, रामलखन राय, अशोक अजूंम आदि की कविताओं ने प्रभावित जरूर किया।

अश्विनी कुमार आलोक, धरणी पट्टी, समस्तीपुर

सम्पूर्णता की ओर अग्रसर

प्रकाशित सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, साहित्यिक एवं स्वास्थ्य संबंधी आलेखों, रचनाओं को पढ़कर लगा कि यह पत्रिका संपूर्णता की ओर vxzjçSनयी पीढ़ी' स्तंभ की शुरूआत निःसंदेह उनके चिर-प्रतीक्षित एवं गन्तव्योन्मुखी युवा हस्ताक्षर को 'संजीविनी' प्रदान करेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। भारतीय दर्शन एवं बाल-साहित्य से जुड़ी विध ाओं से भी यदि यह पत्रिका सरोकार रखे तो महान मनीषी विचारक योगीराज अरविन्द के संपूर्णता की परिकल्पना को साकार, करेगी। पत्रिका के उतरोतर स्वर्णिम भविष्य का शुभेच्छू।

शेखर कुमार श्रीवास्तव, दरभंगा

वाङ्मय साधना

आपकी वाङ्मय साधना की आक्षरिक प्रतिकृति **'राष्ट्रीय विचार पत्रिका'** के वर्ष-3 का अंक-4 सुरक्षित प्राप्त हुआ। यह अंक भी अपने पूर्वांकों की प्रकाशन परम्परा की सम्पूर्ण गरिमा का ततोधिक भाव से संवहन करता है। इसकी प्रसावन-गत कला वरेण्यता संयत लेखनियों को भी लिखने और छपने को उकसाती और आमंत्रित करती है।

डॉ.श्रीरंजन सूरिदेव, भिखना पहाड़ी, पटना-6

आकर्षक साज-सज्जा

राष्ट्रीय विचार पत्रिका का नियमित पाठक हूं। पत्रिका का आवरण, साहित्य, साज-सज्जा आकर्षक एवं अन्य सभी स्तंभ पठनीय हैं। बधाई।

बालेश्वर मंडल, अधिवक्ता, लहेरियासराय, दरभंगा

राष्ट्रीय विचार पत्रिका का जनवरी-मार्च 99 अंक देखकर मंत्रमुग्ध हुआ।आभार। सभी लेख उत्कृष्ट हैं। हार्दिक बधाई।

दुर्गा प्र०भार्गव, जनकपुर धाम, नेपाल

खुशबुदार गुलाब की भांति

पत्रिका की पहचान एक खुशबुदार गुलाब की भांति हो जिससे समाज अपने दिल से लगाकर रखे। आप इस पत्रिका के माध्यम से सामाजिक चेतना जागृत करने हेतु समाज के हर पहलु पर ज्ञान प्रकाश की रोशनी देते रहें मेरी आपसे एक छोटा सा यही अनुरोध है। पत्रिका में प्रकाशित लेख कहानी, कविता तथा विचार संग्रहणीय हैं।

दीपक कुमार, महिला मुक्ति वाहिनी, पटना-2

चेतनामय पत्रिका

यह शोषित-पीड़ित दलित वर्ग के एकमात्र समर्पित शुभचिंतक राष्ट्रीय चेतनामय पत्रिका है। श्री जियालाल आर्य की कहानी 'चूहे का शिकार' अच्छी लगी।

वी०के०पटवा, दरभंगा

संपादकीय से पूर्ण सहमत

सम्पादकीय में उल्लिखित "बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की लूट के कारण सिंगापुर, इन्डोनेशिया, ताईवान, मलेशिया और कोरिया आदि देश दिवालिया होने के कगार पर हैं" मैं इससे पूर्ण सहमत हूं। भारत में ये कम्पनियां मुफ्त का पानी मिनरल वाटर के नाम से 12/-रु०, ढाई रुपये किलो के आलू "लहर" पोटैटो चिप्स के नाम से 250/-रु किलो और सोडा पानी की। जिससे नीबू पानी स्वादिष्ट व फायदेमन्द होता है। कोल्ड ड्रिंक के नाम से 10/-रु० में बेच रही हैं। इस खुली लूट के हम दीवाने हुए जा रहे हैं । यही कारण है कि भारत में मंहगाई आसमान छू रही है। भारत की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ रखने के लिए हमारे वाणिज्य मंत्रालय को उक्त सच्चाई को स्वीकार करना चाहिए और जितनी जल्दी हो सके इन तथाकथित बहुराष्ट्रीय कम्पनियों से पीछा छुड़ाना चाहिए। अन्यथा भारत को आर्थिक संकट में घिरने में देर नहीं लगेगी।

राजेन्द्र कुमार, इज्जतनगर, बरेली

सकारात्मक विचारों का तीक्ष्ण तलवार

इस पत्रिका को **'सकारात्मक विचारों का तीक्ष्ण तलवार'** की संज्ञा देकर शायद मैं कोई अनुचित नहीं कर रहा हूं। क्योंकि इस पत्रिका में मुझे सकारात्मक विचारों के एक-से-एक तीक्ष्ण तलवारों के दर्शन हुए जो गिरते मानव -मूल्यों एवं दलितों, पीड़ितों तथा शोषितों की अस्मिता की रक्षा के लिए सदैव प्रस्तुत हैं। सामग्रियांपत्रिका के नाम को सार्थक कर रही हैं।

लक्ष्मीनारायण मण्डल, हिन्दी विभागाध्यक्ष (कटिहार)

साहित्य की दृष्टि से गंभीर

मैं अच्छी पत्रिकाओं का जिज्ञासु पाठक हूं। ऐसी पत्रिकायें जो नियमित हों तथा साहित्य की दृष्टि से गंभीर सामग्री देती हों, ग्राहक बनने के लिये भी उत्सुक रहता हूं। कृपया अपनी पत्रिका की एक नमूना प्रति भिजवायें, साथ ही पत्रिका की नियमित प्रकाशन की स्थिति से भी अवगत करायें ताकि पाठक की हैसियत से जुड़ने के लिये मैं वार्षिक ग्राहक भी बन सकूं।

ब्रजकिशोर पटेल, जी०ए०डी/15, झाबुआ (म०प्र०)

कुछ और पत्र :-

शशिधर भगत, मिलान चौक(किलाघाट), दरभंगा, कैफ अहमद कैफी, समस्तीपुर, प्रो.नरेन्द्र नारायण सिंह, कुंवर सिंह महाविद्यालय, लहेरियासराय अमरनाथ मेहरोत्रा, मुजफ्फरपुर, राजेन्द्र कुमार निराला, बरियारपुर, मुंगेर।

कांग्रेस और भाजपा दोनों तीसरी ताकत को खत्म करके देश में दो दलीय प्रणाली लादना चाहती है, लेकिन समाजवादी पार्टी तीसरी ताकतों को मजबूत करेगी- **मुलायम सिंह यादव**

कांग्रेस पार्टी में गुलामी की मानसिकता सोनिया गांधी की रट लगाने से उजागर हो गयी है।-**रामकृष्ण हेगड़े**

कांग्रेस को नहीं समूचे वामपंथ को सक्रिय कीजिए कॉमरेड सुरजीत - **दीपंकर भट्टाचार्य**

राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी की वजह से न तो हम 1947 में कश्मीर को मुक्त करा सके और न अब तक इसका कोई हल निकाल सके। सन् 47 में दो घंटे और युद्ध होता तो कश्मीर छुड़ा लेते।-**बी०एस०बेदी, पूर्व पुलिस महानिदेशक, जम्मू-काश्मीर**

एक भारतीय अभिनेत्री सोनाली दास गुप्ता ने इटली के एक अभिनेता से विवाह किया था। विवाह के 30साल बाद जब उसने क्षेत्र की नगर परिषद के लिए चुनाव नामांकन पत्र भरा तो इटली प्रशासन ने उसे नामंजूर कर दिया, क्योंकि वह इटली की जन्मजात नागरिक नहीं थी।-**राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी अध्यक्ष- शरद पवार**

कारगिल में घुसे एक-एक पाकिस्तानी घुसपैठिये को जबतक मौत के घाट नहीं उतारा जाता, तबतक कारगिल में कारवाई जारी रहेगा।-**रक्षामंत्री जार्ज फर्णांडीस, आकाशवाणी के 'स्पॉट लाइट' कार्यक्रम में।**

देश के ऊच संवैधानिक पदों पर सिर्फ भारतीय मूल के लोगों के ही नियुक्त होना चाहिए-**विश्वनाथ प्रताप सिंह, पूर्व प्रधानमंत्री**

भारतीय मास्टर ब्लास्टर बल्लेबाज सचिन का स्थान भविष्य में क्रिकेट के देवताओं की बीच सुप्रतिष्ठित होगा, क्योंकि वह विश्व के सर्वकालिक महान बल्लेबाज डान ब्रेडमैन की तरह ही शक्तिशाली है।-**मार्टिन क्रो**

संपादकीय

तेरह महीने की वाजपेयी सरकार गिर जाने के पश्चात् भारतीय लोकतंत्र फिर एक ऐसे चौराहे पर खड़ा है जहां सवाल चुनाव का नहीं बल्कि लोकतंत्र की इस प्रक्रिया से जनता की खत्म होती आस्था से है, लोकसभा की इस विचित्रता से उबरने का है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि भारतीय लोकतंत्र आज अराजक स्थिति में है या यों कहा जाय कि प्राय: सभी राजनीतिक दलों एवं उसके नेताओं ने ऐसी अराजक स्थिति पैदा कर दी है ऐसी अराजकता में ही लोकतान्त्रिक प्रक्रिया पर प्रश्न चिह्न लगने प्रारम्भ हो जाते हैं।

यह बदकिस्मती ही है कि देश की राजनीति में ऐसे लोग आ गए हैं जिन्हें देश और लोकतंत्र की कोई चिन्ता नहीं। उनका व्यवहार और उनकी प्रवृति पराकाष्ठा पर पहुंच गई है। वे अपने अहम् तथा निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए देश, प्रदेश तथा अपनी पार्टी के हितों को भी दाव पर लगा सकते हैं। किसी न किसी बहाने ये नेता देश में राजनीतिक अस्थिरता पैदा करने का कुचक्र रच रहे हैं। बसपा सुप्रीमों **कांशीराम** तो अक्सर कहा करते हैं कि **"हम चाहते हैं कि अस्थिरता बनी रहे ताकि सत्ता तक पहुंचने में हमारा दाव लग सके।"** पिछले दिनों 12 वीं लोकसभा में वाजपेयी सरकार के विश्वास मत प्राप्त करने पर हुई बहस में भाग लेते हुए बसपा नेता सुश्री मायावती ने मतदान में भाग ने लेने का ऐलान न केवल भारतीय मतदाताओं के समक्ष बल्कि सारी दुनिया के सामने किया और बाद में बसपा के पांच सांसदों ने विश्वास मत के खिलाफ मतदान किया वह चौंकाने वाली बात ही नहीं बल्कि जन प्रतिनिधियों की छवि पर एक सवालिया निशान लगा दिया। इससे भी बढ़कर आश्चर्य तब हुआ जब मायावती ने बाद में उत्तरप्रदेश का बदला लेने की बात कही। क्या यह भारतीय लोकतंत्र के लिए शुभ-सूचक कहा जाएगा? एक वोट से सरकार की हार ने देश को चुनाव की ओर धकेल दिया जिसके लिए न तो सांसद तैयार थे और ना ही इस देश की जनता क्योंकि इस एक वोट की संख्या की खेल से इस गरीब देश के हजारों करोड़ रुपयों का वारा न्यारा हो जाएगा। आर्थिक तंगी से गुजर रहे इस देश को बार-बार चुनाव प्रक्रिया से गुजरना देश को आर्थिक गुलामी के रास्ते पर ले जाना है। बार-बार चुनाव होने के कारण न केवल देश की विकास गति थम जाती है बल्कि हजारों करोड़ रुपयों के अपव्यय के साथ साथ बहुत सारा समय प्रशासन का इस काम में चला जाता है। आकड़ों के अनुसार मध्यावधि चुनाव पर राष्ट्रीय खजाने से एक हजार करोड़ रुपये खर्च होंगे और नेताओं एवं जनता के खर्च अलग। यह सार्वजनिक संसाधनों का आपराधिक अपव्यय नहीं तो और क्या ? किसी को क्या सरोकार कि उनकी ऐसी हरकतों से देश और उसकी जनता का कितना नुकसान होता है।

इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि हमारा लोकतंत्र अपने हर रहनुमाओं की करनी पर आंसू बहा रहा है और हम कुछ नहीं कर पा रहे हैं । पक्ष या विपक्ष के हर दल देश हित को दरकिनार कर अपनी ही गोटी लाल करने को उद्दत हैं। क्या यह सच नहीं कि सोनिया की अतिमहत्वाकांक्षा ने जयललिता एवं सुबह्मण्यम स्वामी के कुटिल चाल के सहारे तथा सोनिया की जयजयकार करने वाले और कुछ ही मिनटों में सरकार बनाने का दावा करनेवाले लालू प्रसाद ने आखिर देश को एक और मध्यावधि चुनाव की ओर धकेल ही दिया। बिना विचार-विमर्श के अपने-अपने को फटकारने वाले विभिन्न राजनीतिक दलों के लोग प्रजातंत्र व धर्मनिरपेक्षता दोनों से ही अपना मजाक उड़ा रहे हैं। अपने को देशभक्त कहने वाले लोग मौकापरस्त हो लोकतंत्र के साथ खिलवाड़ कर गए। इसमें कतई संदेह नहीं कि विपक्षी दलों से वाजपेयी सरकार के पतन के बाद वैकल्पिक सरकार न दे सकने की जो भयंकर भूल हुई है उसका खामियाजा तो उन्हें भुगतने के लिए तैयार रहना ही होगा।

भारतीय राजनीति के अखाड़े में खड़े प्राय: सभी राजनीतिक दल सार्थक रूप से जनता को छूने वाले मंहगाई के प्रश्नों और बेरोजगारी जैसे आकांक्षाओं को संगठनात्मकता के साथ मुख्य लड़ाई के प्रश्नों के रूप में राजनीतिक मंच पर लाने में असमर्थ रहे हैं। तेरहवीं लोकसभा के चुनाव में शायद इन सवालों का नाम लेने से भी ये दल कतराएं।। इक्कीसवीं सदी का अधकचरा नारा भी शायद नहीं चल सके। कहीं ऐसा न हो कि 12 वीं लोकसभा की तरह इन परिस्थितियों में पुन: विभाजित तथा दिशाहीन जनादेश न आ जाए।

सिद्धांतों, मूल्यों और मान्यताओं को तिलांजलि देनेवाली 13 महीने की भाजपानीत वाजपेयी सरकार भी जन सरोकारों से न जुड़ पाने के कारण जनजीवन को अपने शासन काल में राहत नहीं दिला पाई। किन्तु अन्य विपक्षी दलों में भी जनसरोकारों से दूरी धन-बल, बाहुबल, छल-बल की राजनीति जिस प्रकार देखने में आ रही है उससे ऐसा प्रतीत होता है कि स्थायित्व और चुनाव की सार्थकता की दिल्ली अभी भी बहुत दूर है। आगामी लोकसभा में स्थायित्व भरा जनादेश यहां की जनता सौंप पाएगी, इसमें संदेह है। शरद पवार पहले ही कह चुके हैं कि तेरहवीं लोकसभा **'त्रिशंकु'** ही होगी और कोई भी दल बहुमत हासिल करने में सफल नहीं होगा। **जद अध्यक्ष शरद यादव** ने भी कुछ ऐसा ही कहा है।

इधर सोनिया गांधी के विदेशी मूल को लेकर शरद पवार, पूर्णो०ए०संगमा तथा तारिक अनवर द्वारा उठाए गए कदमों के कारण भारतीय राजनीति के घटनाक्रम तेजी से बदल रहे हैं तथा कांग्रेस में भी एक भूचाल-सा आ गया है। वैसे सच कहा जाय तो सोनिया गांधी के विदेशी मूल की बात न भी की जाय तो **सोनिया गांधी न तो जन्म और न कर्म से हिन्दुस्तानी हैं।** मैं यहां पूरे सम्मान के साथ कहना चाहूंगा कि उन्होंने कभी भी इस देश के भले के लिए प्रकट या परोक्ष तौर पर कुछ भी नहीं किया। यह तो अच्छा हुआ कि प्रधानमंत्री होने से पूर्व वे प्रश्न के घेरे में आ गईं अन्यथा देश की आनेवाली पीढ़ी यह सवाल पूछती कि उस समय क्या देश का मानस बंजर हो गया था जिसे एक विदेशी मूल की घरेलू महिला के आंचल का सहारा लेना पड़ा। सच तो यह है कि उनकी दुर्गति के पीछे कांग्रेस के अर्जुन सिंह सरीखे नेता हैं जो अपने स्वार्थ के लिए उन्हें इस्तेमाल कर रहें हैं।

मध्यावधि चुनाव की अबतक की जो स्थिति है, उससे यह जाहिर है कि जहां कुछ क्षेत्रीय दलों का अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है, वहीं कुछ क्षेत्रीय दलों की अभी भी संतुलन शक्ति अपने हाथ में रखने की स्थिति आ सकती है। इससे रचनात्मक राजनीति के बजाय फिर विरोधाभासी, मौकापरस्ती और नकारात्मक राजनीति के उभरने के हालात बनेंगे, जो राष्ट्रीय हित में नहीं होंगे।

ऐसी विकट स्थिति में न केवल जनता का जागरूक होना जरूरी है बल्कि प्रत्येक राजनीतिक दल के लिए ये हालात विचारणीय हैं। क्या वे क्षुद्र सत्तागत एवं दलगत स्वार्थ से ऊपर उठकर ऐसे रास्ते नहीं ढूंढ़ सकते जिससे त्रिशंकु संसद की सम्भावना को टाला जा सके? क्या चुनाव के पूर्व ही समान विचारधारा वाले दल मिलकर मजबूत गठबंधन एवं साझा कार्यक्रम के तहत चुनाव लड़कर जनता में नया विश्वास पैदा नहीं कर सकते?

भाजपा-समता गठबंधन ने एक साझा कार्यक्रम तैयार कर **'राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबंधन'** का गठन किया है जो स्वागत योग्य है। पर यह तो आने वाला समय ही बताएगा कि यह मंच कहां तक कारगर हो पाता है। बहरहाल अब सवाल यह नहीं कि कौन अच्छा और कौन खराब। चुनाव अब सामने है और हर चुनाव आम मतदाता को एक अवसर प्रदान करता है लोगों को परखने का। अब यह जबावदेही मतदाताओं पर आ पड़ी है कि वह खराब को फेंके और अच्छों कों अपनाए।

चुनाव परिणाम चाहे जो हो किन्तु इस चुनाव मैदान में प्राय: सभी राजनीतिक पार्टियां बड़े बोझिल मन से उतर रहीं हैं तथा सभी के अपने अनग-अलग धर्मसंकट हैं। सबसे बड़ा धर्मसंकट तो यह है कि मतदाताओं के समक्ष कुछ रखने को कुछ कहने को उनके पास कुछ है ही नहीं। नवगठित **राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन** क्या यह कहकर वोट मांगेंगे कि उन्हें अपनी समस्याओं से निपटने में समय बीत गया या फिर हमारी सरकार को एक षड्यंत्र के तहत गिरा दिया गया। मंदिर निर्माण, धारा 370 तथा समान नागरिक संहिता जैसे हिन्दुओं को लुभाने वाले मुद्दों को इस बार छोड़ने के लिए उन्हें बाध्य होना पड़ रहा है क्योंकि अपनी 13 महीनें की सरकार में उन मुद्दों को उन्होंने छूआ तक नहीं। हां, **पोखरण का परमाणु परीक्षण, अग्नि परीक्षण** तथा **लाहौर बस-यात्रा** जैसे मुद्दे उनके खास हो सकते हैं पर वे कितने असरदार होंगे यह तो समय ही बताएगा।

आत्ममंथन का वक्त होता है आम चुनाव किसी भी देश के लिए और लोकतंत्र के लिए पावन। पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत जैसे गरीब देश जहां की आधी आबादी गरीबी रेखा से नीचे अपना जीवन बसर कर रही है, जहां तकरीबन तैंतीस करोड़ निरक्षरों की फौज मौजूद हो और जहां स्वास्थ्य शिक्षा तथा दो जून की रोटी भी लोगों को मयस्सर न हो पा रही हो, वह देश बार-बार चुनाव का खर्च कैसे वहन कर सकेगा? ऐसी स्थिति में **मतदाताओं से यह अपेक्षा की जाती है कि वे ईमानदार, चरित्रवान तथा साफ-सुथरी छवि के प्रत्याशी को अपना प्रतिनिधि बनाएं।**

सिद्धेश्वर

मई दिवस के अवसर पर

बाल श्रमिकों की मुक्तिः जन सहयोग की उपादेयता

❑डा0 शुभंकर बनर्जी

यदि किसी समस्या को स्वयं समाज ने ही पैदा किया हो, तो उस पर नियंत्रण करने के लिए यह जरूरी है कि व्यापक सामाजिक सहयोग की व्यवस्था की जाए। सामाजिक भागीदारी को अनिवार्य बनाए बिना कड़े सरकारी कानून भी वांछित लक्ष्य हासिल नहीं कर सकते। ऐसे समाज में जहां अवज्ञा और कानूनों, नियमों तथा उपनियमों का उल्लंघन बढ़ता ही जा रहा हो, वहां महज सरकारी कानून प्रभावी नहीं हो सकते। अतः हमें यह तथ्य भी स्वीकार करना होगा कि लगभग सभी क्षेत्रों में, विशेषकर भारतीय समाज में सरकार नियमों का उल्लंघन बड़ी उच्छृंखलता तथा मनमाने ढंग के साथ किया जा रहा है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से आज तक विकास की रूपरेखा में बेशक मूलभूत परिवर्तन तो आये परंतु विभिन्न सामाजिक कारणों से विकास का लाभ समाज के कमजोर वर्गों तक नहीं पहुंच पाया है। दरअसल कानून, नारों और सम्मेलनों से हमारा उद्देश्य तब तक पूरा नहीं हो सकता है, जब तक कि समाज में व्यापक जागरूकता नहीं आ जाती। किसी भी कल्याण राज्य का उद्देश्य अपने लोगों को सुरक्षा प्रदान करना होता है। साथ में उनके हितों की रक्षा करना और चहुंमुखी विकास का मार्ग प्रशस्त करना भी हमारा प्रमुख उद्देश्य होता है।

स्पष्ट है कि मनुष्य को सर्वोपरि महत्व देना होगा। यदि वास्तव में मानवता को महत्व देना है तो सर्वाधिक ध्यान बच्चों पर ही देना होगा। इसी पृष्ठभूमि को ध्यान में रखकर भारतीय संविधान के अनुच्छेद 25 में कहा गया है कि 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को किसी कारखाने अथवा खान या किसी अन्य रोजगार में नहीं लगाया जायेगा।

युनिसेफ की 1997 की रिपोर्ट के अुनसार विश्व के 25 करोड़ बाल श्रमिकों में से एक तिहाई भारत में ही हैं। यदि हम वास्तव में इस सामाजिक बुराई को समाप्त करना चाहते हैं तो एक मात्र समाधान यही है कि निर्धनता के दुर्दम्य घेरे को तोड़ा जाये क्योंकि सामाजिक रूपांतरण की प्रक्रिया में निर्धनता ही खलनायक की भूमिका निभा रही है।

इस परिप्रेक्ष्य में बाल श्रमिकों की तेजी से बढ़ती हुई संख्या के प्रमुख कारणों की पहचान की जानी चाहिए और उन्हें दूर करने के उपायों पर बल देना होगा। निर्धनता, निरक्षरता और सामाजिक रूपांतरण की प्रतिक्रिया में समाज की भागीदारी का अभाव एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। इस मुद्दे को गंभीरता पूर्वक विचार किया जाना चाहिए। हमें यह तथ्य स्वीकार करना ही होगा कि प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से हम सभी इस सामाजिक बुराई के प्रति जिम्मेदार हैं। बाल श्रमिकों के बारे में हम अक्सर आकर्षक भाषण देते हैं। निबंध एवं पर्चे लिखकर इस सामाजिक बुराई के खिलाफ रचनात्मक साहित्य जुटाते हैं। बाल मजदूरों की शोचनीय अवस्था को दर्शाने के लिए मौलिक चित्रकारी करते हैं। इसके अलावा बाल श्रमिकों पर हम रचनात्मक एवं विचारोत्तेजक फिल्में तथा टी० वी० धारावाहिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। किन्तु हममें से अधिकतर लोग ऐसे हैं जो अपने घरेलू काम बिना नौकरों के नहीं कर सकते। ये घरेलू नौकर जिनकी आयु साधारणतया 10 से 13 वर्ष की होती है। यदि एक दिन के लिए भी कहीं चले जायें तो हमारा काम थम सा जाता है। इससे यह सिद्ध होता है कि समस्या का वास्तविक समाधान कठोर सामाजिक कानून तथा उसका सही ढंग से अनुपालन से ही संभव है। बाल श्रमिक रखने वाले व्यक्ति अथवा संस्था / संगठन का सामाजिक बहिष्कार करना इस समस्या के समाधान में मददगार कदम सिद्ध हो सकता है।

निर्धनता का निर्दय दुष्चक्र

समाज के नीति-निर्माताओं,आर्थिक योजनाकारों, सामाजिक वैज्ञानिकों और स्वयंसेवी सामाजिक संगठनों के समक्ष जो सबसे जरूरी काम है, वह है गरीबी के निर्दय दुष्चक्र को तोड़ना जो सामाजिक रूपांतरण की प्रक्रिया में एक खलनायक की भूमिका निभा रहा है। दूसरी ओर समाज के कमजोर वर्गों की आय के वास्तविक मूल्य को मुद्रास्फीति के भारी दबाव का सामना करना पड़ता है। काफी संख्या में बाल श्रमिक ऐसे हैं जो खास मौसम में मजदूरी करते हैं। यूनिसेफ की एक रिपोर्ट के अनुसार लगभग 10 प्रतिशत बाल श्रमिक वर्ष में छह महीने से भी कम समय तक काम करते हैं। भारत के रोजगार बाजार में तीव्र मौसमी उतार-चढ़ाव देखने को मिलता है। इससे कर्मचारी वर्गों को बाध्य होकर अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए बच्चों को काम पर भेजना पड़ता है। भारत के बच्चे अपने लिए रोटी और मकान की व्यवस्था करने की स्थिति में भी नहीं हैं, तो उनके लिए पारिवारिक बजट में शिक्षा के लिए प्रावधान करने का प्रश्न ही नहीं उठता। इसके अतिरिक्त माता पिता के समक्ष यह मजबूरी होती है कि उन्हें सामाजिक रिवाजों और परम्पराओं का पालन करते हुए अपनी बेटियों की शादी करनी पड़ती है। ऐसे में उनके पास साहुकारों से मदद लेने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता। अर्थात् एक बार वे कर्ज के जाल में फंस जाते हैं तो फिर उससे छुटकारा पाना उनके लिए मुश्किल हो जाता है। स्पष्ट है कि समाज के कमजोर वर्गों की आय में बढ़ोतरी करना समय की आवश्यकता है। अतः अपनी राष्ट्रीय दिहाड़ी नीति को अधिक युक्तिसंगत बनाना होगा। मूल्य सूचकांक के साथ उसका संतुलन भी कायम करना होगा। फलस्वरूप सेवाओं की लागत में भी बढ़ोतरी होगी।

निरक्षरता: एक मूलभूत बाधा

यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि बाल श्रम की इस सामाजिक बुराई का एक अन्य महत्वपूर्ण कारण निरक्षरता भी है। साधारण तौर पर अभिग्रहण और निर्णय करने की योग्यताएं शिक्षा के स्तर से प्रभावित होती हैं। यह बात तो स्पष्ट है कि माता-पिता अपने बच्चों को काम पर इसलिए भेजते हैं क्योंकि उन्हें अल्पावधि के लाभ मिलते हैं। यहां पर निर्णय करने की प्रक्रिया पर निरक्षरता का ही सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ता है। अर्थात उनकी अभिग्रहण क्षमता भी निराशाजनक पायी जाती है। क्योंकि वे प्रचारित संदेशों को समझने में विफल रहते हैं। इस संदर्भ में प्रचार माध्यम जागरूकता लाने में असफल हो जाते है क्योंकि निरक्षर जन समुदाय की अभिग्रहण क्षमता में संवेदनशीलता नहीं होती है। प्रचार में रचनात्मकता के माध्यम से संवेदनशीलता बढ़ायी जा सकती है। शर्त है कि श्रोता भी साक्षर हो।

कठोर सामाजिक नियमों की भूमिका

यह बात अवश्य स्वीकार करने योग्य है कि शिक्षित करने और उनके सामाजिक व्यवहार को नियंत्रित करने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सरकार की ही है। परंतु जब हम उस जिम्मेदारी को संवेदनशील नहीं पाते हैं तब एकमात्र उपाय सामाजिक भागीदारी का बच जाता है। जब सामाजिक नियमों की बात की जाती है तब ऐसे औपचारिक तथा अनौपचारिक सामाजिक संगठनों के गठन पर बल दिया जाना चाहिए जो सामाजिक नियमों का उल्लंघन अथवा सही ढंग से पालन करने वालों को क्रमशः समुचित दंड अथवा पुरस्कार प्रदान करें। यह भी बात उल्लेखनीय है कि यदि सामाजिक आचरण को नियंत्रित करने तथा सामाजिक नियमों का निर्माण करने के लिए लगे जिम्मेदार लोग इस प्रकार भेदभावपूर्ण व्यवहार करेंगे तो सामाजिक नियम भी

संवेदनशील नहीं रह जायेंगे।

हाल ही में यूनिसेफ की 1997 की एक रिपोर्ट के अनुसार 75 प्रतिशत बाल मजदूर घरों और होटलों में काम करते पाये जाते हैं। जबकि सामाजिक समर्थन के जरिए बात मजदूरी पर नियंत्रण करने के प्रयासों से निश्चय ही इस समस्या का निराकरण करने में सफलता मिल सकती है। बशर्ते सामाजिक संगठन नियम कानूनों को ठीक से पालन भी करें। खास करके देश में बड़ी संख्या में ऐसे होटल हैं जो विभिन्न तरीकों से बच्चों का शोषण करते हैं। जैसे निधारित काम से अधिक घंटों तक काम करवाना, कम मजदूरी और अमानवीय व्यवहार, मारपीट आदि। त्रासदीपूर्ण बात यह है कि सभी होटल में जाते हैं और उनके कष्टों को देखते हैं। उन्हें वहां से निकालने के लिए कुछ भी नहीं कर पाते। क्या हम वाकई यह प्रतिज्ञा कर सकते हैं कि उन होटलों का बहिष्कार किया जाए जहां बच्चों को दिहाड़ी पर लगाया जाता है?

आम तौर पर घरों में भी बढ़ी संख्या में बाल मजदूर काम करते हैं। उनके साथ जो दुर्व्यवहार किया जाता है उससे उन्हें एक प्रकार के मनोवैज्ञानिक आतंक का सामना करना पड़ता है। यही आतंक उन्हें आगे चलकर मानसिक रूप से कमजोर दिवालिया और पागल तक कर देता है। घरों में, वे अक्सर पशुओं की तरह काम करते हैं। अपनी दिन-रात की सेवाओं के बदले उसे समुचित पारिश्रमिक मिलना तो दूर पेट भर खाना तक नहीं मिलता है। क्या समाज उनके बारे में भी गंभीरता से सोचते हैं?

भारतीय समाज में दुर्भाग्यजनक रूप से बाल मजदूरों के यौन शोषण के मामले भी अक्सर प्रकाश में आते हैं। हमारी संस्कृति और सभ्यता के साथ-साथ मानवता के लिए भी यह लज्जाजनक बात है। इस मामले में संस्कृति के नैतिक मूल्यों का सरासर अपमान होता है। इस संदर्भ में सामाजिक नियमों को कठोरता के साथ लागू करना कारगर उपाय हो सकता है। सर्वाधिक उचित कदम तो यह होगा कि हम नई पीढ़ी का सम्पूर्ण सहयोग भी प्राप्त करें। केवल उनमें ही इस समस्या को राष्ट्रीय मुद्दा बनाने की क्षमता है तथा इन समस्याओं से निपटने का सत्साहस तथा पर्याप्त मनोबल है।

संपर्क: ''शांति मिशन'', ए-46 सादतपुर, करावल नगर रोड, दिल्ली-110094.

दहेज का दावानल

❑के०पी०महतो

तुलसी दास जी ने तो नारियों को पशुओं के समकक्ष लाकर रख दिया है। ये वहीं नारियां है जो मां है बहन है, भार्या है, बेटी है, वह पोती या नतनी हैं। क्या इनके बिना समाज चल सकता है? आप का जवाब होगा नहीं। लेकिन आप तो तुलसी दास जी से भी आगे बढ़ गये। अगर आप के घर में कुत्ते और बिल्लियां हैं तो आप खाना खिलाते हैं। दुध पिलाते है। आपकी लाडली बेटी उन्हें गोदी लेती है, पूचकारती है और चुमती भी होगी। सभी उन्हें घर में लाड़ प्यार और स्नेह करते हैं। कोई भी उन्हें मारता पिटता या गाली गलोज नहीं करता है। उन्हें जला देना या मार डालना तो दूर की बात रही।

लेकिन आप के घर में जब एक सोलहों श्रृगारों से सुसज्जित नई नवेली दुल्हन आती है तो आप इस के साथ आये हुए सामानों और नगद कि गिनती करने लग जाते हैं। सास ननद सगे संबंधी खुशुर- फूसुर करने लग जाते है कि क्या आया और क्या नहीं आया। वह तो अपने आई, अपना शरीर लाई, एक अपरिचित और अनजान जगह पर जीवन न्यौछावर करने आई इस पर किसी को चिन्ता नहीं।

कुछ दिन तो खुशुर फुसुर में ही जाते हैं जब तक वह अपना सर्वस्व गवां चुकी होती है। इसके बाद तो उसको और उसके सात खानदानों का कोसना शुरू हो जाता है। गाली गलौज मार पीट तो आम बात हो जाती हैं। अन्त में जहर पिलाना, आग लगाना या फांसी के फंदे पर ही इसका खात्मा होता है। पर सब दोष मढ़ दिये जाते है दूल्हन पर। दूल्हन की मृत्यु हो जाती है और तत्काल अग्नि के हवाले कर दिया जाता है ताकि घटना को दबाया जा सके। तारीफ है कि घर के किसी अन्य व्यक्ति की मृत्यु पर सारे सगे-संबंधी और आस-पड़ोस सब को खबर हो जाता है पर दूल्हन की मृत्यु पर उसके नैहर को भी खबर नहीं होती है। कितना अमानवीय !

अभी **Money money thy sweeter than honey** वाली कहावत ही सच हो गई है। इस के सामने पंडित के फेरे, मौलवी और चर्च की कसमें सब बेकार हो जाते हैं। मांग इतनी बड़ी होती है कि एक ही लड़की की शादी में दीवालिया पीट जाता है। जगह जमीन बिक जाती है और घर तक रेहन रखना पड़ता है। जिनकी एक से अधिक लड़कियां हैं उन्हें तो भगवान ही बचावे।

दूसरा बड़ा कारण है परिवार नियोजन और कन्या शिक्षा। संयमित परिवार से अनेक प्रकार की आर्थिक कठिनाइयों से छूटकारा मिल जाता है। पुत्र शिक्षा से एक व्यक्ति की शिक्षा होती है पर पुत्री शिक्षा से उसके सारे परिवार की शिक्षा हो जाती है।

संपर्क : पूर्व प्राचार्य, राँची जिला स्कूल, राँची

व्यक्ति बड़ा या राष्ट्र

❑ डॉ.सुधाकर आशावादी

किसी भी राष्ट्र की उन्नति के लिए अनिवार्य होता है कि वहां का आम नागरिक राष्ट्रहित में चिंतन करे तथा स्वयं से पहले राष्ट्र को प्रमुखता दे। किंतु यदि वही व्यक्ति जिस पर राष्ट्र की सुरक्षा का दायित्व है, राष्ट्र में सेंध लगाने की फिराक में लग जाय अर्थात बागड़ ही खेत को खाने पर तुल जाय, तब क्या स्थिति होगी, यह किसी से छिपी नहीं है। लगभग उसी प्रकार की स्थिति का खुलासा आज देश में हो रहा है, जिसे देखो वही राष्ट्र से स्वयं को ऊंचा मानकर आचरण कर रहा है।

संसद में यदि किसी गम्भीर मुद्दे पर चिन्तन की बात हो, तो सभी चुप्पी साध जाते हैं अथवा पक्ष या विपक्ष में बैठकर सरकार की आलोचना, समालोचना में काफी बहस करके संसद और राष्ट्र का समय बर्बाद करते हैं, किंतु जब उनके अपने स्वार्थ सामने होते हैं, तब कोई बहस नहीं होती, पक्ष-विपक्ष की राजनीति नहीं होती। मेरा इशारा संसद के उन क्रिया-कलापों से है जिनसे सांसदों के भत्ते, पेंशन व अन्य समय बर्बाद नहीं करना चाहते, न ही यह कहते हैं कि देश की गरीब जनता पर इतना बोझ क्यों लादा जा रहा है। इसलिए उन्हें सांसद के रूप में अधिकाधिक सुविधाएं प्रदान करने में कमी नहीं की जा रही है।

कैसी विडम्बना है कि अपराधिक इतिहास के माध्यम से संसद की दहलीज तक पहुंचने वाले अनेक दिग्गज लोग देश का भाग्य निर्धारण करते हैं। संसद की गरिमा को ठेस पहुंचाते हैं। अपने आचरण के द्वारा देश के सर्वोच्च सदन में गरिमाहीन आचरण करते हैं, कहीं कालर खींचने की घ्टना होती है, तो कहीं खुलकर गाली-गलौज होती है, एक दूसरे की योग्यता पर प्रश्न चिन्ह लगाकर एक दूसरे को अपमानित किया जाता है।

मेरा अभिप्राय मात्र इतना है कि देश के सर्वोच्च सदन में बैठकर देश की चिंता करते समय सांसद पक्ष-विपक्ष की खेमाबंदी में जब सत्तापक्ष और विपक्ष की भूमिका का निर्वाह करने में संकोच नहीं करते, तो अपने भत्ते और सुविधाएं बढ़वाने के नाम पर क्यों एकजुट हो जाते हैं या क्यों एक दूसरे के सुर में सुर मिलाते हैं?

युवा वर्ग: अपराध-बोध ग्रस्त

देश में निरन्तर बढ़ती बेरोजगारी, अच्छे कपड़े पहनने की लालसा, सिनेमा देखना तथा शराब पीने की आदत ने आज के युवा वर्ग को अपराधों की ओर धकेल दिया है क्योंकि आधुनिक आवश्यकताओं की पूर्त्ति के लिए पैसा चाहिए और जब पैसे सीधे रास्ते नहीं मिल पा रहे हैं वो वे अपराध की ओर अग्रसर हो रहे हैं। तो दूसरी ओर आज युवा वर्ग में परिश्रम करने और सब्र करने की प्रवृत्ति कम हो रही है। यह तुरत-फुरत सारी सुविधाएं पा जाना चाहते हैं। राष्ट्र तथा समाज के इस कर्णधार को अपराध जगत में अत्याधिक संख्या में आना निश्चित रूप से यह एक राष्ट्रीय समस्या है।

सौतेली मां का खौफ

❑ कृष्ण कुमार राय

अपनी औकात से वजनी बस्ता पीठ पर लादे, एक किलोमीटर का रास्ता नापता हुआ जब नन्दू स्कूल से घर लौटा तो जाड़े की शाम ढल रही थी। थकान की रेखा उसके चेहरे पर स्पष्ट रूप से झलक रही थी। बोझिल बस्ता तख्ते पर पटकते हुए उसने मां से कहा, 'कुछ खाने को दे दो नयी अम्मा।'

झुंझला कर बड़े रूखेपन के साथ मां बोली, ''कुछ काम-धाम तो करना नहीं, जब देखो पेट में आग लगी रहती है। अभी सुबह चार रोटियाँ खाकर गया था, लौटते ही फिर भूख लग गयी। पहले जाकर पानी भर डाल, नहीं तो नल चला जायगा ।''

इस झिड़की के बाद भी जब नन्दू सिर लटकाये वहीं खड़ा रहा तो मां का चेहरा गुस्से से तमतमा उठा। डपट कर बोली,''बात नहीं सुनता। हठधर्मी सीख रहा है। भाग जा आंख के सामने से ।''

साहस बटोर कर एक बार फिर नन्दू ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, ''नयी अम्मा, बड़ी जोर की भूख लगी है। रोटी खाकर मैं पानी भर दूंगा।''

''एक बार कह दिया, अभी कुछ खाने को नहीं। हटता है आंख के सामने से या दूं चार-लात।''

''नन्दू की आंखों में आंसू छलछला आये। रुआंसा होकर बोला,''आने दो बाबू को, मैं उनसे शिकायत करूंगा कि नयी अम्मा खाने को नहीं देती।''

''धमकी देता है कलमुंहा। देखती हूं तुझे और तेरे बाप दोनों को।'' कहती हुई वह आवेश में उठी और नन्दू के गालों पर तीन-चार थप्पड़ जमाते हुए उसे इतनी जोर का धक्का दिया कि वह पास में पड़ी सिल पर जा गिरा। सिल का कोंना सिर के पार्श्व भाग में धंसने से गहरा जख्म हो गया। खून बहकर, फर्श पर फैल गया। यह दृश्य देखकर मां कुछ सहमी। जल्दी से एक पुराना कपड़ा फाड़कर ले आयी और नन्दू के घाव पर पट्टी बांध दी। वह दर्द से कराहता रहा।

इसी बीच मिल की ड्यूटी से छूटकर बिहारी घर लौटा। पति के घर में कदम रखते ही नन्दू की झूठी-सच्ची हजार शिकायतें करके उनका कान भरना मन्नो की आदत सी बन गयी थी। लेकिन आज स्थिति कुछ भिन्न थी। अपने अमानुषिक व्यवहार पर पर्दा डालने की नीयत से पैंतरा बदलते हुए उसने कहना शुरू किया, ''देखा अपने सपूत की करनी। स्कूल से भागकर आवारा छोकरों के साथ निकल जाता है। आज सिर फोड़वाकर घर लौटा है। नाक में दम कर-रखा है इस नालायक छोकरे ने। घर से दस रुपये भी चुरा ले गया था और फूंक-तापकर बराबर कर दिया। कुछ कहो तो पलट कर जवाब देता है। कोई बात नहीं सुनता। कल का छोकरा, मुझे आंख दिखाता है।''

मन्नो की बातों पर विश्वास कर बिहारी न जाने कितनी बार नन्दू को डांट-फटकार और मार-पीट चुका था। उसकी बातें सुनते ही बिहारी के क्रोध का पारा चढ़ गया। बिना कुछ पूछे-ताछे उसने कान पकड़कर नन्दू को अपनी ओर घसींटा और तीन-चार घूंसे पीठ पर जमाता हुआ बोला,'' हरामजादा कहीं का, निकल जा घर से। मैं तेरी सूरत नहीं देखना चाहता। रोज-रोज शिकायतें सुनते कान में फफोले पड़ गये।''

नन्दू सिसकिंया भरता हुआ गिड़गिड़ाता रहा, ''मैंने पैसे नहीं चुराये बाबू ? मैं कभी स्कूल से नहीं भागा। चलकर मास्टर जी से पूछ लीजिए। स्कूल से घर लौटा तो भूख लगी थी। नयी अम्मा से रोटी मांगी तो उसने थप्पड़ों से मारकर धकेल दिया। सिल पर गिरने से सिर फूट गया। मैंने किसी से मारपीट नहीं की थी बाबू ?''

बिहारी ने नन्दू की एक नहीं सुनी। हाथ पकड़ घसीटता हुआ उसे दरवाजे से बाहर करके अन्दर से किवाड़ बन्द कर लिया और जाकर चुपचाप अपने कमरे में पड़ रहा। अपनी विजय पर मन्नो मन ही मन मग्न हो रही थी। पति को खुश करने के लिए उसने जल्दी-जल्दी पकौड़े छाने और चाय तैयार कर एक ट्रे में लगाकर पति के कमरे में जा पहुंची। बिहारी अभी तक खिन्न मुद्रा में खाट पर उत्तान पड़ा था। मन्नो ने उसका माथा सहलाते हुए प्यार जताने की कोशिश की और उठकर चाय पीने का आग्रह किया। अनमने भाव से बिहारी ने उठकर एक दो पकौड़े खाये और चाय पी। मन्नो भी साथ बैठकर चाय पीती रही। थोड़ी देर बाद जब बिहारी उठकर कपड़े बदलने लगा तो मन्नो ट्रे में चाय की प्यालियाँ आदि समेटकर कमरे से बाहर चली आयी।

कपड़े बदलकर जब बिहारी शौच जाने के लिए कमरे से बाहर निकला तो देखा कि मन्नो भींगे कपड़े से सिल के पास फर्श पर फैले खून के थक्के रगड़-रगड़ कर पोंछ रही है। देखते ही उसका माथा ठनका। अचानक नन्दू के यह शब्द कानों में गूंज उठे - 'स्कूल से लौटा तो भूख लगी थी। नयी अम्मा से रोटी मांगी तो उसने थप्पड़ मारकर धकेल दिया। सिल पर गिरने से सिर फूट गया।' उसने कड़ककर मन्नो से पूछा,'' यह खून कहां से आया ?''

''खून नहीं, आलते की शीशी हाथ से छूटकर गिर गयी थी। वहीं रंग, फर्श पर फैल गया था। अभी साफ किये देती हूं।''

बिहारी ने मन्नो के हाथ से कपड़ा छीन लिया और बिजली की रोशनी में उसे गौर से देखते हुए बोला,'' मुझे निरा मूर्ख समझ रखा है तुमने ? खून और आलते का फर्क मैं खूब जानता हूं। फिर अपनी औलाद के खून में तो अपनेपन का खास रंग होता है। क्या यह सच नहीं कि तुमने नन्दू को थप्पड़ मारकर यहीं सिल के ऊपर धकेला था जिससे उसका सिर फूट गया और फर्श पर खून फैल गया।''

''बिल्कुल झूठ, सरासर झूठ बोल रहा था वह छोकरा। मैं उसे क्यों धकेलने लगी। वह तो बाहर से सिर फोड़वाकर आया था। मैंने पोंछ-पांछ कर पट्टी बांधी, ऊपर से मुझपर ही उल्टा इल्जाम।''

''हरगिज नहीं। मैं यह मानने को बिल्कुल तैयार नहीं। तुम झूठी हो फरेबी हो। मैं सबकुछ समझ गया हूं। रोज-रोज नन्दू की शिकायतें करना तुम्हारी आदत बन गयी है। तुम्हारी बातों पर यकीन करके मैं भी अब तक उस बिचारे को मारते-पीटता रहा, सख्ती करता रहा। लेकिन सच्चाई ज्यादा दिनों तक छिपी नहीं रह सकती। मैंने दूसरी शादी महज इसलिए की थी कि विधाता ने जिस अभागे बालक को असमय ही मां की ममतामयी गोद के सुख से वंचित कर दिया था, उसे फिर से मां का खोया हुआ प्यार-दुलार मिल सके, उसका लालन-पालन उचित ढंग से हो सके।

विवाह के इन सात सालों में तुमने न तो निज की जनी सन्तान का मुंह देखा और न उसका दु:ख दर्द जाना। ऊपर से मेरे इकलौते बेटे को देखकर जलती रहती हो, उसे हमेशा सताती रहती हो। पेट भर खाने को भी नहीं देती। अपनी कुटिल चालों से मेरे ही हाथों उस पर जुल्म कराती रही हो। तुम्हारा यह सौतेला व्यवहार अब एक दिन भी नहीं चलने का मन्नो ? अगर तुम अपने को पूरी तरह बदलकर नन्दू को मां का प्यार नहीं दे सकती हो तो साफ-साफ सुन लो, इस घर में तुम्हारे लिए कोई जगह नहीं रह जायगी।''

बिहारी घर का सदरी दरवाजा खोलकर तेजी के साथ बाहर निकला, लेकिन नन्दू कहीं दिखलायी नहीं पड़ा। मन्नों के कान भरने पर पहले भी कई बार वह नन्दू को घर से बाहर करके दरवाजा बन्द कर चुका था, लेकिन नन्दू वहीं कहीं दुबका सिसकियां भरता रहता और दरवाजा खुलने पर फिर चुपचाप भींगी बिल्ली की तरह घर में लौट आता। आज की अनहोनी घटना से बिहारी को जैसे काठ मार गया। उसने अड़ोस-पड़ोस में नन्दू की खोज की। स्कूल जाकर पता किया। कई दिनों तक दूर-दराज, के इलाकों में दौड़-भाग करता रहा। ज्योतिषियों की शरण ली। थाने में रपट लिखवायी। अखबार में उसकी फोटो के साथ अपील छपवायी। लेकिन नन्दू का कुछ पता नहीं चला। रोते-बिलखते बिहारी की आंखों के आंसू सूख गये। कलेजे पर पत्थर रखकर उसने नन्दू के जीवित रहने की सारी उम्मीदें छोड़ दीं और हताशा होकर परिस्थितियों के साथ समझौता करके बैठ गया।

न जाने कहां-कहां की खाक छानता, और कितने पापड़ बेलता, शहर से काफी दूर, राजमार्ग पर स्थित उस ढाबे में नन्दू कब जा पहुंचा था, इसकी दास्तां लम्बी और मर्मस्पर्शी है। ढाबे में खाना खा रहे ग्राहकों की ओर ललचायी निगाहों से टकटकी लगाये उस कृषकाय बालक पर जब ढाबे के संचालक अमरीक सिंह की नजर पड़ी तो उसने भूख से व्याकुल उस बालक को खाना खिलाकर उपकृत किया। जब वह कुछ चैतन्य हुआ तो अमरीक सिंह ने उसके ठौर-ठिकाने के बारे में पूछताछ शुरू की। डरे-सहमे नन्दू के बाल मन ने सोचा कि यदि वह अपने घर-परिवार की सही जानकारी ढाबे के मालिक को देता है तो सम्भव है वह उसे फिर उसके घर भिजवा दें। अत: उसने स्वयं अपना और अपने घर का गलत नाम-पता बतलाया और यहां तक कह दिया कि उसके मां-बाप मर चुके हैं, वह बिल्कुल अनाथ-असहाय है और इसी तरह मांग-चांग कर अपना पेट पालता है। उसे क्या पता था कि ढाबे के मालिक की असली नीयत कुछ और थी। बिना किसी प्रयास के नन्दू के रूप में अमरीक सिंह को एक बंधुआ मजदूर मिल जाने की सम्भावना दिखलायी पड़ी। वह नन्दू से बोला, ''तू क्यों इस तरह मारा-मारा फिरता है छोकरे। यहीं ढाबे में रहकर काम कर और पड़ा रह। खाना कपड़ा मिलेगा और पच्चीस रुपये माहवारी भी। नन्दू को लगा कि अमरीक सिंह के रूप में साक्षात् भगवान उसकी मदद के लिए धरती पर उतर आये हैं। वह उनके पैरों पर गिर पड़ा और फफक-फफक कर रोने लगा।

उसी दिन से नन्दू अमरीक सिंह के ढाबे में बधुंआ मजदूर बनकर काम करने लगा। सुबह पौ फटने से लेकर रात के ग्यारह-बारह बजे तक ढाबे में इस्तेमाल होने वाले बड़े-बड़े पतीले, भगौने, कड़ाहे, आदि मांजता, जूठी प्लेटें और गिलास धोता,पानी भरता, कोयला तोड़ता, लकड़ियॉं चीरता और बदले में दो जून का बचा-खुचा भोजन पा जाता। कम से कम पेट भरने का रास्ता तो निकल आया था। दो-चार फटे-पुराने कपड़े भी अमरीक सिंह ने उसे दे दिये थे। रात को ढाबे में ही किसी बेंच पर पड़ रहता। सालों इसी तरह गुजर गये। पच्चीस रुपये माहवार की नकद धनराशि अमरीक सिंह ने कभी उसके हाथ पर नहीं रखी। पूछने पर कहता कि उसके पैसे जमा हैं, वक्त-जरूरत पर मिलेंगे। कभी अनजाने में नन्दू के हाथ से गिलास या प्लेट गिरकर टूट जाती तो उसे न केवल अमरीक सिंह का कोप-भाजन बनकर शारीरिक यातना झेलनी पड़ती बल्कि नुकसान की भरपाई उसकी तनख्वाह की जमा रकम से कर लेने की बात भी कही जाती। नन्दू को कुछ पता नहीं था कि अब तक उसकी तनख्वाह के कितने पैसे मालिक के पास जमा थे और कितनी रकम क्षतिपूर्ति के रूप में काटी जा चुकी थी। धीरे-धीरे वह ऐसे जाल में फंस चुका था जहां न रहते ही बनता था और न छुटकारा का कोई रास्ता नजर आता था। अमरीक सिंह के गुर्गे उसकी गतिविधियों पर बराबर कड़ी नजर रखते थे।

एक दिन ढाबे के कैश बाक्स से कुछ रुपये चोरी चले गये। अमरीक सिंह को पूरा यकीन था कि चोरी नन्दू ने की है। जुर्म कुबूल करवाने के लिए उसे काफी प्रताड़ित किया, लेकिन वह बराबर अपने को निर्दोष कहता रहा। चोरी के बारे में कोई अन्य सुराग देने में भी वह अपनी असमर्थता व्यक्त करता रहा। अमरीक सिंह का गुस्सा बढ़ता गया। आखिकार आपे से बाहर होकर उसने अपने मुलाजिमों के साथ मिलकर नन्दू की इस कदर पिटायी की कि वह अधमरां-सा होकर मूर्च्छित हो गया। उसकी हालत बिगड़ती देखकर अमरीक सिंह घबरा गया। उसने जल्दी-जल्दी अपनी जीप पर मूच्छित नन्दू को लदवाया और ढाबे से बीसों किलोमीटर दूर ले जाकर नगर की बाहरी सरहद से थोड़ा पहले एक सुनसान स्थान पर छोड़ आया। काफी देर तक नन्दू वहीं अचेतावस्था में निस्पन्द पड़ा रहा।

इसे संयोग ही कहिये या ईश्वरीय चमत्कार कि बिहारी उसी रास्ते साईकिल से अपने किसी सम्बन्धी के गांव से शहर की ओर लौट रहा था। सड़क के किनारे निर्जन स्थान पर अस्त-व्यस्त अवस्था में पड़े उस छोकरे पर निगाह पड़ते ही वह साईकिल से उतरकर जिज्ञासावश उसके करीब जा पहुंच सालों से बिछड़े अपने प्यारे नन्दू को पहचानने में उसे देर न लगी। अपने कलेजे के टुकड़े की यह दशा देखकर वह एकदम से चीख उठा। नन्दू अब भी मूर्च्छित था, लेकिन सांस चल रही थी। बिहारी की बौखलाहट और रोना-बिलखना देखकर धीरे-धीरे कुछ ओर राहगीर वहां इकट्ठा हो गये। एक सहृदय व्यक्ति भागता हुआ पास की बस्ती से एक रिक्शा ले आया। फिर सबने मिलकर नन्दू को रिक्शे पर लादा। शहर की ओर जा रहा एक व्यक्ति रिक्शे पर बैठकर नन्दू को संभाले रहा। बिहारी उसे लेकर सीधे अपने घर पहुंचा। कुछ देर के घरेलू उपचार के बाद जब नन्दू को होश आया तो उसने अपने को फिर उसी घर में पाया जहां सौतेली मां के जुल्म सहते हुए उसने न जाने कितने साल गुजारे थे और फिर एक दिन वहां से निकल भागने को मजबूर हो गया था।

नन्दू मानो विक्षिप्त सा होकर चीखने-चिल्लाने लगा। सामने अपने बाबू को खड़ा देख हाथ जोड़कर बोला, मैं यहां नहीं रहूंगा बाबू ? नयी अम्मा फिर मारेगी। तुमसे झूठी शिकायतें करके मुझे पिटवायेंगी। मुझे जाने दो बाबू, जाने दो। ढाबे के सारे बर्तन जूठे पड़े होंगे। उन्हें साफ करने के लिए मालिक मेरा इन्तजार कर रहा होगा। हाथ जोड़ता हूं बाबू, मुझे वहीं पहुंचा दो।''

बिहारी की आंखो से आंसुओं की धार बह चली। वह बेटे को कलेजे से लगाकर बार-बार उसका सिर सहलाता रहा। भाव-विह्वल के कारण कंठ अवरूद्ध हो गया था। बड़ी देर बाद कांपती हुई आवाज में बोला, ''मेरे लाल, तेरी नयी अम्मा तो कब की सुरलोक सिधार चुकी। अब तुझे सताने वाला कोई नहीं रहा। इतने दिनों से अकेली जिन्दगी ढोते-ढोते मैं थक चुका हूं बेटा। जिन्दगी के सारे अरमान ठंडे पड़ चुके हैं। आज तुझे पाकर निहाल हो गया हूं। एक बार फिर मन में आशाएं और उमंगे जाग उठी हैं। मेरी उजड़ी हुई जिन्दगी में जैसे स्वर्णिम नवविहान आ गया है। जीने की नयी राह मिल गयी हैं। अब मैं तुझे कहीं नहीं जाने दूँगा बेटा। अपने कलेजे के टुकड़े को कभी अपनी आंखों से ओझल नहीं होने दूंगा।''

बिहारी बार-बार नन्दू का माथा चूमता रहा और नन्दू विस्मित नेत्रों से अपने बाबू की डबडबायी आंखों के बीच तैरती काली पुतलियों में अपनी आकृति खोजने की कोशिश करता रहा।

संपर्क-एस 2/51ए, अर्दली बाजार, वाराणसी

भारतीय लोकतंत्र : दशा और दिशा

❑ डॉ०वैद्यनाथ शर्मा

लोकतंत्रीय शासन-व्यवस्था की श्रेष्ठता के संबंध में राजनीतिशास्त्र के प्रकांड विद्वान डा०आर्शीवादम् ने कहा है- "प्रजातंत्र मानवता के प्रति हमारे उत्साह की व्यावहारिक अभिव्यक्ति है। स्वाधीनता, समानता एवं भ्रातृत्व के द्वारा विरोधी सिद्धांतों में पारस्परिक मेल बैठाने का यह ठोस प्रयत्न है जिसमें समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह संभव बनाया जा सके कि वह अपनी शक्ति-भर अपने लिए सर्वोदय-कल्याण की सिद्धि कर सके।"

आधुनिक जीवन-संदर्भ में प्रजातांत्रिक शासन-व्यवस्था विशेष महत्वपूर्ण समझी जाती है। यही कारण है कि यह शासन-व्यवस्था विश्व के कोने-कोने में प्रतिष्ठित एवं प्रचलित है। आजादी मिलने के बाद हमने भी अपने देश में इस शासन-व्यवस्था को सम्मानपूर्वक प्रतिष्ठित किया है और इसकी सफलता के लिए संविधान का निर्माण कर हमने अपने तप:पूत संकल्प को मूर्त्त किया है। आज करीब 52 वर्षों से इस आदर्श व्यवस्था के आलोक में हम अपनी दूरी तय करते चले आ रहें हैं । इस संदर्भ में हमारी प्रगति कितनी क्षिप्र रही या मंद रही-यह हमें एक शुद्ध और तटस्थ विचारक के रुप में मूल्यांकन करना है।

आज हर कोई इसे एक स्तर से स्वीकार रहा है कि प्रजातंत्र की शासन-व्यवस्था सर्वाधिक उत्कृष्ट है। यह जन-समूह की आकांक्षा को मूर्त्त करती है। इसमें सामान्य जन-जीवन की सुख-शान्ति का राज और रहस्य छिपा हुआ है। आधुनिक कुंठाग्रस्त एवं तनावपूर्ण अंधकारमयी जीवन की तलहटी में कह उषा की अरूणाई का मांगलिक अवतरण है। आज सामाजिक जीवन को सुविधा देने के लिए जितने सारे अपेक्षित प्रयत्न किये जा रहे हैं उनका मूलश्रोत यही शासन-व्यवस्था है। यह जन-चेतना के सुस्फुरण का मांगलिक त्योहार है। यह जनता के द्वारा जनता के लिए किया गया जनकल्याणात्मक विधान है।राजनीतिशास्त्र के पंडितों ने आज इसलिए प्रजातंत्र को केवल शासन का ही रूप न मानकर इसे जीवन की एक आदर्श पद्धति माना है। आधुनिक युग में इसकी महत्ता तथा व्यापकता को हर क्षेत्र में स्वीकार किया जा रहा है। अत: आज यह वह संगठन और जीवन-मार्ग हो गया है जहां हमारे व्यक्तित्व तथा मानवता का पूर्ण विकास संभव हो। यह शासन, राज्य तथा समाज का स्वरूप हो गया है। इसे आज जीवन का एक रूप, नैतिक कारण तथा सामाजिक दर्शन भी कहा जाता है। समानता के अन्तर्गत यह आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक समानता का विश्लेषण करता है। स्वतंत्रता के अंतर्गत यह जीवन की उन स्थितियों की मीमांसा करता है जो व्यक्तित्व के स्वस्थ विकास के लिए अपरिहार्य है। इसमें स्वतंत्रता के नकारात्मक और सकारात्मक दोनों पक्ष और पहलू शामिल हैं। भ्रातृत्व के अंतर्गत यह ऐसी स्थिति का निर्माण करता है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे के साथ सद्भावनापूर्ण संबंध बनाकर रख सके।

मूलरूप से प्रजातंत्र के दो स्वरूप होते हैं - एक बाह्य या स्थूल स्वरूप तथा दूसरा आंतरिक स्वरूप अपने वाह्य लक्षण या स्वरूप में यह मताधिकार के आधार पर निश्चित काल के लिए चुने हुए प्रतिनिधियों का शासन है। यह शासन जनता के प्रति उत्तदायी होता है। इसके आंतरिक स्वरूप और लक्षण में शामिल हैं - कानून का शासन,व्यक्ति की स्वतंत्रता और जनता को प्राप्त समानता के अधिकार । इस रूप में प्रजातंत्र का यह तकाजा हो जाता है कि बहुमत से चुनकर आये हुए बहुमत प्रतिनिधियों की सरकार जनता को उसके विभिन्न अधिकारों के उपभोग का अवसर दें।

विगत 52 वर्षों तथा वर्त्तमान के संदर्भ में जब हम निष्पक्ष रूप से भारतीय प्रजातंत्र के स्वरूप पर विचार करते हैं तो हम पाते हैं कि अपने प्रथम रूप में यह शासन व्यवस्था अपने मौलिक स्वरूप के साथ हैं, क्योंकि यहां मताधिकार के आधार पर निश्चित अवधि पर बराबर चुनाव हुए हैं। जनता को अपने मताधिकार के प्रयोग का बराबर ही अनुकूल अवसर मिला है। हर चुनाव के परिणाम को यहां शासक तथा शासित दोनों वर्गों ने माना है। अबतक ऐसी स्थिति उत्पन्न नहीं हुई है कि सत्ता के हस्तांतरण में कभी कोई कठिनाई उत्पन्न हुई हो। सामान्य रूप से यह विश्वास जमा हुआ है कि चुनाव बिल्कुल निष्पक्ष होते हैं। लोकसभा के आम चुनाव में विरोधी दल के कुछ नेताओं की ओर से इसकी निष्पक्षाता के संबंध में कुछ शंका की गई थी, लेकिन वह नहीं के बराबर ही थी। कुछ चुनावों में पराजित उम्मीदवारों ने चुनाव की पवित्रता को न्यायालय में चुनौती भी दी थी लेकिन यह अपवाद स्वरूप कही जाएगी, सामान्य बात नहीं। चुनाव-आयोग की निष्पक्षता पर अब तक बहुत कम ही संदेह व्यक्त किया गया है। अत: इससे स्पष्ट हो जाता है कि प्रजातंत्र के समस्त बाह्य लक्षण भारतीय प्रजातंत्र में विद्यमान है। जहां तक प्रजातंत्र के आंतरिक स्वरूप के लक्षणों की स्थिति की बात है, उसमें कोई एक निश्चित मत नहीं है। चुनाव एवं मताधिकार को प्रजातंत्र का स्थूलरूप या शरीर कह सकते है। प्रजातंत्र की स्थिति को आंकने का सबसे उचित एवं आदर्श तरीका तो उसका आंतरिक लक्षण है। यही आंतरिक लक्षण प्रजातंत्र की सूक्ष्म-शक्ति मूलचेतना या आत्मा कहा जा सकता है। इसके लिए हमें यह देखना है कि भारतीय प्रजातंत्र किस हद तक कानून के शासन की स्थापना में संलग्न एवं सक्षम है। विगत आपातकालीन स्थिति की घोषणा, मीसा के अंतर्गत राजनीतिक नेताओं की बन्दी तथा कांग्रेसी शासक दल के इच्छानुकूल संविधान में संशोधन को देखकर देश-विदेश का एक तगड़ा वर्ग यह सोचने को बाध्य हो गया था कि भारत में प्रजातंत्र रहा ही नहीं है। इससे नागरिकों के अधिकारों का घोर हनन हुआ है। उस समय शासक दल की आलोचना करने वाले नेताओं को जेल में बन्द करना नागरिकों के स्वतंत्रता-अधिकार पर कुठाराघात करना है। मौलिक अधिकारों का इस रूप से संशोधन करना प्रजातंत्र के गले को दबाकर देश में तानाशाही प्रवृति को पनपने का अनुकूल अवसर देना है। इस संबंध में एक पत्र में प्रकाशित जयप्रकाश नारायण के विचार द्रष्टव्य हैं-"किस तरह इमरजेंसी के नाम पर हमारे देश में तानाशाही लादी गयी थी जनता को आतंकित किया गया था इसके सारे कानूनी अधिकार छीन लिए गये थे अखबारों का मूंह बन्द कर दिया गया था न्यायालय बेबस कर दिये गये थे। हजारों लोग जबरदस्ती जेलों में ठूंस दिये गये थे और अन्त में देश का पूरा संविधान ही बदल दिया गया था। देखना यह है कि संकट के वे दिन फिर कभी न आये।" इसी संदर्भ में श्रीमती विजयालक्ष्मी पंडित ने भी कहा था-"वर्त्तमान स्थिति और आपातकालीन स्थिति की घोषणा की पृष्टभूमि को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि इस देश से प्रजातंत्र की विदाई हो रही है और यह देश एकाधिकारवाद की ओर अग्रसर हो रहा है। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश के लिए एकाधिकारवाद की यह प्रवृति वास्तव में खतरनाक है। इसी प्रवृति के कारण मैं जनता के समक्ष यह प्रस्तुत करने आयी हूं कि इसे कैसे रोका जा सकता है और देश को तानाशाही की ओर अग्रसर होने से कैसे बचाया जा सकता है"

इन नेताओं और विचारकों के कथनानुसार जो ऐसी स्थिति हुई वह सचमुच भारतीय प्रजातंत्र के लिए खतरनाक कही जाएगी। प्रजातंत्र को आजादी के बाद हमने अपनी जीवन-पद्धति के अनुकूल हमने सारी व्यवस्था भी ठीक कर ली थी। आधुनिकता एंव प्रगतिशीलता का यह तकाजा भी था कि हम प्रजातांत्रिक व्यवस्था के अनुकूल ही चलें। यह बड़ी खुशी की बात थी कि हम प्रजातांत्रिक व्यवस्था के अनुकूल ही चलें और इसी के अनुकूल वर्षो से हमारा सम्पूर्ण शासन-तंत्र भी काम कर रहा था। प्रजातंत्र में मूल सवाल नागरिकों की स्वतंत्रता के अधिकारों के उपभोग का है। साथ-ही-साथ उसके

साथ जुड़े उनके कर्त्तव्यों का भी। जहां इस संतुलन में गड़बडी आती है, प्रजातंत्र का स्वरुप विकृत होने लगता है। हमारे संविधान के **अनुच्छेद 19** में व्यक्ति को सात प्रकार की स्वंतत्रता का मौलिक अधिकार दिया गया है जिसमें मुख्य है-अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, देश के किसी भी भाग में विचरण व बसने की स्वतंत्रता, किसी प्रकार के व्यापार, व्यवसाय या पेशे को करने की स्वतंत्रता आदि। प्राय: पिछले 52 सालों में, आपातकालीन स्थितियों को छोड़कर ये स्वतंत्रताएं प्रत्येक व्यकित को प्राप्त रही हैं और सरकार ने इसमें कम से कम हस्तक्षेप करने का प्रयत्न किया है। विगत आपातकालीन स्थिति के संदर्भ में इन अधिकारों पर हुए कुठाराघातों की चर्चा विरोधियों के द्वारा काफी की गयी है। विरोधी दल के नेताओं ने प्रेस पर लगाये गये अंकुश और प्रतिबंध की विशेष आलोचना की है और इसे प्रजातांत्रिक पद्धति के लिए बड़ा विषातक माना है।

यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि भारत में प्रजातंत्र का जो साफ-सुथरा स्वरूप होना चाहिए वह नहीं है। प्रजातंत्र की अट्टालिका के आधार के लिए जिन स्वतंत्रता, समानता एवं भ्रातृत्व की आवश्यकता है-उसकी यहां अभी बहुत कमी है। इस संदर्भ में कहने के लिए कुछ कार्य हुए है, कुछ प्रगति भी हुई है, लेकिन हमें इस क्षेत्र में आगे बहुत आगे बढ़ना है। हमारी गति की तीव्रता संतोषजनक एवं अपेक्षित नहीं कही जा सकती। आज भी इस देश में मत (वोट) की समानता के बावजूद घोर आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक असमानता है। प्राप्त सूचनाओं के अनुसार, हलांकि सामान्य जनता की आय में वृद्धि हुई है लेकिन वृद्धि की यह दर बड़े-बड़े पूँजीपतियों की आय के साथ ज्यादा जुड़ी हुई है। देश की सामान्य गरीब जनता यह समझ रही है कि उसकी स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ है। पढ़े-लिखे लाखों व्यक्तियों के सामने रोजी-रोटी की समस्या आज भी विकराल रूप में खड़ी है। सामान्य लोग बहुत हद तक निराशा हो गये हैं। स्थिति ऐसी है कि जब सरकारी डंडा जोर से पड़ता है तब मुल्यवृद्धि, भ्रष्टाचार, तस्करी एवं कालाबाजार की गतिविधि पर कुछ नियंत्रण पड़ता है। आज भी बेकारी, भ्रष्टाचार, बेईमानी हमारे राष्ट्रीय जीवन का अंग बनी हुई है। हमारी यह स्थिति सचमुच कलंक की स्थिति है जो हमारी प्रजातांत्रिक पद्धति के लिए ग्रहित कलंक के रूप में है। जब हम निस्पक्ष रूप से अन्य प्रजातांत्रिक देशों की प्रगति पर विचार करते है तो हमें लगता है कि उन देशों की तुलना में हमारे देश की प्रगति की गति मंद हैं। हमारी आज की यह स्थिति इस बात का स्पष्ट परिचय दे रही है कि हमारे प्रजातंत्र का वर्त्तमान रूप क्या है।

हमारे लोकतंत्र की अट्टालिका आज आतंकवाद, अनैतिकता और भ्रष्टाचार की जीव की ईट पर खड़ी है। कुछ वर्षो पूर्व हमारे तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने कहा था कि हमारे देश की प्रशासनिक व्यवस्था में भ्रष्टाचार इस कदर हावी है कि हम गांवों के लिए जो एक रुपया भेजते हैं उसका मात्र दस पैसे का ही लाभ गांव वाले को मिल पाता है। हाल में आजादी की स्वर्णजयंती मना रहे इस भारतीय लोकतंत्र के प्रधान मंत्री यह बेहिचक कह रहे हैं कि भ्रष्टाचार हमारे जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग बन गया है। हमें अपने देश को सुखी करने के लिए पहले-सबसे पहले भ्रष्टाचार और अनैतिकता से लड़ना होगा। मैं प्रधानमंत्री के रूप में कार्य करने में शर्मिन्दगी का अनुभव कर रहा हूँ। आज भ्रष्टाचार और अनैतिकता के कारण ही इस लोकतांत्रिक देश को घोटालों का देश (बी०बी०सी०) कहा जाने लगा है। राजनीतिक और प्रशासन के मंच पर भ्रष्टाचार और अनैतिकता के प्रभाव का यह आलम है कि इस देश के प्रध ान मंत्री और मुख्यमंत्री पर करोड़ों और अरबों की राशि हजम कर जाने का इलजाम यहाँ की शुद्ध और निष्पक्ष जांच एजेन्सी द्वारा लगाकर इस तथाकथित साफ सुथरी छवि वाले नेताओं, करोड़ो की नगद राशि घर में मिलाकर रखने वाले मंत्रियों और लाखो करोड़ों का वारा-न्यारा करने वाले सांसदों और विधायकों को खींचकर न्यायालय में जाकर गिड़गिड़ाकर क्षमा की भीख माँगने और जेल जाने के लिए वाध्य होना पड़ रहा है। फिर भी चार्जशीटेड शासनाध्यक्ष तिकड़म की गोटी बैठाकर सर्वोच्य नयायालय के भावी निर्णय को डूबते को तिनके का सहारा मान बैठे हुए हैं। आज सम्पूर्ण देश के सामान्य जन-जीवन की शान्ति व्यवस्था की यह स्थिति है कि देश के कोने-कोने में आतंकवादियों और अपराधियों का सामानान्तर शासन चल रहा है। अपराधी और आतंकवादी हमारे लोकतंत्र के आज प्रहरी बने हुए है। और इनकी कृपा पर ही आज हमारे राजनेता इस देश के लोकतांत्रिक शासन के साये में लोकहित नहीं स्वहित का सेवाकार्य भर कर रहे हैं। राजनेताओं द्वारा बाहुबलियों और अपराधियों के बलपर चुनाव में विजय हासिल करना भी एक प्रकार का भ्रष्टाचार ही है। यह भ्रष्टाचार अपने व्यापक रूप में हमारी लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था के अंग-प्रत्यंग में समाया हुआ है। शासन और प्रशासन के उच्च स्तर पर भ्रष्टाचार इस रूप में व्याप्त है कि सामान्य जन जीवन स्तर पर उसके कुप्रभाव के संबंध में कुछ नहीं कहा जा सकता। जब गंगोत्री का जल ही प्रदूषित हो तो गंगा की धारा की पवित्रता और अपवित्रता की बात ही सोचना मूर्खता है। इस उच्च स्तरीय भ्रष्टाचार के तांडव का यह स्वरूप है कि इस देश का प्रधान शासक वर्ग डंके की चोट पर यह कहने में तनिक भी लज्जा का अनुभव नहीं करता है कि संविधान में भ्रष्टाचार में आकंठ डूबे शासक नेताओं के लिए त्याग पत्र देने का कहां प्रावधान है। भ्रष्टाचार के इस आलम में उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश यह अरण्य रूदन कर रहे हैं कि हमलोगों पर अनुचित दबाव दिया जा रहा है और हमारे देश के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति भ्रष्टाचार को आज की शासन व्यवस्था का प्रमुख अंग मानकर उसके उन्मूलन के लिए सर्व स्तरीय सहयोग और प्रयास का आह्वान कर रहे हैं। भारत के तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड माउंटवेटन ने पंडित जवाहर लाल को पूछने पर कहा था कि मकान की गंदगी की सफाई के लिए झाड़ू ऊपरी सीढ़ी पर से लगाना चाहिए नीचे की सीढ़ी की सफाई से कोई फायदा नहीं।

आज यह बात निर्विवाद है कि भ्रष्टाचार की यह गंदगी प्रशासन के मकान के ऊपरी हिस्से पर आकर जम सी गई है जिसने संपूर्ण भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था को दुर्गन्ध मय कर दिया है। हमारी लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की नौका भ्रष्टाचार के बोझ से इतनी बोझिल हो गई है कि लगता है कि भारतीय लोकतंत्र की यह नाव अब डूब ही जायेगीं। विश्व का इतिहास इस बात का प्रत्यक्ष सबूत है कि ''भ्रष्ट माफिया पर समय पर अंकुश नहीं लगाने से बड़े-बड़े देश रसातल में चले गए। सोवियत संघ, पूर्वी यूरोप के देशऔर दक्षिण अमेरिका के देशों का अध:पतन ही भ्रष्ट माफिया के कारण हुआ है। ''दुर्भाग्यवश हमारा देश भी आज और अब उसी भ्रष्टाचार के महापंक में डूबने को है। इस लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की स्थिति इस कथन को सत्य प्रमाणित करती है कि यह लोकतंत्र राम भरोसे हिन्दू होटल के रूप में भगवान भरोसे चल रही है। जहां भ्रष्टाचारी और अपरधी तालठोक कर कानून और न्याय को ठेंगा दिखा रहा है-वहां लोकतंत्र की बात ही क्या पूछना।

फलत: आज हर प्रबुद्ध भारतीय यह सोचने और समझने में तनिक भी नहीं हिचक रहा है कि भारतीय लोकतंत्र की नैया अब डूबने को ही है। लोकतंत्र की प्रयोगशाला बना संसद-भवन और विधानसभा प्रांगण पिछले कुछ वर्षों से किस प्रकार अव्यवस्था, अशांति, हिंसा और बकवास का घृणित आंगन बना हुआ है-यह भारतीय लोकतंत्र के लिए घोर शर्मनाक बात है। लोकतंत्र के तथाकथित प्रहरी हमारे सांसद और विधायक अपने वैयक्तिक सामाजिक और राजनीतिक जीवन-मंच पर जिस प्रकार का गर्हित आचरण कर रहे है।-क्या वह लोकतंत्रमूलक आचरण कहा जाएगा। यह बात निर्विवाद है कि आजादी प्राप्ति के बाद के वर्षों में हमारी राष्ट्रीय जीवन शैली दिन प्रतिदिन घोर अलोकतांत्रिक होती जा रही है, लेकिन हम लोकतांत्रिक चेतना के स्फुरण का मुखौटा लगाकर, अपने घोर अलोकतांत्रिक घिनौने चेहरे को छिपाये खानापूर्ति की प्रक्रिया के माहौल में जी रहे है। यह हमारी आज की छद्मपरक लोकतंत्रमूलक राष्ट्रीय जीवन शैली का एक विशिष्ट अंग है।

संपर्क-हिन्दी विभागाध्यक्ष, मगध वि.वि.,बोधगया

डॉ०राजनारायण राय और उनका बाल साहित्य

❑ बाबूराम वर्मा

डा० राजनारायण राय एकेडेमिक दृष्टि से अध्यापक रहे हैं और उसके अनुसार हिन्दी भाषा और साहित्य के अधिकारी विद्वान हैं। रास पर शोध कार्य करके उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से डाक्टरेट प्राप्त की है और एम०ए० तक अध्ययन करते समय हिन्दी साहित्य में अमीर खुसरो या नाथ-सिद्धों से शुरू करके वर्त्तमान युग के अज्ञेय तक के साहित्य का विधिवत् पारायण किया है। उसके बाद भी वर्त्तमान साहित्य धाराओं से वे जुड़े रहे हैं और आज के कवियों-लेखकों से परिचित और उनके रचनाकर्म के पारखी अध्येता बने रहे हैं। उन्होंने अपना अध्यापन कार्य बिहार के एक कॉलेज में लेक्चरर बन कर शुरू किया, वहाँ से वे आर्मी कैडेट कॉलेज में कैडेटों को राष्ट्रभाषा सिखाने-पढ़ाने पुणे चले गए, तब यह कालेज वहीं महाराष्ट्र राज्य में स्थित था। वर्षों डा०आनन्दप्रकाश दीक्षित के सम्पर्क में (वे पुणे विश्वविद्यालय में अध्यक्ष पद पर थे) वहाँ रहे। तदुपरान्त, जब यह कॉलेज देहरादून चला आया और भारतीय सैन्य अकादमी से जोड़ दिया गया तो उसी के साथ खड़ी बोली हिन्दी की आदि भूमि-युग जनपद-से भौतिक सम्पर्क प्राप्त किया।

महाराष्ट्र में एक बढ़िया बौद्धिक चलन है, हमारे लिए अनुकरणीय भी, उसे डा०राजनारायण जी ने भरपूर अपनाया है। अपने बड़े विषयों के अलावा वहाँ के विद्वान छोटे-छोटे विषयों के अनुसंधान की ओर भी लगते हैं जिन्हें बहुत सारे लोग उपेक्षित ही करते हैं। डा० राय रास का अनुसंधान कार्य करते समय अपनी शोध-दृष्टि परिपुष्ट बना चुके थे। और उसी प्रसंग में संत और भक्ति साहित्य की ओर गहरे झुक चुके थे। उसमें भी नई दिशाएं टटोल रहे थे, उसी सिलसिले में बंगाल गुजराती जैसी भाषाओं का काम चलाऊ ज्ञान अर्जित कर लिया था। महाराष्ट्रीयों की भांति उन्होंने इतिहास की छोड़ी हुई जगहों और छोटे-छोटे परन्तु अनुपेक्षणीय विषयों या उनसे जुड़ी समस्याओं की तरफ ध्यान लगाया। महाराष्ट्र में अकेला व्यक्ति ही किसी संस्था या संस्थान के बनने की प्रतीक्षा न करके उसमे जुट जाता है और चमत्कारी कार्य हर प्रकार कर डालता है। डा०प०कु०गोडे जी ने संस्कृत के ज्ञात-अज्ञात टीकाकारों लेखकों, कवियों, उनके पूर्वापर्य, उनकी सही जन्म-मरण की तिथियों, खानपान की वस्तुओं जैसे जलेबी, इडली-डोसा, त्योहारों जैसे दीवाली का इतिहास अनेक श्रोतों का मंथन करके उजागर किया है जो अत्यधिक रोचक और जनता की जरूरत का है। इसी प्रकार डा०राय ने कई मोर्चों पर काम किया है और वर्षो तक पुस्तकों, कोषो, व्यक्तियों से अपने विषयों के बारे में सामग्री खोजते-जुटाते रहे और बाद में उसे प्रकाशित किया। उनके बाल साहित्य के रूप में इस सामग्री ने बालकों के लिए ही नहीं बड़ों के लिए भी मूल्यवान जानकारी जुटाई है।

हिन्दी ही नहीं लगभग सभी भारतीय भाषाओं के बाल-साहित्य का कलेवर कहानियों, कविताओं अथवा नाटकों से भरा हुआ है। उनका उपजीव्य भी प्राय: लोक में फैले या पुराणों में बताए कथानक या कथाएं ही हैं। अथवा आधुनिक नेताओं या महापुरुषों की जीवनगाथाएं। ये जीवन गाथाएं तथ्यों से कम कल्पना के ओज से मण्डित की गई हैं और मध्ययुगीन चमत्कारों का इनमें अच्छा उपयोग किया गया है। राजपाल एण्ड संस द्वारा प्रकाशित अनेक ऐसी बाल जीवनियाँ मैने देखी हैं। इसी प्रकार कविताएँ और गीत भी रचे गए हैं। बहुधा इनका उद्देश्य उपदेश ग्रहण है। नाटकों पर भी राष्ट्रीयता की चासनी चढ़ी हुई है। शिवाजी, प्रताप, छत्रसाल पर बाल नाटक मिलते हैं जिन्हें एक प्रकार से बड़ों के नाटकों का बाल संस्करण कहा जा सकता है । डा०हरिकृष्ण देवसरे के शोध प्रबन्ध के अवलोकन से यही धारणा बनती है। विज्ञान के चमत्कारों से नई किस्म का बाल लेखन शुरू हुआ जो आजकल संपरीक्षणों तक उतर आया है। इसमें बालकों को वैज्ञानिक सिद्धान्तों से परिचित कराया जाता है और घटना-जगत को समझने की वैज्ञानिक दिशा की ओर ले जाया जाता है। ऐसा साहित्य कम लिखा गया है और बाल-लेखन में अब भी नाटक, कहानियों और कविता का बाहुल्य है और इनमें भी कविता का डंका सबसे ज्यादा जोरशोर से बजता दिखाई पड़ता है। यों, आविष्कारों की कहानियां भी बच्चों के लिए लिखी गई हैं।

अभी तक उनकी चार पुस्तकें बच्चों के (बल्कि बड़ों के लिए भी) लिए प्रकाशित हुई हैं। इनके नाम हैं।1-फहरते ध्वज, चमकते चिह्न, 2-उड़ते घोड़े, लड़ते वीर 3-भारत में विदेशी यात्री और 4-हथियारों की कहानियां । इनसे ऐसी जानकारी हम लोगों को प्राप्त होती है जो एक स्थान पर प्राय: मिलती ही नहीं, विश्व कोश जैसे ग्रन्थों में भी नहीं क्योंकि ये ऐसे विषय हैं जिन पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता और न जानने की चेष्टा की जाती है।

आइए, पहली पुस्तक की पहले चर्चा की जाए। यह जानना रोचक होगा कि झंडों वाली यह सामग्री पहले धर्मयुग (मुंबई) में धारावाहिक रूप से छपी थी। यह बताने का तात्पर्य मेरा डा०धर्मवीर भारती (तब वही संपादक थे) की गुणग्राहिता और नव-नव विषयों का उन्मेष करने की उनकी प्रवृति पर भी प्रकाश डालना है। पुस्तक 1975 में सामने आई। इसमें 26 झंडों की चर्चा है और अन्य पुस्तकों की तुलना में इसमें अधिक सामग्री दी गई है, दूसरी पुस्तकों में बारह घोड़े या 12 यात्री आए हैं। इसमें महाभारत के वीरों, अनेक असुरों, देवी-देवताओं से लगाकर चद्रगुप्त (मौर्य नहीं गुप्त वंश के) और मोहम्मद बिन तुगलक तक के ध्वज चिह्नों का प्रामाणिक वर्णन दिया गया है। रोचक बनाने को साथ में कथा भी दी गई है अथवा कल्पित करके जोड़ी गई है। श्री राम के ध्वज चिह्न को तो शायद आप जानते भी हों परन्तु श्रीकृष्ण, अर्जुन, भीम, दुर्योधन आदि के झंडों पर कौन सा चिह्न अंकित था यह कितने जन जानते हैं ?

दूसरी पुस्तक में जिन 12 विदेशी यात्रियों की चर्चा की गई है उनमें से कई हमारे लिए पहले से ही काफी परिचित हैं। उनकी चर्चा इतिहास ग्रन्थों में मिलती है बल्कि कहीं-कहीं तो इतिहास में उनका अपरिहार्य स्थान है। उनके लिखे वर्णनों के बिना इतिहास अधूरा ही रह जाता। चन्द्रगुप्त मौर्य का इतिहास मेगास्थनीज के वर्णन बिना ढांचे के सिवा कुछ भी न होता। इसी प्रकार फाह्यान, ह्वेनसांग, अलबरूनी, इब्नबतूता, सर टामस रो, टैवर्नियर, बर्नियर सब ही इतिहास के पाठकों को, स्कूली बच्चों को भी ज्ञात हैं। इस पुस्तक में कुल 12 विदेशी यात्री लिए गए हैं।

डा०राय ने उन यात्रियों के यात्रा-वर्णन को बाल मनोविज्ञान के साथ प्रस्तुत किया है। यात्राओं में घटी घटनाएं देकर, कठिनाइयों का उल्लेख कर रोचकता बढ़ाई है। अधिकतर नाम जाने पहचाने हैं फिर भी जिस रूप में बालकों के लिए ये प्रस्तुत हुए हैं उससे उन्हें वास्तव में आनन्द मिलता है। साहसिकता इन यात्रियों का प्रधान गुण है और बालकों के लिए इससे ज्यादा आकर्षक कोई दूसरी बात नहीं होती। चीनी यात्रियों की कथाएं उनकी जीवट, लगन और ज्ञान पिपासा के कारण रोचकता के शिखर पर पहुंच गई हैं।

उड़ते घोड़े लड़ते वीर (प्रकाशित 1977)में विश्व प्रसिद्ध घोड़ों और उन पर सवार होकर मैदान में उतरने वाले वीरों की कथाएँ दी गई हैं। ये वर्णन भी पहले धर्मयुग में धारावाहिक छपे, बाद में पुस्तकाकार प्रकाशित हुए। इसमें 12 घोड़े आए

हैं कुछ वास्तविक कुछ काल्पनिक। काल्पनिक मैं उच्चै: श्रवा को कहता हूँ जो सागर मंथन से प्रकट हुआ। एक दृष्टि से वह मनु की भाँति सबसे पहला घोड़ा ठहरता है परन्तु है काल्पनिक ही मेरे विचार से। उसके मुकाबले में राणा प्रताप का चेतक, रंजीत सिह की घोड़ी लाली परिचित और वास्तविक है। दूसरे घोड़े भी ऐसे ही हैं और यही डा० राय की विशेषता है कि उन्होंने परिश्रमपूर्वक खोज-खोज कर ऐसे घोड़े की कथाएं बच्चों के लिए प्रस्तुत की हैं जो बड़ों के लिए भी नए घोड़े हैं। जिस तरह जी०के० में छोटे-छोटे परन्तु पैने प्रश्न रखे जाते हैं उसी तरह इस अभिनव क्षेत्र में डा०राय ने पैने प्रश्न और उनके प्रखर उत्तर रोचक कथाओं के साथ दिए हैं। यहाँ भी उन्होंने नई जमीन तोड़कर ज्ञानवर्धन किया है, बच्चों के बहाने बड़ों का भी भले ही वे कहें कि हमें क्या लेना इन घोड़ों घुड़सवारों से हमें तो अपनी यात्राएं बस रेल से करनी है।

हथियारों की कहानी (प्रकाशित 1990) में भी बारह की संख्या रखी गई थी और इसमें चक्र, त्रिशूल और पाश, परसु, शूल और शक्ति, धनुष-बाण, लाठी, गदा, वज्र और खट्बांग, मुसल और हल, तलवार, सांग और जमधर, खड्ग और ढाल की कहानियाँ और जिन युद्धों में इनका प्रचुर प्रयोग हुआ उनकी कहानियाँ दी गई हैं। चक्र का संबन्ध विष्णु और श्रीकृष्ण से रहा है परन्तु ये कैसा था, किस प्रकार प्रयोग किया जाता था, क्या-क्या इसकी किस्में थी सामान्यत: ज्ञात नहीं है। इसी प्रकार शूल और शक्ति के बारे में अज्ञान ही अधिक व्याप्त है, हाँ, तलवार ओर खड्ग, धनुष-बाण के बारे में स्थिति ऐसी नहीं है क्योंकि ये वर्तमान समय तक चलते रहे हैं। धनुष-बाण का प्रयोग आदिवासियों में प्रचलित हैं। और तलवार तो सर्वश्रेष्ठ कैडेट तक को प्रदान की जाती है जिसे सोर्डआफ ऑनर कहा जाता हैं। तलवार का अब उतना व्यवहार तो नहीं फिर भी वह अपरिचित नहीं है। राजा महाराजाओं के चित्रों में सदा तलवार बंधी दिखाई जाती है। रामलीला के प्रताप से गदा नाम के साथ उसका अनुकरण लकड़ी की गदा या मुदगर हनुमान जी के साथ दिखाई पड़ जाती हैं। खंग मुझे सही नहीं लगा यह कदाचित खड्ग ही होना चाहिए। खड्ग सिंह या खड़क सिंह नाम तक में यह खड्ग जुड़ा है। इतना सब होते हुए भी आधुनिक हथियार जैसे पिस्तौल या रिवाल्वर ने इनका प्रयोग या परिचय कम कर दिया है। इन पुराने हथियारों का सजीव वर्णन डा० राय ने देकर बच्चों को बताने के माध्यम से ही सही इन्हें विस्मृत होने से बचाया है।

डा०राय ने छड़ी, पैना, बनेठी, ठेंगना, सोटा, लोहबंदा, गुरमेख (हमारे यहाँ गुलमेख कहते हैं जो देशी ढंग की ऐसीकील होती है जिसका सिर मजबूत और अधिक प्रहारकारी बनाया जाता है) हूरा आदि अनेक लोक शब्द दिए हैं। कहानी के साथ-साथ इनका भाषा वैज्ञानिक मूल्य भी है। मूसल भी ऐसी लोहा चढ़ी लाठी का बड़ा भाई मुझे लगता है जिसे बलराम ही उपयोग में ला सकते थे क्योंकि वह अधिक वजनी होता होगा। मुदगर और गदा प्रारम्भ में छोटी बड़ी बहनें होती होंगी बाद में लोहे का उपयोग करके उसे अधिक प्रहारक शस्त्र बना दिया होगा।

डा०राय की दृष्टि छोटी-छोटी बातें रोचक ढंग से अधिक मात्रा में देने की रही है। इस प्रयास में बहुत सी बातों के विस्तार में जाने से वे रूके होंगे। मैं नहीं समझता कि उन जैसा खोजी व्यक्ति इन विषयों की गहराई में नहीं गया होगा और जितनी सामग्री यहाँ दी है उससे दस गुणी अवश्य एकत्र की होगी।

अपने पाठकों को बताना चाहूँगा कि कहानीकार, निबन्धकार, नाटककार, समीक्षक और चिन्तक जैसे रूपों में डा0 राय का परिचय शीघ्र मिलने वाला है और तभी हमें पता चलेगा कि कितनी विधाओं में और कितना अधिक कार्य उन्होंने किया है और वे मात्र बाल साहित्य लेखक नहीं हैं यद्यपि बाल-साहित्य लेखन में भी नए ढंग की रोचक सामग्री देकर उन्होंने हिन्दी का गौरव बढ़ाया है। सेना में हिन्दी अध्यापक बनकर अपने साहित्य कर्म में कुछ कठिनाइयाँ खड़ी की तो उससे सैनिक विषय हिन्दी में आने से हिन्दी का उपकार भी हुआ।

संपर्क- "उत्तरगिरि", 67-बल्लूपुर , देहरादून

नई दिल्ली में राष्ट्रपति के०आर०नाराणन ने संस्कृत, पाली, अरबी और फारसी भाषओं के विद्वानों को सम्मानित किया। इस अवसर पर विद्वानों के साथ श्री नारायणन, उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकांत, प्रधानमंत्री अटल जी तथा मानव संसाधन विकास मंत्री श्री मुरली मनोहर जोशी।

कोई न कोई महापुरुष आकर भारत को बचा लेगा- श्री राजेन्द्रपाल पुरी

भारतीय स्वतंत्रता के महायज्ञ में इस देश के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े अनेक हस्ताक्षरों ने तन-मन-धन से योगदान किया है। उन दिनों उनका लक्ष्य मात्र अंग्रेजों को बाहर निकालना या ब्रिटिश हुकूमतों को समाप्त करना ही नहीं था बल्कि सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक सुधार भी करना था। राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् यहां के लोगों को देश का संचालन करने का दायित्व जब दिया गया तो विभिन्न क्षेत्रों में सुधार की बात तो दूर हमारे नेता तो अपने स्वार्थ की खातिर देश हित को कुर्बान करने के लिए हमेंशा तैयार रहते हैं। भारत ने जिस आत्मविश्वास, निष्ठा और उम्मीद के साथ स्वतंत्रता, जनतंत्र और सामाजिक न्याय की चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए अपने कदम बढ़ाना प्रारम्भ किया था वह सब आज धराशायी होता दिखाई दे रहा है। इतना सब कुछ के बाद भी देशभक्त तथा स्वतंत्रता सेनानी श्री राजेन्द्रपाल पुरी को उम्मीद है कि कोई न कोई आकर इस देश को बचा लेगा क्योंकि जब संसार में ज्यादा खराबियां आ जाती है तो कोई न कोई महापुरुष इसे दूर करने के लिए जन्म लेता है।

अप्रैल के प्रथम सप्ताह में रेल भवन में आयोजित रेलवे हिन्दी सलाहकार समिति की 44वीं बैठक में भाग लेने के लिए नई दिल्ली की जब मैंने यात्रा की थी तो उसी अवधि में कनाट प्लेस स्थित सेन्ट्रल न्यूज एजेन्सी (प्रा०) लि० के प्रोपराइटर श्री राजेन्द्रपाल पुरी जी से बिना कोई पूर्व सूचना के मैंने साक्षात्कार किया तथा स्वतंत्रता के पूर्व तथा आज के हालात पर उनसे खुलकर बातें हुईं। प्रस्तुत है यहां उनसे हुई बातचीत के कुछ अंश-

-प्रधान संपादक

प्रधान संपादक

राजेन्द्रपाल पुरी

इसके पूर्व कि हम उनसे उनके व्यवसाय तथा अपनी पत्रिका के संबंध में कुछ बात पूछते श्री राजेन्द्रपाल पुरी ने मुझे बताया कि उन्होंने देश के स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया है।

प्रश्न- स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कब और किस हवालात में आपको रहना पड़ा?

पुरी- पहली बार 20 मार्च, 1943 से 19 मई, 1943 तक लाहौर हवालात में रहने के बाद 20 मई, 1943 से 19 जुलाई, 1943 तक दिल्ली के केन्द्रीय कारा तथा 20 जुलाई, 43 से अक्टूबर, 43 तक फिरोजपुर जेल में मुझे रहना पड़ा।

प्रश्न- जेल में आपके साथ कौन-कौन लोग थे?

पुरी- जेल में मेरे साथ क्षेमचन्द्र सुमन, लेखराम सेठ, बृषभान, डॉ०यदुवीर सिंह, मौलाना अनुरूद्दीन बिहारी , डॉ०गैरूल्ला, मनुभाई शाह तथा बीजू पटनायक जैसे स्वतंत्रता सेनानी थे।

प्रश्न- जेल से छूटने के बाद आपके मन में कौन से भाव आये?

पुरी- जेल से निकलने के पश्चात् मैंने चार संकल्प लिए-(1) राजनीति में भाग लेने की बात तो दूर उसके नजदीक कभी नहीं जाऊंगा। (2) अपनी कमाई में जो आयकर निर्धारित होंगे उसे पूरा-पूरा और वक्त पर चुकाऊंगा। (3) रिश्वत न लूंगा और न दूंगा। (4) झूठ कभी नहीं बोलूंगा।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि व्यवसाय में रहकर भी इन संकल्पों को मैं पूरा कर रहा हूं।

प्रश्न- जेल से निकलने के बाद आपने सर्वप्रथम कौन-सा व्यवसाय अपनाया?

पुरी- हमारे छोटे भाई श्री बी०एस०पुरी के द्वारा पहले से ही संचालित न्यूज पेपर के व्यवसाय में योगदान देना मैंने उचित समझा और इन दिनों दिल्ली के कनॉट प्लेस में सेन्ट्रल न्यूज एजेन्सी लि० के माध्यम से पत्र-पत्रिकाएं विशेषकर अंग्रेजी में तथा किताबें बेचने का व्यवसाय मैं कर रहा हूं।

प्रश्न- इस व्यवसाय से हो रही आय पर क्या आप आयकर सरकार के पास जमा कर रहे हैं?

पुरी - इस व्यवसाय से हो रही आय पर प्रति वर्ष करोड़ों रुपये आयकर के रूप में मैं वक्त पर अदा करता हूं।

प्रश्न- क्या आपको कभी जयप्रकाश नारायण जी के साथ काम करने का मौका मिला?

पुरी- हां, जयप्रकाश जी के साथ स्वतंत्रता आन्दोलन में काम करने में मुझे गौरव का अनुभव होता था।

प्रश्न- देश की आज की परिस्थिति देखकर आपको कैसा लगता है?

पुरी- मुझे रोना आता है खासकर लोगों के चरित्र, आचरण और उनकी नैतिकता में निरन्तर गिरावट को देखकर। यह बात मुझे समझ में नहीं आती कि आखिर इसे कैसे ठीक किया जाय क्योंकि हर आदमी आज उसी के चंगुल में फंसा है। फिर भी मुझे विश्वास है कि हालात कभी न कभी सुध रेंगे। जब संसार में ज्यादा खराबियां आ जाती हैं तो कोई न कोई महापुरुष जन्म लेता है। मुझे पूरी उम्मीद है कि कोई न कोई महापुरुष आकर इस भारत को बचा लेगा।

प्रश्न- क्या आप अपने जीवन के कुछ अनुभव मुझे बता सकेंगे?

पुरी- 15 नबम्वर, 1920 को पंजाब के होशियारपुर जिले के गडदीवाला गांव (कस्वे) में जन्में श्री राजेन्द्रपाल पुरी ने कहा कि लगभग 80 बर्ष की उम्र के करीब पहुंचने पर भी आजतक मुझे कोई धोखेबाज नहीं मिला। हां, एक बार पार्सल को छुड़ाने के सिलसिले में मेरी पत्नी से एक डाकिया ने 50 रुपये ले लिए थे किन्तु डाकतार विभाग में अधिकारियों के समक्ष जाकर शिकायत करने पर उस डाकिये ने केवल अपनी भूल स्वीकार की बल्कि तबसे रिश्वत नहीं लेने की उसने कसमें खाई।

अपने अनुभव बताने के सिलसिले में श्री पुरी ने बताया कि दिल्ली के ग्रेटर कैलाश में अपने मकान निर्मित करने तथा अपने एजेन्सी के चार दफ्तरों एवं घर के कुल 38 टेलीफोन रखने के बावजूद आज तक किसी मुलाजिम से न तो कोई गलत काम करवाया और न किसी को एक पैसा रिश्वत के तौर पर दिया। इसलिए **मैं मानता हूं कि रिश्वत देने वाले लेनेवाले से ज्यादा दोषी हैं क्योंकि गलत काम कराने के लिए वे रिश्वत देते हैं।**

अपने पिता श्री लाला भोला राम तथा एक मात्र संतान श्री समीर पुरी एवं पौत्र श्री नीलम के साथ सुख-शान्ति में जीवन बसर करने वाले श्री पुरी ने अंत में एक मार्मिक बात बताई कि उन्हें आजतक कोई बुरा आदमी नहीं मिला। बड़ी विनम्रता एवं आदर के साथ उनका अभिवादन करने के बाद मैंने उनसे विदा लिया।

दूसरा पहलू

❑ संजय सिन्हा

विमलेश चक्रवर्ती, यही नाम है उनका। पर 'विमल बाबू के नाम से वे मशहूर हैं। अपने शहर से लेकर विदेश तक में उन्हें जानने वालों की कतई कमी नहीं है। पेशे से वैज्ञानिक और हुलिया दार्शनिकों की तरह, चेहरे पर लंबी खिचड़ी दाढ़ी और बेतरतीबी से बिखरे बाल, संजीदापन उनके फितरत में शुमार था, मगर हमेशा कुछ-न-कुछ बुदबुदाते रहते, मानों खुद से बातें कर रहे हों।

एक बार किसी जटिल प्रोजेक्ट में कामयाबी हासिल करने पर उन्हें राष्ट्रपति-सम्मान भी प्राप्त हुआ था। वैसे इक्के-दुक्के पुरस्कार व सम्मान आदि तो विमल बाबू को प्राय: मिलते ही रहते । सत्तर के दशक में उनके एक प्रयोग पर सारा विश्व स्तब्ध रह गया था, तब से वैश्विक-स्तर पर उनकी शोहरत और भी बढ़ गई थी।

पता चला कि विमल बाबू इन दिनों एक नए सर्वशक्तिशाली परमाणु-बम के प्रयोग में पूरे मनोयोग से लगे हुए हैं, लिहाजा अप्वाइंटमेंट लेकर मैं सीधे उनके प्रयोगशाले में पहुंचा। धीर-गंभीर मुद्रा में विमल बाबू मेरे सामने वाली आराम-कुर्सी पर बैठे थे। मेरी आंखें प्रयोगशाले के इर्द-गिर्द घूमती हुई उनके चेहरे पर जाकर केन्द्रित हो गई थीं। मैने उनसे पहला सवाल किया-बिमल बाबू.....आपके इस नए प्रयोग का उद्येश्य क्या है ?

देश के 'डिफेंस पावर' को और अधिक मजबूत बनाना छोटा-सा जवाब था उनका।

बातचीत का क्रम काफी समय तक चलता रहा। उन्होंने अपने नए प्रोजेक्ट के परिप्रेक्ष्य में ढेर सारी जानकारियां दीं। मैंने चलते-चलते पूछ लिया-'विमल बाबू.....एक आखिरी सवाल कि आज जबकि देश कई दूसरी समस्याओं से जूझ रहा है, ऐसे समय में परमाणु हथियारों पर सरकार द्वारा अरबों रुपये खर्च किए जा रहे हैं..... यूं समझ लें कि एक होड़ सा लग गया है परमाणु हथियारों के प्रयोग व परीक्षण का। आपका यह नया प्रयोग भी काफी खर्चीला है और इसकी सफलता वास्तव में एक धमाका साबित होगा, लेकिन .....इसका दूसरा पहलू क्या होगा? एकदम संजीदा हो आए थे विमल बाबू। एकाएक कमरे में घुप्प अंधेरा छा गया, तभी सामने रखे कम्प्यूटर के स्क्रीन पर कोई दृश्य उभरता-सा दीखने लगा। विमल बाबू के हाथ की अंगुलियां कीबोर्ड पर थिरक रही थीं। थोड़ी देर बाद स्क्रिन पर कुछ मानवाकृतियां दिखीं और धुएं की तरह कोई पदार्थ पूरे वातावरण में धीरे-धीरे फैलता गया, जिसके प्रभाव से मानवाकृतियां तड़पने लगी, जैसे रेत पर पड़ी मछलियां पानी के अभाव में तड़फड़ाती हैं। यह क्रम लगातार कुछ मिनट तक चलता रहा और फिर पूरे स्क्रिन पर एक अजीब सा अंधेरा छा गया। विमल बाबू अब भी उसी धीर-गंभीर मुद्रा में बैठे हुए थे और मैं उन्हें अवाक्-सा देखता रहा।

संपर्क : पोस्टबॉक्स नं-164, आसनसोल

चोटें.....?

❑ आलोक भारती

उसके घर के बगल की एक दूकान पर मैं बैठा उपने एक मित्र से बातें कर रहा था तभी वह मोटर साईकिल से उतरा। नजरों का सामना हो ते ही मैं मजाक के लहजे में पूछ बैठा-----"कलकत्ते से आ रहे हो .....।

तुम कहीं जाने वाले थे न .....?"

चुभती हुई बात जिगर के पार उतर गई। उसने करीब आकर मेरे हाथ पर एक लिफाफा पटक दिया-----"देखिये क्या हैं इसमें ....?

उसमें रेलवे का रिजर्वेशन टिकट था। उसने ठंढे स्वर में कहा-----" टिकट कैंसिल हो गया है। अब आगे किसी तारीख में जाना हे। कुछ जरूरी काम बीच में पड़ गया .....।"

क्षण भर बाद ही उसका स्वर तीखा हो गया-----"मगर आप इतना टोंट न कसा कीजिये। आपके लिये बेहतर यही होगा..। पहले अपने रहन-सहन का ढर्रा बदलिये ....।" इसीलिये आप लोग तरक्की नही कर रहे ....। हमसे बात करने के लिये पहले हमारी तरह बनिये.....। बात करने का तरीका सीखिये .....।"

अभी नया-नया पैसे वाला हुआ है वह। उसकी बातों में अहंकार की अभिव्यक्ति होती थी। उसकी बातों का सलीका मुझे कहां रास आता। मैं तो अभी बहुत पीछे था। उससे हर मामले में था तो वह मुझसे छोटा ही। मेरा चचेरा भाई। अपने रौब-दाब और धमकियों से मुझे जैसे दबोचने लगा। अनजाने ही उसने मुझे मर्मान्तक पीड़ा दे दी। बेकार ही उसे टोका।

एक चोट का जबाब कई चोटें थीं !

संपर्क : श्री लक्ष्मी वस्त्रालय, जयनगर, मधुबनी

लोकतंत्र की जय

❑ डॉ० मनोहरलाल गोयल

अपसधी से राजनेता और राजनेता से विधायक बने अब वे सांसद बनने का स्वप्न देख रहे थे उनकी पार्टी के लोगों का कहना था कि विध ायक जी का हृदय परिवर्तन हो गया है जिस तरह डाकू रत्नाकर कालान्तर में महाकवि बाल्मीकि बने और रामायण जैसे महाकाव्य की रचना की, उसी तरह विधायकजी सांसद और फिर मंत्री बनकर पूरे देश की सेवा करेंगे।

एक दिन वे एक सभा में भाषण दे रहे थे। यह सभा रंगदारी और भ्रष्टाचार के खिलाफ आयोजित की गई थी। भाषण में विधायक जी कह रहे थे- आप अपराधियों की मदद मत कीजिये। भ्रष्टाचार और रंगदारी का कोई मामला हो, तो मुझसे आकर कहिए, मैं ऐसे लोगों से सख्ती से निपटूंगा। मैं आपका प्रतिनिधि हूं। मेरे रहते कोई गलत काम नहीं हो सकता। आदि-आदि।

शाम को मैं एक दुकान पर बैठा था। तभी तीन चार लड़के आए और दुकानदार तो उन्हें देखते ही आतंकित हो गया था मैंने ही उनसे पूछा-तुम क्या चाहते हो कि नेताजी अपने भाषणों में भी अपराध या अपराधियों का समर्थन करेंगे? भाषण तो भाषण ही होता है। वे जननेता हैं और जनता की भाषण में ही बोलते हैं। लेकिन अपना धंधा थोड़े बंद कर देंगे? फिर उसने झपट्टा मारकर मेरी जेब में रखे एक सौ रुपए निकाल लिए। फिर जाते-जाते दुकानदार से कह गए-हम कल आयेंगे। रुपयों का बन्दोबस्त करके रखना।

मैने दुकानदार से कहा-आप पुलिस में शिकायत क्यों नहीं करते? वह क्या कर लेगी? दुकानदार ने कहा-पुलिस तो खुद विधायकजी से डरती है। हमारे लिए तो दोनों ही यमदूत जैसे हैं। इस क्षेत्र में इनका आतंकराज है। कोई चूं नहीं कर सकता। ऐसे में हम पानी में रहकर मगर से बैर कैसे मोल लें? फिर दुकानदार ने मुझे भी सलाह दे डाली- आप भी अपने छीने गए रुपये की शिकायत लेकर मत जाइयेगा। आप इस क्षेत्र में नए आए हैं। अगर कहीं ऊपर न्याय मांगने गए, तो ऐसे लफड़े में डाल दिये जायेंगे कि हजार-दो हजार और खर्च करेंगे, तभी सुरक्षित निकल पायेंगे। परेशानी ऊपर से दुकानदार शायद सच ही कह रहा था। उसका चेहरा सब कुछ साफ-साफ बता रहा था। मैं भी लोकतंत्र की जय का नारा लगाते हुए अपने घर आ गया।

संपर्क- गोयल भवन, विष्टूपुर, जमशेदपुर

राजनीतिक कलाबाजियों का शिकार हुआ बारहवीं लोकसभा

❑ विनय कुमार सिन्हा

गत 17 अप्रैल को संसद में संख्या के खेल में वाजपेयी सरकार को मात मिली। इसके साथ ही वह सत्ता में बने रहने का अपना अधिकार खो दिया। वहीं सरकार बनाने के विपक्षियों के मंसूबों पर पानी फिर गया। संसद में विश्वास प्रस्ताव के विरूद्ध एकजुटता प्रदर्शित करने वाली विपक्षी पार्टियां संसद के बाहर आते ही सूखे पत्ते की तरह बिखर गयी। उनका धर्मनिरपेक्षता का खूंटा एक झटके में उखड़ गया। विपक्षियों ने लगभग एक हफ्ते के थोथा हरकत के बाद देश को कामचलाऊ सरकार के हाथों छोड़ दिया, जिसे जन कल्याणकारी फैसले लेने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है और जनता को मिला चुनाव की एक और विभीषिका।

दो महीने भी नहीं बीते हैं जब लोकसभा में बिहार में राष्ट्रपति शासन के सवाल पर मत विभाजन के बाद भाजपा गठबंधन सरकार को आत्म-विश्वास बढ़ा था और देशवासियों को भी यह महसूस होने लगा था कि सरकार कम से कम दो साल तो जरूर खिंच जाएगी। तब तमिलनाडू की अम्मा का रूख भी सहयोगात्मक था। अम्मा के मुख-मुद्रा में अचानक परिवर्तन आया और एक पखबाड़े के भीतर ही सबकुछ घट गया। बात इतनी दूर तक जाएगी इसका कयास किसी को नहीं था। जयललिता बर्खास्त एडमिरल विष्णु भागवत द्वारा रक्षामंत्री पर लगाए गए आरोपों की जांच एवं उसकी पुर्नबहाली को लेकर हठ पकड़ चुकी थी। साथ ही वह यह भी मांग कर रही थी कि जार्ज फर्नांडीस को रक्षा मंत्रालय से हटाकर कम उत्तरदायी वाला मंत्रालय सौंपा जाय।

कांग्रेस का यह कहना कि सरकार सहयोगियों से मतभेदों के कारण गिरी यह सच है। परंतु यह भी तथ्य है कि कांग्रेस गठबंधन में उत्पन्न दरारों को चौड़ा करने का अपराधी है। पिछले कई महीनों से कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी का बार-बार यह दुहराना कि भाजपा गठबंधन सरकार आंतरिक विवादों से गिरेगी। उस परिस्थिति में कांग्रेस सरकार बनाने को तैयार है। दरअसल सोनिया और जयललिता के बीच पिछले छः महीने से खिचड़ी पक रही थी और ईधन का काम कर रहे थे जयललिता के अघोषित प्रवक्ता सुब्रहमण्यम स्वामी। सुब्रहमण्यम स्वामी सरकार के आरूढ़ होने के समय से ही विरोधी चल रहे थे और सरकार गिराने का प्रपंच रच रहे थे। गठबंधन में चुनाव लड़ने के बाबजूद गत वर्ष विश्वास प्रस्ताव पर मतदान के समय वे सदन से अनुपस्थित रहे थे। वे लगातार कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं के संपर्क में थे और जयललिता पर समर्थन वापस लेने का दबाब डाले हुए थे। घटनाक्रम के अंतिम चरण में राजधानी दिल्ली में एक चाय पार्टी में सोनिया और जयललिता का व्यक्तिगत दूरी खत्म होना घटनाक्रम में नया मोड़ लाया। वहीं दोनो नेत्रियों ने मिलकर भावी सरकार का प्रारूप भी तैयार कर ली थी। प्रारूप का आधार बना जयललिता की दो अनैतिक शर्तें पहला अन्हें कानूनी पचड़े से बचाना तथा द्रमुक सरकार की बर्खास्तगी। उड़ीसा के मुख्यमंत्री गिरधर गोमागों को विशेष विमान से

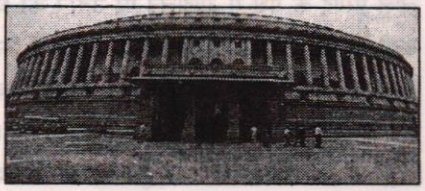

दिल्ली बुलाया जाना और उनका सदन में उपस्थित होकर विरोध में मत गिराना कांग्रेस की सरकार गिराने की गंभीरता की पुष्टि करता है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि जयललिता अचानक विष्णु भागवत के मसले को उठाकर वाजपेयी सरकार से अपने विशेष मांगों को मनवाने के लिए दबाब बना रही थी। समर्थन वापसी का डर दिखाकर जयललिता अबतक वाजपेयी सरकार के सामने अनेक नाजायज मांगे रखती आ रही थी। सरकार ने एक हद तक उसे पूरा भी किया। यह सिलसिला भाजपा सरकार के गठन से ही चलता आ रहा था। उन्होंने जिद करके मनपसंद विधि मंत्री बनाया ताकि भ्रष्टाचार के मामले में वह उनकी सरकारी सहायता करे। पवर्त्तन निदेशालय के एक अधिकारी बेजबरूआ का तबादला उन्हीं के निर्देश पर किया गया था। इसके लिए विपक्षियों ने सरकार की भारी खिंचाई की थी। बाद में न्यायालय ने उक्त पद पर उनके पुर्नबहाली के भी निर्देश दिए थे। सरकार ने जयललिता पर चल रहे भ्रष्टाचार के 4 मामले को विशेष न्यायालय से हटाकर नियमित न्यायालय में खुश करने के लिए किया। परंतु इस दफा प्रधानमंत्री वाजपेयी ने अम्मा के आगे घुटने न टेकने का फैसला लिया। वे समता पार्टी जैसे विश्वसनीय सहयोगी को खोना नहीं चाहते थे। जयललिता के सरकार से हट जाने की स्थिति में करूणानिधि का समर्थन का संकेत से भी शायद वाजपेयी को बल मिला ही।

भाजपा गठबंधन सरकार का सदन में एक मत विश्वास खोना उसके प्रबंधन की कमजोरियों को भी उजागर करती है। भाजपा के भीतर वाजपेयी विरोधी आर.एस.एस. लॉबी सरकार बचाने में कोई रूचि नहीं दिखायी। उतरप्रदेश के मुख्यमंत्री कल्याण सिंह द्वारा कुछ सांसदो का जुगाड़ का भरोसा अंतिम समय में गलत साबित हुआ। बसपा तथा समाजवादी पार्टी के कुछ सांसदों को अपने पक्ष में लाने का पक्का विश्वास उन्होंने वाजपेयी को दिया था। आडवाणी लॉबी के अनेक नेता निष्क्रिय होकर सरकार गिरने का तमाशा देखते रहे। सदन में भाजपा गठबंधन की पतली हो गयी हालत को अंतिम समय में सुधारने का मदनलाल खुराना का प्रयास सफल रहा। उनके और पंजाब के मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल के संयुक्त प्रयास भाजपा सरकार से नाता तोड़ चुके ओमप्रकाश चौटाला पुनः सरकार को समर्थन देने की घोषणा की। समता पार्टी एवं लोकशक्ति के नेतागण जिन पर वाजपेयी सरकार बचाने की अहम जिम्मेदारी थी रामविलास पासवान को भी पटा नहीं पाए।

अटल जी के नेतृत्व में चली 12 महीने 18 दिन की साझा सरकार की उपलब्धियों का रिकार्ड बहुत चमकदार तो नहीं है परंतु दागदार भी नहीं कहा जा सकता। घरेलू मोर्चे पर अच्छी कामयाबी हासिल नहीं करने वाली यह सरकार पोखरण में परमाणु बम परीक्षण, कावेरी जल विवाद का हल, सीमा पर शांति बहाल तथा पाकिस्वान यात्रा की सफलता गिना सकती है। संसद के दोनो सदनों में पर्याप्त बहुमत नहीं होने के कारण सरकार के कई अहम विधेयक सदन पटल पर लाए ही नहीं जा सके सरकार देश को आर्थिक मंदी से भी उबार नहीं पायी। देश का औद्योगिक उत्पादन एवं विकास दर घटने के क्रम में है। निर्यात घटा है और आयात बढ़ा है। मंहगाई अपनी चरम सीमा पर। इसपर वाजपेयी सरकार दलील दे सकती है कि हमें सहयोगियों के नखरे बार-बार के नखरे और विपक्षियों का असहयोग फैसले में बाधा बनकर खड़ी हो जाती थी। जब उनका नियंत्रण सहयोगियों पर लगभग हो चुका था तब उनकी सरकार को मौत दे दी गयी। अटल जी का मानना था कि मुझे पांच साल चलने दिया जाय।

अब जब सरकार चली गयी तो भाजपा और उसके नेतागण पिछली गलतियों में सुधार लाने की अवश्य चेष्टा करें। उसके लक्षण अभी से देखने को मिलने लगे हैं। भाजपा निष्ठावान सायोगियों की पहचान करेगा जो कम-से-कम पांच साल तक उसके साथ बना रहे। एक साझा घोषणा पत्र के साथ चुनाव लड़ेगा जिसमें तमाम विवादास्पद मुद्दे निकाल दिए जाएगे। सभी सहयोगियों की सहमति हुई तो संभव हुआ तो साझा मंच भी बन सकता है।

अपनों से धोखा खाए मुलायम सिंह यादव

मुलायम सिंह यादव पर प्रधानमंत्री पद के लिए सहमति बन सकती थी बशर्ते कि लालू प्रसाद अपने घोषित वादे पर अमल करते। गत वर्ष लोकतांत्रिक मोर्चा के गठन के समय तथा उसके बाद के कई सम्मेलनों में लालू प्रसाद यह सार्वजनिक रूप से घोषणा करते आ रहे थे कि भविष्य में जब कभी लोकतांत्रिक मोर्चा को सरकार बनाने का मौका मिलता है तब मुलायम सिंह यादव ही प्रधानमंत्री बनेंगें। अटल सरकार के लोकसभा में पतन के बाद विकल्प के तौर पर लोकतांत्रिक मोर्चा के 37 सांसद एक स्वर से मुलायम सिंह को नेता चुनकर उन्हें प्रधानमंत्री पद के लिए उछाल सकते थे परंतु ऐन वक्त लालू प्रसाद सोनिया जाप में लग गए। वे सोनिया के अतिरिक्त किसी को भी प्रधानमंत्री की कुर्सी पर देखना नहीं चाहते थे। लालू प्रसाद के विरोधी रूख के कारण ही वामपंथी एवं अन्य छोटे दलों ने मुलायम सिंह यादव का नाम नहीं लिया।लालू प्रसाद से राजनीतिक गठबंधन करना मुलायम सिंह की एतिहासिक भूल साबित हुई। तात्कालिक फायदे के लिए राजनीति करने वाले लालू प्रसाद के लिए वादाएं और कसमें कोई मायने नहीं रखता। मुलायम सिंह यादव उस समय को भूल तो नहीं गए कि उनके दरवाजे आयी हुई सत्ता को लालू प्रसाद ने एक झटके में पीछे खींच लिया थां। देवगौड़ा सरकार के पतन के बाद लगभग तय हो चुका था कि मुलायम सिंह देश के अगले प्रधानमंत्री होंगे तो **मैं नहीं तो कोई यादव नेता नहीं की तर्ज पर मुलायम का विरोध** किया और वे प्रधानमंत्री नहीं बन सकें। शायद मुलायम का पुराना दर्द लालू के बड़बोलापन में दब गया।

प्रारंभ से लालू प्रसाद का राजनीतिक चरित्र दोगलापन से प्रेरित रहा है। उनकी इसी प्रवृति के कारण समाजवादी सरीखे लोग एक-एक कर उनका साथ छोड़ते चले गए। इनमें शरद यादव, नीतीश कुमार, रामविलास पासवान प्रमुख हैं। अतीत में इनका भरपूर सहयोग लालू प्रसाद को मिला था और उसी के बदौलत वे बिहार के मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठें। मार्च 1990 में शरद यादव ने तत्कालीन प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के समक्ष यह प्रस्ताव रखा, तो वे लालू प्रसाद को मुख्यमंत्री बनाने के लिए कतई तैयार नहीं थे। चौधरी देवीलाल ऐन मौके पर तमिलनाडू चले गए थे। तब शरद यादव केन्द्रीय मंत्रीमण्डल के सदस्य होते हुए भी लालू प्रसाद के पक्ष में आंदोलन पर उतरने की धमकी दी थी। उससे और अतीत यह बताता है कि 1988 में कर्पूरी ठाकुर के देहावसान के बाद जब समाजवादियों में नेता का अभाव खटकने लगा। कर्पूरी जी के अंतिम संस्कार के तुरंत बाद जगदानन्द सिंह के घर पर विकल्प के मुद्दे पर विचार करने के लिए कुछ प्रमुख नेता मिले थे। उसमे नीतीश कुमार का मशविरा था कि अब हमें इस आंदोलन को एक रखने के लिए लोकदल का नेता किसी यादव को बनाना चाहिए। उसके लिए उन्होंने एकमात्र लालू प्रसाद का नाम सुझाया था। शरद यादव ने उस फैसले को अमलीजामा देने के लिए केन्द्रीय नेतृत्व से बात की थी। इस घटनाक्रम की जानकारी जब लालू प्रसाद यादव को दी गयी तब उन्होंने नीतीश कुमार, मोहन प्रकाश और जगदानन्द तथा अन्य कई विधायकों की मौजूदगी में एक अजीब तरह की गैर राजनीतिक कसम खायी उन्होंने अपनी बेटी की कसम खायी कि मैं बिहार की जिम्मेदारी लूंगा ओर राष्ट्रीय राजनीति और दिल्ली में सिर्फ वहीं करूंगा, जो शरद जी कहेंगें। उसके विपरीत अपने लिए हुए कसम की परवाह न करते हुए लालू प्रसाद दो वर्ष पूर्व शरद यादव को तलवे के नीचे रौंदने की कोशिश की। वर्ष 1997 में जनता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव में विरोध में उम्मीदवार बनकर परास्त करने का प्रयत्न किया। जब बात बनती नहीं दिखी तो उन्होंने पार्टी ही तोड़ दी। लालू प्रसाद जब से राजनीति में मुखर हुए हैं तब से अजीब संस्कृति बन गयी है, राजनीति में सबकुछ जायज होने लगा है।

कम्युनिस्टों का कांग्रेसी प्रेम

वाजपेयी सरकार के पतन के तुरंत बाद देश के जिन बड़े नेताओं ने कांग्रेस के नेतृत्व में सरकार बनाने की जोरदार मुहिम चलायी उनमें कामरेड हरकिशन सिंह सुरजीत, ए.वी.वर्द्धन, ज्योति बसु एवं लालू प्रसाद प्रमुख थे। लालू प्रसाद की बेचैनी समझी जा सकती है साथ ही उन्होंने कांग्रेस का उधार चुकता किया। विदित हो कि हाल में कांग्रेस राष्ट्रपति शासन का विरोध करके बिहार की राजद सरकार को समाप्त होने से बचाया था परंतु एक स्वर से कम्युनिस्टों का यह कांग्रेसी प्रेम लम्बे अर्से बाद उमड़ा है।

वैसे भारतीय राजनीति में कांग्रेस और कम्युनिस्ट का संबंध आजादी के तुरंत बाद से ही प्रगाढ़ होने लगा था बावजूद कि कम्युनिस्टों का वैचारिक सिद्धान्त कांग्रेस के सिद्धांत को काटता था। उन्होंने कांग्रेसी संबंध की दुहाई लेकर साठ एवं सत्तर के दशक के समाजवादी आंदोलन का भी विरोध किया। इतना ही नहीं 1960 के बाद लोहिया के नेतृत्व में जब संसद में समाजवादी प्रतिपक्ष का उभार होने लगा था, तब कम्युनिस्ट उसे विकास का प्रतिगामी कहकर चिढ़ाते थे समकालीन समाजवादियों का मानना था कि कम्युनिस्ट कांग्रेस और नेहरू से भयभीत रहते थे। सत्तधारी दल का विरोध नहीं करने का उनका चरित्र बन गया था। किसी कारणवश यदि विरोध की नौबत आ भी जाती थी तो वे संबेधों का लिहाज खूब किया करते थे। साथ ही वामपंथी मिजाज किसी वृहद राजनैतिक आन्दोलन का पक्षधर कभी नहीं रहा, क्योंकि दल के अभिजात्य नेतृत्व को यह डर बराबर बना रहता था कि कहीं आम आदमी में से नेतृत्व पैदा न हो जाय। कांग्रेस से संबंध गाठने का एक प्रमुख कारण यह भी था।

फिलहाल कम्युनिस्ट (खासकर भाकपा और माकपा) दोहरे मापदंड पर चल रहे हैं। वैचारिक दृष्टि से तो समाजवादियों के नजदीक है परंतु उनके दिल में समय-समय कांग्रेसी प्रेम का ज्वार उठता रहता है। कम्युनिष्टों ने 1989, 1991, 1996, 1998 का चुनाव कांग्रेसी विरोधी अभियान के तहत लड़ा। चुनावी संविधान में कांग्रेस नम्बर वन दुश्मन थी। वहीं संसद में उनकी आलोचना का लक्ष्य सिर्फ भाजपा और आर.एस.एस. होता है। स्वदेशी के पक्षधर और विदेशी पूंजी निवेश के प्रखर विरोधी हरकिशन सिंह सुरजीत, इन्द्रजीत गुप्त, सोमनाथ चटर्जी जैसे कम्युनिस्ट के कथित धुरंधर नेता उस कड़वी सच्चाई को भी पचा गए कि कांग्रेस देश में आर्थिक उदारीकरण लाने का दोषी है।

सचमुच कम्युनिस्टों का कांग्रेसी प्रेम आमजन के समझ के परे है।

वंशवाद के विरुद्ध बिगुल

❑विनय कुमार सिन्हा

आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर कलतक सोनिया गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस द्वारा जो आत्मविश्वास का प्रदर्शन हो रहा था, दल के तीन वरिष्ठ नेताओं **शरद पवार, तारिक अनवर और पी० ए० संगमा** ने बगावत करके उसकी हवा निकाल दी। तीनो नेताओं ने सोनिया गांधी को विदेशी मूल का बताकर उसके कांग्रेस के भावी प्रधानमंत्री के दावे को निरस्त तो नहीं परन्तु शिथिल जरूर कर दिया है साथ ही उस बहस को और अधिक बल मिला जिसे भाजपा एवं सहयोगी दल वाले मतदाताओं के बीच पूर्व में ही परोस चुके हैं। शरद पवार और उनके दो साथियों ने जिस मुद्दे को उठाया है उसपर कांग्रेस और वामपंथी दलों को छोड़कर देश की तमाम छोटी-बड़ी पार्टियों के नेता सहमत हैं। सरकार बनाने में सोनिया गांधी को मदद न करके सपा नेता मुलायम सिंह यादव अपनी मंशा का पहले ही इजहार कर चुके हैं।

वैसे शरद पवार और उनके विद्रोही साथी, तारिक अनवर और पी० ए०संगमा पूर्व में दल के भीतर सोनिया गांधी द्वारा लिए गए हर फैसले का समर्थन करते आ रहे थे और लोगों को इसकी संभावना कम ही थी कि निकट भविष्य में उनका विरोध इस रूप में सामने आएगा। वहीं कांग्रेस के कई अनुभवी नेताओं का कहना है कि शरद पवार **'इंतजार करो'** की नीति पर चल रहे थे तथा बगावत के लिए विश्वस्त साथियों की तलाश में थे। तारिक अनवर और पी० ए० संगमा ने भविष्य में लाभ-हानि का ख्याल किए बिना शरद पवार का साथ दिया। तारिक अनवर अपने राजनीतिक गुरु **सीताराम केसरी** के अपमान का दर्द लेकर घूम रहे थे तथा पी०ए० संगमा को सोनिया दरबार में लगातार उपेक्षा हो रही थी। अप्रत्यक्ष रूप से पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष सीताराम केसरी का सहयोग भी विद्रोही नेताओं को था। चुनाचे 20 मई को विद्रोही नेताओं के निष्कासन पर विचार के लिए बुलायी गयी कार्यसमिति की बैठक में **'केसरी'** को सोनिया समर्थकों द्वारा भारी उलाहना सहना पड़ा।

गत लोकसभा चुनाव के पूर्व नाटकीय ढंग से सोनिया गांधी का कांग्रेस की राजनीति में प्रवेश तथा फिर अध्यक्ष और पुन: नेता पद हथियाना पवार सरीखे जनाधार वाले नेताओं को खटक रहा था। सोनिया का अध्यक्ष पद हथियाने का ढंग कांग्रेस संस्कृति पर कलंक लगा। पद पर पहुंचते ही सोनिया गांधी ने पार्टी की सारी राजनीति स्वयं में केन्द्रित कर दी और अपने पति पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी और सास इंदिरा गांधी के नक्शे कदम पर चलते हुए एक-एक कर जनाधार वाले नेताओं को किनारे कर दी। सोनिया के दरबार में चाटुकारों की मान-प्रतिष्ठा बढ़ गयी। ऐसे ही चाटुकारों से कांग्रेस का भविष्य तय हो रहा था।

शरद पवार के इस बगावत के पीछे कांग्रेस में वर्षों से पल रहे वंशवाद को भी खारिज करना है कि जिसे कांग्रेस की चाटुकार संस्कृति अबतक बचाए हुए है। सोनिया का विदेशी मूल का प्रसंग बगावत का सूत्र मात्र है। जहां तक श्री पवार की बात है। कांग्रेस में सबसे अधिक जनाधार वाले नेता रहे है। राजनीति प्रबंधन में माहिर श्री पवार की महत्वाकांक्षा उन्हें चैन से बैठने नहीं देता। इससे पूर्व भी उन्हें वर्ष 1978-79 में इंदिरा गांधी से खींचतान

होने के कारण कांग्रेस से निकाला जा चुका है। तब उन्होंने 1986 तक महाराष्ट्र में प्रगतिशील लोकतांत्रिक मोर्चा के बैनर तले विपक्ष की राजनीति की। उसी अंतराल में वे मिली-जुली सरकार के मुख्यमंत्री भी बने। श्री पवार के नेतृत्व वाली इसी मिली-जुली सरकार में तत्कालीन जनसंघ भी शामिल था। वर्ष 1986 में महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री शंकर राव चौहान की पहल पर शरद पवार पुन: कांग्रेस में शमिल हो गए। मात्र 39 वर्ष की उम्र में पहली बार मुंख्यमंत्री बने शरद पवार की महत्वाकांक्षा प्रधानमंत्री की कुर्सी तक पहुंचने की रही है। वे सदैव गांधी परिवार को अपना बाधा मानते रहे हैं। राजीव गांधी की मृत्यु के बाद 1991 में बहुमत के करीब आए कांग्रेस के नेता पद की दौड़ में श्री पवार भी शामिल थे। परन्तु राजीव के अत्यंत निकट रहे और राजनीति में अधिक तजुर्बेकार माने जाने वाले नरसिंम्हाराव को कांग्रेस ने तत्कालीन प्रधानमंत्री के रूप में चुना। तब सोनिया गांधी ने भी नरसिंहाराव के नाम पर ही सहमति दी थी। नरसिंहाराव के प्रधानमंत्रीत्व काल में श्री पवार रक्षा मंत्री का दायित्व संभाल कर पहली बार घोषित रूप से राष्ट्रीय राजनीति में आए। परंतु उनका श्री राव से वैचारिक मतभेद बना रहा। श्री पवार एक व्यक्ति एक पद का मुद्दा उठाकर श्री राव को अध्यक्ष पद त्यागने के लिए असफल प्रयास करते रहे थे। जून 1997 में शरद पवार ने अधयक्ष पद के लिए बुजुर्ग सीताराम केसरी के विरूद्ध चुनावी दंगल में उतरे परंतु उन्हें मुंह की खानी पड़ी। इस बार श्री पवार ने अधिक विश्वास के साथ पासा फेंका है, देखना है चित होती है या पट।

बहरहाल तीनों नेताओं को कांग्रेस कार्यसमिति ने बहुमत के साथ दल से निष्कासित कर दिया है। उधर सोनिया गांधी कांग्रेस अध्यक्ष पद से त्याग-पत्र का नाटक खेलकर पुन: अध्यक्ष पद पर विराजमान हैं। आज तक विपक्षियों के आरोपों का काई संतोषजनक उत्तर वे नहीं दे पाई हैं। जहां तक कांग्रेस की भावी राजनीति का सवाल है यह निश्चित है कि इस झटके का असर आगामी चुनाव में स्पष्ट देखा जाएगा। दल से निष्कासित तीनों ही नेता अपने-अपने राज्यों में दमदार है। शरद पवार महाराष्ट्र के 80 फीसदी कांग्रेस मत पर असरदार है। तारिक अनवर बिहार में कांग्रेस के एक प्रभावी गुट का प्रतिनिधित्व करते हैं। वहीं पी०ए०संगमा पूर्वोतर राज्यों में कांग्रेस के एक प्रभावशाली नेता के रूप में उभरे हैं। अब भी कांग्रेस में कई ऐसे जनाधार वाले नेता बच गए हैं जो सोनिया गांधी को नेता के रूप में पसंद नहीं करते हैं। उनमें **राजेश पायलट, ए०के०एंटोनी, शंकर राव चौहान, जितेन्द्र प्रसाद तथा दिग्विजय सिंह** का नाम प्रमुख रूप से सामने आता है। फिलहाल विद्रोह के बाद सारी राजनीति शरद पवार पर ही टिकी है। महाराष्ट्र में उनके सामने कांग्रेस बौनी नजर आ रही है। बाकी राज्यों में उन्हें विभिन्न दलों से सहयोग करना है। महाराष्ट्र की राजनीति पवार विरोधी पुराने नेताओं शंकर राव चहवान, ए० आर० अंतुले और गुलाम नबी आजाद की जनता के बीच जनाधार लगभग समाप्त हो गया है। महाराष्ट्र की राजनीति में **नए-नए उभरे पिछड़ों के दबंग नेता छगन भुजबल** का पूर्ण सहयोग पवार को है। श्री मुजबल शरद पवार की प्रेरणा से ही गत वर्ष कुल 17 विधायकों के साथ कांग्रेस में शामिल हुए थे। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री तथा श्री पवार के एक समय के कट्टर विरोधी **श्री सुधाकर राव नाईक** तहे दिल से श्री पवार के खेमे आ गए हैं। मराठों के बीच वे सबसे लोकप्रिय नेता हैं। मुस्लिम मतों को अपनी ओर खींचने के लिए वे महाराष्ट्र और उत्तरप्रदेश में समाजवादी पार्टी से समझौता करेगें। वैसे श्री पवार वर्ष 1995 में बाबरी मस्जिद के मामले में उत्तरप्रदेश के मुसलमानों से सार्वजनिक सभा में माफी की मांग चुके हैं। श्री पवार समाजवादी पार्टी के अलावे राष्ट्रीय स्तर पर तृणमूल कांग्रेस लोकशक्ति, जनता दल और समता पार्टी आदि से चुनावी तालमेल करने के लिए प्रयासरत है। ऐसा प्रतीत होता है कि कांग्रेस से निष्कासित तीनों नेताओं के द्वारा गठित **राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी** छोटे-बड़े अन्य दलों के सहयोग से तीसरी शक्ति कायम कारने में सफल हो सकती है।

बोफोर्स पर राष्ट्रपति की कलम चली

राष्ट्रपति के०आर०नारायणन ने सरकार की सिफारिश पर बोफोर्स तोप सौदे की दलाली के मामले में **पूर्व विदेशमंत्री माधव सिंह सोलंकी** पर मुकदमा चलाने की अनुमति प्रदान कर दी है। इसके कुछ दिनों पूर्व ही केन्द्र सरकार ने पूर्व रक्षा सचिव एस०के०भटनागर पर मुकदमा चलाने की अनुमति दी थी। विदित हो कि उन पर भी स्वीडेन की कम्पनी एबी०बोफोर्स के साथ हुए 1436 करोड़ रुपये के ओवित्जर तोप सौदे में दलाली के मामले में संलिप्त होने का आरोप है। स्मरणीय है कि राजीव गांधी के प्रधानमंत्रीत्व काल में 1986 में बोफोर्स तोप की खरीद के संबंध में समझौता हुआ था। संभवत: यही कारण है कि उनकी विधवा पत्नी सोनिया भी डरी-डरी सी लगती हैं। क्योंकि इस मामले में आरोपित पांच अभियुक्तों में इटली के उनके निकट संबंधी **अताविया क्वात्रोची** एवं उनकी पत्नी **मारिया, विन चड्ढा** तथा उसकी दिवंगत पत्नी **कान्ता** एवं पुत्र **हर्ष** भी नामजद हैं। श्री सोलंकी ने 1992 में दावोस में स्विटजरलैंड के विदेशमंत्री को एक पत्र लिखकर 64 करोड़ की कथित दलाली के मामले में जांच रुकवाने का काम किया था। वाजपेयी सरकार को गिराने में सोनिया गांधी की दिलचस्पी कहीं इसी कारण तो नहीं?

लेखा परीक्षा में आमूल चूल परिवर्तन की जरूरत

-अटल

सार्वजनिक व्यय को अधिक प्रभावकारी बनाने के लिए लोक-लेखा परीक्षण में आमूल चूल परिवर्तन की जरूरत है। हिसाब-किताब की संकीर्ण धारणा के कारण सरकार में व्यय प्रबंधन को काफी धक्का लगा है। इसलिए लेखा परीक्षा को ऐसा होना चाहिए जिससे उत्पादकता बढ़े।

7 अप्रैल को दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित महालेखाकारों के 20 वें सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ये विचार भारत के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने व्यक्त किए। श्री वाजपेयी ने सभी मंत्रालयों में पारदर्शिता और जिम्मेदारी के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता दुहराते हुए कहा कि हमें यह सुनिश्चित करना है कि सरकारी लेखा परीक्षक जो भी सूचनायें मांगे वे उसे शीघ्र ही मिल जाना चाहिए। उदारीकरण के इस युग में लेखा परीक्षा के नियमों में भी परिवर्तन लाना होगा। भारत के **वित्तमंत्री श्री यशवंत सिन्हा** ने सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि पर्याप्त कानून नहीं होने के कारण ऑडिट के जरिये अधिक सतर्कता और चौकसी रहना कठिन हो जाता है।

ले डूबी तीन देवियां वाजपेयी सरकार को

वैसे और कारण चाहे जो हों किन्तु केन्द्र में वाजपेयी सरकार को गिराने में कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी, अन्नाद्रमुक सुप्रीमो सुश्री जयललिता, तथा बसपा की सुश्री मायावती इन तीन देवियों के हाथ रहे हैं।

सच कहा जाय तो **जयललिता के स्वभाव की हालत शिमला की मौसम की तरह है, न जाने कब बरस जाय।** यों तो प्रारंभ से ही अम्माजी वाजपेयी सरकार को हल्के-हल्के झटके देती रही है। किन्तु जब उनका स्वार्थ सिद्ध होता नहीं दिखायी दिया तो एक झटके में सरकार गिरा दिया। डॉ०सुब्रह्मण्यम स्वामी के हाथों खेल रही जयललिता का व्यवहार न केवल गैर जिम्मेदाराना रहा बल्कि सरकार को ब्लैकमेल करने की उनकी प्रवृति पराकाष्ठा तक पहूंच गयी। उनकी आये दिन की मांगें गले के ऊपर चढ़ने लगा तो वाजपेयी जी ने जयललिता का दामन छोड़ना ही उचित समझा।

कांग्रेस अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गांधी येन-केन-प्रकारेन भारत की प्रधानमंत्री बनना चाहती थी। मस्जिद गिराने के वक्त चुप्पी साधने वाली कांग्रेस पार्टी वाजपेयी जी पर साम्प्रदायिकता की आरोप लगा बैठी।

पिछले दिनों लोकसभा में विश्वासमत के दौरान न केवल भारतीय मतदाता के सामने बल्कि सारी दुनिया के समक्ष विश्वासमत पर अलग रहने की बात जिस **मायावती** ने कही थी उसी मायावती ने लोकतंत्र के मजबूत स्तंभ लोकसभा की आंखों में धूल झोंक दिया और बड़े इत्मीनान से उत्तरप्रदेश का बदला लेने की बात कह डाली। यही है आज के जनता के प्रतिनिधियों का घिनौना रूप।

विपक्ष के दबाव में राष्ट्रपति ने विश्वासमत प्राप्त करने को कहा

एक सवाल के जबाव में प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने कहा कि राष्ट्रपति ने विपक्ष के दबाव में आकर उनसे लोकसभा में विश्वास मत हासिल करने को कहा विपक्षी नेताओं ने राष्ट्रपति से कहा कि अगर उन्होंने वाजपेयी सरकार को विश्वास मत लाने के लिए नहीं कहा तो अगले सत्र में लोकसभा नहीं चलने देंगे और बजट पास नहीं हो सकेगा। इसे लेकर राष्ट्रपति को चिन्ता हो गई कि बजट पास नहीं हुआ तो बड़ा भारी संकट खड़ा हो जाएगा।

सच तो यह है कि न तो बजट पास न होने की चिन्ता है और न एक वोट से सरकार गिर जाने का दु:ख। चिन्ता इस बात से है कि देश की राजनीति पूरी तरह नकारात्मक और निषेधात्मक हो गयी है। श्री वाजपेयी ने कहा कि यदि इसका अंदाजा होता कि एक वोट के अन्तर से यह सब होने वाला है तो लोकसभा अध्यक्ष से इस्तीफा दिलवाकर कह देते कि आज हमारे साथ बैठकर वोट दीजिए। इसी प्रकार उड़ीसा के मुख्यमंत्री के वोट डालने के सवाल पर पक्ष के लोग अड़ जाते तो मामला कुछ और होता। दरअसल सरकार को एक वोट से हारने का अन्दाजा ही नहीं था अन्यथा आज के इस चुनावी संकट से देश को नहीं गुजरना पड़ता।

रा०वि० संवाददाता

महात्मा फूले एवं भ्रातृत्व उत्सव सम्पन्न

कोटद्वार, उ०प्र० सैनी/कुशवाहा महासभा, 36-ए दारूनसफा लखनऊ की पौड़ी जिला इकाई द्वारा महात्मा फूले की 172वीं जयन्ती तथा भ्रातृत्व मिलन समारोह धूमधाम के साथ मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि उ०प्र०कुशवाहा महासभा के प्रदेशाध्यक्ष जे.डी.कौशल सैनी (सहारनपुर) थें विशिष्ट अतिथियों में प्रमुखत: दिल्ली कुशवाहा /सैनी महासभा के महामंत्री सुरेन्द्र कुशवाहा, प्रेस सचिव सोबरन सिंह कुशवाहा, युवा पत्रकार देवेन्द्र कुमार सैनी हरदोई(उ०प्र०)से आर०सी० वर्मा थे। साहित्यकार-समाजसेवी प्रतिनिधि के रूप में उत्तराखंड के जनपदों से लोग भागीदार थे।

समारोह का बेहद प्रभावशाली संचालन अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वक्ता तथा कुशप्रभा, दिल्ली (मासिक) के सम्पादक **सुरेन्द्र कुशवाहा** ने किया। समारोह का उद्घाटन तथा महात्मा ज्योतिबा फूले की प्रतिमा पर माल्यार्पण प्रदेशाध्यक्ष जे०डी०कौशल सैनी ने किया। समारोह की अध्यक्षता ठेके० रामसिंह सैनी ने की। देवेन्द्र सैनी(पत्रकार), आर.सी.वर्मा, सुरेन्द्र सैनी (प्रचारमंत्री), महेन्द्र सैनी (कोषाध्यक्ष)एवं नरेन्द्र सैनी (आढ़ती) ने सभा को संबोधित किया। इन लोंगों ने महात्मा फूले के जीवन दर्शन से लोगों को परिचय कराया। अतिथियों तथा सभापति को शाल तथा पुष्प भेंट कर सम्मानित किया गया। अन्त में भूकम्प प्रभावित क्षेत्र उत्तराखंड के लोगों के प्रति संवेदना तथा मृत लोगों के प्रति श्रद्धांजलि दी गई।

सोनिया-उदय के पीछे राष्ट्रीय चेतना की कमी

एक पत्रिका को दिए गए साक्षात्कार में यह पूछे जाने पर कि आजादी की स्वर्ण जयंती मना चुके देश के प्रधानमंत्री पद के निकट तक एक विदेशी मूल के व्यक्ति का पहुंचना क्या बताता है, भारत के प्रधानमंत्री श्री अटल विहारी वाजपेयी ने कहा कि निकट क्या- लगभग बना ही दिया गया था। यह देश ऐसा ही है। उन्होंने इस स्थिति का मूल कारण राष्ट्रीय चेतना की कमी बताया और इसका दोषी राजनेताओं को बताया। उन्होंने कहा कि विदेशी मूल के व्यक्ति होने के अलावा भी पूछा जाना चाहिए था कि उनका अनुभव क्या है? और संसद में तथा बाहर राजनीति क्षेत्र में उनका योगदान क्या है? सिर्फ एक परिवार की सदस्य मात्र हैं। यह तो परिवारवाद चल रहा है इस सीमा तक परिवारवाद का पोषण इस बात का सबूत है कि देश में राष्ट्रीय चेतना जितनी ज्वलंत होनी चाहिए थी नहीं हुई। श्री वाजपेयी ने देश को भुलाकर आपस में ही लड़ते रहने की भारतीय समाज की मानसिकता पर टिप्पणी करते हुए कहा कि यह आठ सौ साल की

गुलामी का परिणाम है। अपनों से ही आघात मिलते रहने के बारे में श्री वाजपेयी ने अपने मन की वेदना इस स्वरचित काव्य पंक्तियों में व्यक्त की -

आहुति बाकी, यज्ञ अधूरा,
अपनों के विघ्नों ने घेरा,
अंतिम जय का बज्र बनाने
नव दधीचि हड्डियां गलाएं
आओ फिर से दिया जलाएं।

रा० वि० संवाददाता

गोवा में कांग्रेस को स्पष्ट बहुमत मिला

श्री फ्लेरियो गोवा के अगले मुख्यमंत्री

कांग्रेस ने चालीस सदस्यीय गोवा विधान सभा के चुनाव में 21 सीटें जीत कर स्पष्ट बहुमत हासिल कर लिया। और इसके साथ ही इस राज्य में स्थायी सरकार बनाने का मार्ग प्रशस्त हो गया जहां पिछले दस साल में दस सरकारें बनी थी। कांग्रेस के विजयी उम्मीदवारों ने पूर्व मुख्यमंत्री **रवि नाइक, फ्लेरियों और चर्चिल अलेमाओ** शामिल है कांग्रेस के एक उम्मीदवार अलेक्सियो सेक्वियरा पहले ही 20 मई को लोटालियन से निर्बिरोध निर्वाचित हुए हैं।

एमजीपी के चुनाव जीतने वालों में पूर्व केन्द्रीय कानून मंत्री रमाकान्त खलप शामिल है।

काग्रेस- 21, भाजपा- 10, एमजीपी- 4, यूजीडीपी-2, जीआरसी-2, निर्दलीय-1

जैसिका हत्याकांड से जुड़े कई सवाल

जैसे-जैसे जैसिका लाल हत्या कांड के रहस्य का पर्दा उठ रहा है। दिल्ली के तथाकथित संभ्रांत जिम्मेदार और बड़े घराने की रंगीन हरकतों का काफी खुलासा हो रहा है। और तो और खुद मरहूमा जैसिका एक संभ्रांत परिवार के होने के बावजूद अंगप्रदर्शन के साथ शराब परोसने वाली एक गुड़िया का जीवन अपनाने को क्यों विवश हुई यह भी एक सवाल है। जैसा कि समाचार से जाहिर है। जैसिका जगजाहिर कुख्यात माफिया डॉन रोमेश शर्मा के सानिध्य में तो थी ही हत्या स्थल **कुतुब टेमेरिंड कोर्ट रेस्तरां की मालकिन बीना रब्बानी** तो चंद्रास्वामी से लेकर **अदनान खशोगी** और **रोमेश शर्मा** की खास चहेती थी।

इतना तो स्पष्ट है कि दिल्ली के बड़े-बड़े राजनेताओं, अधिकारियों, व्यवसाईयों और पुलिस की मिली भगत से चलने वाले अवैध धंधों और उनकी आड में फलते-फूलते देह व्यापार की एक से बढ़कर एक चौकाने वाली कार गुजारियों देश की राजधानी में चल रही है। विनोद शर्मा, डी०पी०यादव जैसे लोग जनता के प्रतिनिधि बनने को आतुर अपने बेटों को खुलेआम अयूबाशी और अवारागर्दी करने से नहीं रोक पा रहें हैं। श्री डी०पी०यादव का बेटा विकास यादव भी इस कांड में फंसा है इससे जुडे सवालो में एक सवाल यह भी है कि मॉडलिंग की चकाचौंध में कैरियर बनाने की आकांक्षा रखने वाली लड़कियों तथा उनके माता-पिता की सांस्कृतिक गिरावट भी इस घटना से उजागर हो रही है।

सोनिया के विदेशी मूल को लेकर कांग्रेस में दो फांक

कांग्रेस अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गांधी के विदेशी मूल को लेकर शरद पवार संगमा तथा तारिक अनवर की बगावत ने कांग्रेस का रहा सहा सपना भी चकनाचूर कर दिया है क्योंकि इन तीनों के कांग्रेस से निष्कासन से सोनिया की प्रधानमंत्री बनने की आकांक्षा अब मिट्टी में मिल चुकी है। रा०वि०पत्रिका के अंक-3 में **''सोनिया का कांग्रेस में बढ़ता शिकंजा''** शीर्षक में कहा जा चुका था कि शरद पवार को राजनीति के केन्द्र बिन्दु से अलग करने की कोशिश कांग्रेस के लिए मंहगी पड़ेगी। यह भी कहा गया था कि पवार इतनी जल्दी अपनी हार नहीं मान लेंगे। कभी कभी वे पलट वार करेंगे। सो रा०वि०पत्रिका का यह आकलन सच निकला और वह भी मात्र एक-दो माह के अन्तराल में ही।

मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के हाथों राष्ट्रीय ध्वज का अपमान

दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के 62 वें जन्मदिन पर जो केक काटा गया, उस पर राष्ट्रीय ध्वज बना था। मुख्यमंत्री ने इस आरोप का खंडन करके मामले को समाप्त कर दिया है लेकिन इस तरह की घटनाओं को रोका जाना चाहिए जिनसे हमारे राष्ट्रीय प्रतीकों का अपमान होता है। भारत में राष्ट्रीय ध्वज के कपड़े बनाकर पहनना या उसका अपमानजनक ढंग से प्रयोग करना अपराध माना जाता है, भले ही अमेरिका जैसे देशों में वहां के झंडे का लोग तरह-तरह से प्रयोग करते हों लेकिन हमारे देश में इसे राष्ट्र विरोधी गतिविधि के रूप में देखा जाता है। केक पर राष्ट्रीय ध्वज के मामले पर दिल्ली विधानसभा में काफी हल्ला हुआ। भाजपा के सदस्य हरशरण सिंह बल्ली को सदन से एक दिन के लिए निष्कासित भी किया गया। इस मामले पर विपक्ष ने बहिंर्गमन भी किया। सदन में भारी हो हल्ले के बाद मुख्यमंत्री ने इस आरोप को निराधार बताया कि उन्होंने राष्ट्रीय ध्वज का अपमान किया है।

रा०वि०संवाददाता, नई दिल्ली

'राजग 'नया गठबंधन-कितना नया

भाजपा-समता के सहयोगी दलों ने आगामी pqlo dsiwZ**राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन'** नाम से एक नया गठबंधन बनाया है। इसमें नयापन यही है कि तमिलनाडू में जयललिता की अन्नाद्रमुक के बदले करूणानिधि की द्रमुक पार्टी का सहयोग मिला है। रातोंरात भाजपा को गैर साम्प्रदायिक होने का प्रमाण-पत्र करूणानिधि से मिल गया है। संभवत: करूणानिधि का यह कदम इस सिद्धांत पर आधारित है कि **'मुंदहूं आंख कतहूं कुछ नाहीं'**। हलांकि यह सच है कि सत्ता प्राप्ति के पश्चात् भाजपा ने कथित रूप से मस्जिद निर्माण, धारा 370 को हटाने तथा समान नागरिक संहिता लागू नहीं करने की बात कर उसने साम्प्रदायिक मुद्दों से किनारा जरूर कर रखा था पर व्यवहार के स्तर पर उसकी वह छवि बनी रही। यह गुजरात, उड़ीसा तथा अन्य स्थलों पर पिछले दिनों इसाईयों पर हो रहे हमले को यादकर लेना काफी होगा जिसमें दोषी को सजा देने की बात तो दूरी रही, किसी को पकड़ा तक नहीं जा सका। हां, इतना जरूर है कि साम्प्रदायिक मुद्दे उठाने से उसने परहेज किया जो उसकी मजबूरी थी क्योंकि उन्हें पता था कि समता जैसे सहयोगी दल उसके साम्प्रदायिक एजेंडे को लागू करने में उसका साथ नहीं देंगे। शायद भाजपा यह अच्छी तरह समझ चुकी है कि साम्प्रदायिकता के घोड़े पर सवार होकर वह लम्बा सफर तय नहीं कर सकती। पर यह समय बताएगा कि नया गठबंधन कितनी दूर तक चल सकता है।

सियाचीन के बाद अब कारगिल

रा०वि०प्रतिनिधि

सियाचीन में नाकामी हासिल होने के बाद पाकिस्तान भाड़े घुसपैठियों की मदद से भारत के लिए सामरिक महत्व वाला क्षेत्र कारगिल पर अपना नियंत्रण जमाना चाहता है। मई के दूसरे सप्ताह से अचानक प्रतिरक्षा विभाग द्वारा कारगिल में पाकिस्तानी घुसपैठियों का अधिक मात्रा में प्रवेश की खबर एवं प्रचंड कारवाई एकबारगी सबको हतप्रभ कर दिया। वैसे कई वर्षों से सीमा पर हो रही गोलीबारी एक नियम सा बन गया हैं परंतु 1947 की बाद यह पहली घटना है जब पाकिस्तानी घुसपैठिए चुपके से भारतीय क्षेत्र कारगील में 80 से 100 किलोमीटर तक लांघ गये। वह भी अत्याधुनिक लड़ाकू हथियारों से लैस। पाकिस्तान समर्थित ये घुसपैठिए अंतर्राष्ट्रीय सीमा को पार कर भारतीय क्षेत्र में 16,000 से 18,000 फुट ऊंची पहाड़ियों पर अपना ठिकाना बनाया। वे उस ऊंचाई पर से भारतीय सेना को आसानी से निशाना बना सकते थे। उन ऊंची पहाड़ियों पर जमीन पर से वार करना एक दुर्बोध कार्य है। हवाई हमले द्वारा बमों से ही उनके निश्चित ठिकानो पर हमला किया जा किता है। रक्षा विशेषज्ञों के अनुसार घुसपैठिए अपने ठिकानों पर से अगर एक बार फायरिंग करते हैं तो उसके जवान में भारतीय सेना को तीन बार फायरिंग करना पड़ता है।

भारतीय सेना घुसपैठिए को नियंत्रण रेखा से बाहर भगाने के लिए जब अपना **'ऑपरेशन विजय'** की शुरूआत किया तो पाकिस्तानी सेना घुसपैठिए की मदद के लिए खुलकर सामने आ गयी तथा दूसरा पायलट **फ्लाइट लेफ्टिनेंट नचिकेता** को पाकिस्तानी सेना ने बंदी बना लिया। भारत के 50 से अधिक जवान शहीद हुए। जबकि 14 दिनों तक चले 1971 के भारत-पाकिस्तान के युद्ध में कुल 83 भारतीय जवान शहीद हुए थे।

गौरतलब है कि दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों के बीच जब भी महत्वपूर्ण समझौता हुआ पाकिस्तान ने उग्रवादी बखेड़े खड़ा किया है। ताशकंद के शिमला समझौते के बाद अब लाहौर घोषणा-पत्र। दुनिया भर के ब्यूरो सूत्रों के अनुसार तीन महीने पूर्व जब लाहौर में अटल और शरीफ में मिलनसारी भरी बातचीत हो रही थी तो उधर पाकिस्तानी सेना कारगिल में घुसपैठ की योजना बना रही थी। इससे पूर्व ही वह तकरीबन 5000 घुसपैठियों को पूर्ण प्रशिक्षण दे चुका था। इस योजना की गंध भारतीय खुफिया विभाग को नहीं लगी। सियाचीन में भारतीय सर सेना की कड़ी पहरेदारी और काश्मीर की सीमा के अन्य क्षेत्रों पर भारतीय लटकार की शख्त निगरानी की स्थिति में कारगिल ही वह क्षेत्र बचा था जिसमें पाकिस्तानी प्रशिक्षित उग्रवादी आसानी से प्रवेश पा सकते थे। पाकिस्तानी सरकार की उक्त परोक्ष कारवाई के पीछे चीन सरकार को खुश करना भी था। अगर पाकिस्तानी सेना कारगिल पर अपना नियंत्रण प्राप्त कर लेता है तो चीन का भारी हित सधेगा। चीन की योजना वहां अपना अंतर्राष्ट्रीय नियंत्रण केन्द्र बनाने की है। यहां से वह पूरे दक्षिण एशिया को अपनी निगरानी में रख सकता है। चीन को इस प्रकार को केन्द्र स्थापित करने की अनुभूति पाकिस्तान पहले ही दे चुका है। परंतु वह चीन के छोटा पड़ रहा है। तथा उसका दक्षिण एशिया पर आज तक नियंत्रण साधने में काफी दिक्कत आ रही है। उधर अमेरिका को इस क्षेत्र को लेकर लोभ सालता रहो है। अमरीका तो पाकिस्तान सेना की एकतरफा कारवाई पर अपना विरोध प्रकट किया है परंतु चीन की चुप्पी भारत को संदेह का पुख्ता करता है।

यह अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं है कि पाकिस्तानी घुसपैठिए कारगिल में छिट-पुट बसे काश्मीरी निवासियों की मदद से ही घुसे । इसके पीछे उनका भारी प्रलोभन भी हो सकता है। जब पाकिस्तानी गड़ेरिए के भेष में सीमा के भीतर प्रवेश करते हैं तो भारतीय सेना को उसकी पहचान करना मुश्किल हो जाता है। चुंकि वहां के मूल निवासी मुसलमान हैं इसलिए घुसपैठिए को प्रवेश सुगम हो जाता है। सियाचीन और कारगिल के बीच वाले क्षेत्र लद्दाख में पाकिस्तानी उग्रवादियों को चोरी-छिपे प्रवेश इसलिए मुश्किल हो जाता है कि वहां की पचहत्तर फीसदी आबादी बौद्धों की है।

बहरहाल भारतीय सेना की जवाबी कारवाई से पाकिस्तानी घुसपैठिए भविष्य के लिए सबक लेंगे या नहीं यह अलग बात है वहीं भारतीय सरकार की राजनीति भी कारगर नहीं हो पा रही है। रक्षामंत्री और फिर प्रधानमंत्री का यह बयान कि घुसपैठिए अगर कब्जे वाले क्षेत्र छोड़ना चाहे तो उनके लिए बाधारहित रास्ता दिया जा किता है। इसके पीछे चाहे जो भी कारण रहा हो यह बयान एक तरह घुसपैठियों से संधि करने जैसा है। साथ ही यह देश के करोड़ों नागरिकों को निराश करना है तथा सेना के मनोबल को तोड़ना है। जबकि ये घुसपैठिए अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार गंभीर अपराधी है जिसे यूं ही छोड़ा नहीं जा सकता है।

बिहार कर्मचारियों को नए वेतनमान और महंगाई भत्ता

बिहार सरकार ने 70 पदों के कर्मचारियों को जनवरी 96 से नए केन्द्रीय वेतनमान देने पर सहमत हो गयी हैं। सरकार ने फिटमेंट कमेटी की अपनी अनुशंसा पर पुनर्विचार करने का अनुरोध किया था, लेकिन फिटमेंट कमेटी अपनी पिछली स्टैंड पर कायम रहते हुए सरकार की पहल को ठुकरा दिया जिसके परिणामस्वरूप एकीकरण से प्रभावित 70 कोटि के कर्मियों को केन्द्रीय वेतनमान की स्वीकृति में वेतन निर्धारण, कालबद्ध व प्रवर कोटि प्रोन्नति आदि के प्रसंग में वही निर्णय प्रभावकारी होगा जिसका निरूपण वित्त विभाग ने 8 फरवरी, 99 को अपने संकल्प में किया है।

इसी प्रकार बिहार सरकार ने अपने कर्मचारियों को नए वेतनमान पर जनवरी, 99 से 10 प्रतिशत अतिरिक्त मंहगाई भत्ता देने का निर्णय लिया है। जिन कर्मचारियों ने नए वेतनमान को स्वीकार नहीं किया है, उन्हें इस किस्त का ढाई गुना महंगाई भत्ता पुराने वेतनमान पर मिलेगा। अब नए केन्द्रीय वेतनमान प्राप्त करने वाले राज्यकर्मियों को केन्द्रीय पैटर्न पर मूल वेतन का 32 प्रतिशत महंगाई भत्ता मिलेगा। सरकार ने अपने पेंशनधारियों को भी जनवरी, 99 से 1750 रुपये मासिक पेंशन पाने वाले को अब 228 प्रतिशत, 3 हजार रुपये तक पेंशन पानेवाले को 171 प्रतिशत तथा 3 हजार रुपये से अधिक पेंशन पानेवाले को अधिकत्तम 148 प्रतिशत महंगाई राहत मिलेगा।

इस फैसले से सरकार के ऊपर प्रतिवर्ष 335 करोड़ 73 लाख रुपये अतिरिक्त बोझ पड़ेगा।

वेतन विसंगति निवारण समिति गठित

न्यायाधीश की अध्यक्षता में

बिहार मंत्रिपरिषद् ने फिटमेंट कमिटि की अनुशंसा पर लागू केन्द्रीय वेतनमान में उत्पन्न विसंगतियों के निवारण के लिए उच्च न्यायालय के कार्यरत न्यायधीश की अध्यक्षता में एक समिति गठित करने का निर्णय लिया है।जिसमें दो अन्य सदस्य शामिल होंगे।समिति गठन की तिथि से एक माह के अंदर प्राप्त आपतियों पर ही विचार होगा। समिति अधिकतम छः माह के भीतर अपना प्रतिवेदन देगी।

रा०वि०संवाददाता, पटना

इंसान कब आयेगा?

❑प्रदीप गौतम 'सुमन'

रोकने हिंसा
मिटाने उन्माद
मानव की पीड़ा समझने
इंसान कब आयेगा?
सूरत बदलने
महल से निकल के
कदम दर कदम चल के
इंसान कब आयेगा ?
रोते हैं कुछ तो
चीखते हैं कुछ
अपनों की अपनी सुनने
इंसान कब आयेगा ?
थक के है सोया
श्रम का चितेरा
खुशबू का झोंका
इंसान कब लायेगा ?

संपर्क:- आजाद नगर रीवा (म०प्र०)

नई सुबह

❑शत्रुघ्न प्रसाद

बहुतेरे जन ने
युगों से
अपने सीस को
झुकाने की कवायद की
झुके हुए सर के मटमैले बालों ने
राजपथ को बुहारा
कुछ लोग
अहंस्फीत होकर
इस राजपथ पर चलते रहे।
काल ने करवट ली
सूरज की नई उपमा
पवन का नूतन स्पर्श
धरती का वात्सल्य पा
झुका हुआ सर
उठने लगा है
अपने अस्तित्व को
अहसास ने लगा है।
बेठन में बन्द
अद्वैत समता दर्शन
बेढन से बाहर निकल
दबे हुओं को
हृदय से लगाने लगा है।
शम्बूक की तपस्या
सफल हो गयी
नयी सुबह की लाली
उसके चेहरे पर छा गयी।

संपर्क-त्रिपाठी भवन, पटना-16

मेरी अभिलाषा

❑राम सनेही वर्मा

राष्ट्र में नवचेतना की क्रान्ति लाना चाहता हूं।
नव सृजन नव प्रगति का आलोक भरना चाहता हूं।।
कर्मयोगी हों सभी निष्क्रिय न होवे हाथ कोई।
बनें सभी विकाशोन्मुख जागरित हो शक्तियाँ ई।।
इस सदी के अंत तक हम साक्षर भारत बना दें।
शोषितों, पिछड़ों के जीवन में प्रगति की ज्योति भर दें।।
विषमता की लक्ष्मण रेखा मिटाना चाहता हूं।
राष्ट्र में नव चेतना की क्रान्ति लाना चाहता हूं।।
विकास में व्यक्तित्व के, बाधक न होवें बिवशतायें।
आपसी सौहार्द्र की, विकसित बनें हर बीथिकायें।।
मनुजता हो धर्म सबका राष्ट्र हित की भावना हो।
स्वार्थपरता से परे परमार्थ की हित साधना हो।।
एकता समता की सुर सरिता बहाना चाहता हूं।
राष्ट्र में नव चेतना की क्रान्ति लाना चाहता हूं ।।
लूट, हत्या, अपहरण, बम धमाकों की हो न घटना।
शांतिमय वातावरण में बढ़े आगे राष्ट्र अपना।।
प्रशासन की नीति में, हों समाहित जन समस्यायें।
प्रगति की पल्लवित, पुष्पित फलित होवें योजनायें।।
स्वप्न बापू के सभी साकार करना चाहता हूं।
राष्ट्र में नव चेतना की क्रान्ति लाना चाहता हूं।।
घोटालों के गर्त में जनता का धन गिरने न पाये।
असभ्य दूषित छवि के नेताओं से सत्ता को बचायें।।
कर्णधारों ! राष्ट्र के अपना कदम आगे बढ़ाओ।
नीति वैदेशिक सबल कर देश को अपने बचाओ।।
राष्ट्र मांझी को नई पतवार देना चाहता हूं।
राष्ट्र में नव चेतना की क्रान्ति लाना चाहता हूं।।
आतंक पीड़ित सरहदों में शांति का माहौल होवे।
'पाक' के नापाक अंतःकरण में सदबुद्धि होवे।।
आतंक के प्रतिकार में उभरें सभी की भावनायें।
राष्ट्रहित उत्सर्ग की फहरें चतुर्दिक पताकायें।।
'भगत' और 'सुभाष' फिर अवतरित करना चाहता हूं।
राष्ट्र में नव चेतना की क्रान्ति लाना चाहता हूं।।
संगठित जन शक्ति का सजनात्मक सहयोग होवे।
प्रगति में विज्ञान की क्षमता का सदुपयोग होवे।।
परमाणु शक्ति से विदेशी शक्तियों का ध्वस्त हो मद।
'अग्नि' 'पृथ्वी' सरहदों की चौकसी का संभालें पद।।
राष्ट्र को एक और 'अब्दुल कलाम' देना चाहता हूं।
राष्ट्र में नव चेतना की क्रान्ति लाना चाहता हूं।।

संपर्क: बिजौली,कौह,अमौली, फतेहपुर (उ०प्र०)

पर मिला क्या?

❑वीणा जैन

दो व्यक्ति
रेल के दूसरे दर्जे की सीट पर बैठे
खा रहे थे आलू चिप्स
पी रहे थे दारू
एक छोटा-सा बच्चा राष्ट्रीय स्वतंत्रता
उनके पास आया,
और छोटे-छोटे हाथ फैलाये
कुछ पैसों के लिये।
एक व्यक्ति बोला-
भाग यहाँ से,
कहां से आ जाते हैं भिखमंगे ?
दूसरे व्यक्ति ने मसखरी से कहा,
कि दारू पीयेगा ?
और दोनों, ठहाका मार कर हंस पड़े।
बच्चा सहम गया
बेचारगी चेहरे पर ओढ़ कर
आगे की सीट की ओर बढ़ गया।
ये उम्र
इतनी मेहनत
पर, मिला क्या ?

संपर्क : 29/10, वलीगंज पार्क, कलकता

गीत

❑जय नारायण मिश्र 'हेम'

यह देश हमारा है गुलशन।
इस मिट्टी का हर कण चंदन।
हमने शांति के सरगम से,
जग-जग का प्राण सदा बांधा।
हम जीएं और जग मुस्काये,
युग-युग से हमे सदा भाया।
सबसे ऊंचा है राष्ट्र वन्दन
इस मिट्टी का हर कण चंदन।।
हम भूल न जायें आजादी के दीवानों को,
कोई यहां न हो पीड़ित बिगलित।
सुखका आधार मिले सबको
रे मिले सहज जीवन सबको ।
हो नहीं कहीं रोदन शोषण
इस ट्टिी का हर कण चंदन।
भाषा जोड़े धर्म रोशनी दिखलाये,
हम एक फूल हैं सुगंध राष्ट्र प्रेम जिसकी।
हो अपने से ऊपर देश जहां,
हो गलबाही नीति-प्रीति कर।
हो मातृभूमि के हित वंदन
इस मिट्टी का हर कण चंदन

संपर्क: हिन्दी विद्यापीठ, देवघर, बिहार

मन का दीप जले ना जब तक

❑डॉ. पुष्पा चौरसिया

नव धनाढय के शीश महल में, सतरंगी, मायावी डेरा,
आज तुम्हें बतलाना होगा, कब आएगा नया सवेरा?
रामराज पाखण्ड-राज में, बदल गया कब जान न पाए
चकाचौंध शहरों की लखकर, हमने अपने ही गुण गाए।
पांच दशक उड़कर हवा में, टूट गई है लक्ष्मण रेखा
सबकी लगी निगाह महल पर, कब किसने कुटिया को देखी
एक तरफ ऊंचे कंगूरे, एक तरफ है गहरी खाई
मानव निर्मित अंधकार ने, ढेर विषमताएं फैलाई।
पद-पैसों के सम्मोहन में, उतर गया आंखों का पनी
डूब रहे जो दु:ख-दरिया में, उनकी पीड़ा किसने जानी
हर दिन एक घोषणा होती, उद्घाटन भी हर दिन होता,
बारह मास सिसकियां लेकर, दीन बेचारा हर दिन रोता।
दूषित-कलुषित और विषैला, धुआं विषमता का फैला है।
इन उजले कपड़ों, के कारण, धरती का आंचल मैला है।
ज्ञान-दीप से रोशन जग हो, शिक्षा का फैला उजियारा,
सुख-समृद्धि मानवता पूरित, होगा भारत वर्ष हमारा।
हमने भी क्या किया देश हित, आओ इस पर चिंतन करलें,
आहें,आंसू, टीस, वेदना, दुखियारी जनता का हर लें।
मन का दीप जले ना जब तक, नहीं दूर होगा अंधियारा,
मर्म-कर्म को जिसने जाना, समझो उसने देश संवारा।

संपर्क: 6/270, चन्द्रालय,फ्रीगंज,उज्जैन(म.प्र.)

तुम देखना एक दिन

❑श्रीमती सुधा गुप्ता''अमृता''

बन सकोगे गुलमोहर तुम देखना एक दिन
सह जाओगे सारे कहर, तुम देखना एक दिन।
चिलचिलाती तेज धूप आंधियों में भी,
रह सकोगे बेखबर तुम देखना एक दिन।
मुरझाई सताई हुई भावनाओं को,
दे दोगे सहारा सबर, तुम देखना एक दिन।
रात की स्याही में सभी स्वप्न सो गए,
हो जाएगी उजलन सरुर, तुम देखना एक दिन।
यातनाओं का जहर पिया है उम्र भर,
आएंगे सुखों के पहरख तुम देखना एक दिन।
हारे हैं अगर जिंदगी में सोर दांव हम,
लहराएगा परचम फहर, तुम देखना एक दिन

संपर्क-दुबे कालोनी, बरही रोड, कटनी-(म.प्र.)

सामाजिक न्याय

❑ भुवनेश्वर मिश्र

घोटालों और घपलों का सम्राट,
खद्दर का दगदग सफेद कुर्ता-पाजामा पहने,
रैली की माईक पर जोर-जोर से चिल्ला रहा था-
हमें गरीबी मिटानी है,
सामाजिक न्याय लाना है।
सामाजिक न्याय पाने वाले,
गांव से आये भाड़े के लोग,
तालियां बजाते थे,
स्वप्निल आशा में, नारे लगाते थे।
उनके लिए सामाजिक न्याय सही था-
शाम में रैली के बाद,
उनके नूक्कर का नेता,
जब उन्हें पचास रुपये देगा,
फिर बस में बिठाकर,
उन्हें उनके गांव तक छोड़ेगा।

संपर्क -राजभाषा विभाग,समस्तीपुर मंडल

उपेक्षा

❑अमरनाथ मेहरोत्रा

मनुष्य अब छिपकिली
हो गया है
उसके सिर में आंखे
उग आयी है
और वह, ऊपर की ओर हीं,
देखा करता है
जहां नीला आसमान हैं।
वह इसीलिये, दूसरों के
दु:ख, दर्द, निराशा, अन्याय और
असीम पीड़ा को
नहीं देख पाता है
जो उसके सामने है
क्योंकि उसकी आंखे
सिर पर है
वह ऊंचाई की ओर ही
निरंतर निहारते हुए यह भी
भूल जाता है
कि उसके बहुत सारे साथी
ऊंचाई में उससे कम नहीं है।

संपर्क-
सम्पर्क : रज्जुसाह लेन, रमना मुजफ्फरपुर

गठरी

❑ भारत कुमार 'अतुल'

एक बाप ने कर्ज कर
भेज दिया अपने बेटे को
रोटी लाने
सात समन्दर पार।
सात समन्दर पार बेटा
एक-एक रोटी बचाता रहा सालों तक
गठरी भारी होती गई,
किराया दुगुना हो गया और
आधी गठरी किराये की हो गयी
जब वह लौटा अपने वतन-
अधिकारियों की पैनी नजर पड़ी
उसकी हो गयी।
घर के रास्ते चला तो
कई बेटों के भूखे बाप मिले
उन सबको देता गया
एक-एक रोटी।
घर पर मात्र तस्वीर मिली
बाप नहीं।

संपर्क-185,मथुरावाला, देहरादून

कौन बदल गया

❑शेखर कुमार श्रीवास्तव

अपरिचित
पदचापों से ले
पहचान लेते थे जिन्हें तब।
परिचित-
से खड़े हैं-आज
आंखें के समक्ष
जिनकी आहट थी
बनी है अंजान
कौन बताए
कौन बदल गया है...?
दृष्टि, दृष्टिकोण
या कोई अपना।

नंगे-भूखे

❑अनिरूद्ध कुमार सिंह

देखो वे आये नंगे -भूखे
तन-बदन है जिसके सुखे
न उसके तन पर हैं कपड़े
न उसके हँसते हैं मुखड़े
देखो उसके उभरे कंकाल
बिन तेलों के बिखरे बाल।
वह देता है हरदम नारा
मेरा न है कोई सहारा
कहने को है देश हमारा
रहने को न गेट हमारा
कैसे कह दूं देश हमारा
दिल का है न कोई सहारा

सम्पर्क: ग्रा०-रामनगरा, रीगा, सीतामढ़ी

ग़ज़ल

❑गौरीशंकर श्रीवास्तव 'पथिक'

धड़कने बढ़गई सामने देखकर
बाद मुद्दत के उनको यहां देखकर।।
दो दशक राजधानी से लिपटे रहे।
गांव की राह भूले शहर देखकर।
पटखनी ऐसी खाई है अबकी दफा।
होश ही गुम हुए वोट निज देखकर।।
वायुयान-शताब्दी में उड़त रहे।
घुसते सामान्य बोगी में अब ठेल कर।।
भाषणों की जो वोतल रहे खोलते।
पी रहे चाय चौपाल में बैठकर।।
यह तो झोंके प्रजातंत्र के प्राण हैं।
इसलिये सबसे हरदम चले मेलकर।।

संपर्क- सतना म.प्र.

ग़ज़ल

❑यादराम शर्मा

बन्द दरवाजे सभी के, बन्द घर की खिड़कियां
छल कपट की इस कदर बड़ने लगीं नजदीकियां।
होकि तो बांधकर रखना, निबाला ही सही
खो न जायें रहबरों की भीड़ में ये रोटियां।
जिसको मिलनी है मिलेगी बस उसी को नौकरी
पूंछता है कौन, किसके पास कितनी डिग्रियां
हैं खुरा वे ही उन्हीं को पूजते हैं लोग अब
कैद हो जाती हैं जिनके कहकहों में सिसकियां।
प्यार की बातें न करना इस जमाने में जहां
ताल्खियां ही तल्खियां हैं, तल्खियां ही तल्खियां।

गज़ल

❑राजेन्द्र कुमार

चुपचाप जहर को पीने में तेजाब उबलता है,
मेरे भी धड़कते सीने में पंजाब सुलगता है।
मेरे हिस्से में कहाँ तेरी जुल्फों के घने साये ,
मेरे जद के रेगिस्तां में आफताब चमकता है।
मैं शायर हूँ शरारों का अंगार में ढलता हूँ,
मेरी रग-रग में हरदम इन्कलाब मचलता है।
है इश्क नहीं लबक पर मेरे औं हुस्न नहीं आंखों में,
ऐसा भी सुखन में मेरे महताब दहकता है।
इकबार इधर भी देखो, तुम मेरी नजर भी देखो,
मेरी आंखों में तेरे गम का सैलाब उमड़ता है।
मैं हिंदु भी, मुस्लमां भी, सिख और इसाई भी,
मुझमें यह जज्बा हिन्दुस्तानी बेताब उमड़ता है।
संपर्क- रणजीत नगर,नाभा पाटियाला,पंजाब:

दोहा

❑सलीम अंसारी

मैंने जिसकी आंख से, देखे अपने ख्वाब
अब उस का अहसास भी, मेरे लिये अजाब
चहरा चहरा ढूंढ़िये,आप अपनी पहचान
संभव है मिल जाये फिर, थोड़ा सा लिर्वाण
माना जख्मी हो गया, मेरा हर विश्वास
फिर भी करना है मुझे, जीने का अभ्यास
मन्दिर मस्जिद तोड़िये, लेकिन रहे खयाल
शीशे में विश्वास के पड़ जाये गा बाल
भूल भुलैयां शहर की , पकड़ें उसके पांव
रोजी रोटी के लिये जिसने छोड़ा गांव
सूरज डूबा और फिर उतरे काले साये
पंड़ों की आवाज पर पंछी वापस आये
रातें जंगल की तरह, और दिन रेगिस्तान
मेरी जीवन यात्रा, कैसे हो आसान।

संपर्क: 559, मोती नाला, जबलपुर(म.प्र.)

दोहा

❑घनश्याम

भिन्न बोलियां, जातियां, धर्म, वेश, परिवेश
इन्द्रधनुष जैसा लगे प्यारा भारत देश
हर भाषा का हम करें यथा योग्य सम्मान
लेकिन हिन्दी से बने भारत की पहचान
हिन्दी हिन्दुस्तान की भाषा सरल-सुबोध
फिर क्यों इसकी रह में है इतना अवशरोध
लाठी, पैसा, छल, कपट राजनीति के शस्त्र
लोकतंत्र की द्रौपदी होती है निर्वस्त्र
जाति-धर्म के नाम पर होत नरसंहार
राजनीति करने लगी कैसा कारोबार
मंदिर, मस्जिद, चर्च में वही एक भगवान
सब धर्मो का भूल है मानव का कल्याण
आओ! मिल जुलकर करे कोई ऐसा काम
जिससे अपने देश का जग में फैले नाम

संपर्क- पावर हाउस,लाल दरवाजा, मुंगेर

दोहा-गजल

❑डा०अनन्तराम मिश्र 'अनन्त'

हम शिकार बन भ्रान्ति के पाते ठीक न जांच
सूर्य न उगता-डूबता, रही भूमि ही नाच ।
इस पथ से आना न तुम, मुझ तक नंगे पांव
इस पथ पर रोड़ी नहीं, बिछा हुआ है कांच ।
पका रहा खिचड़ी अलग, वह ले चावल डेढ़,
भर महत्वकांक्षा-मृगी मन में रही कुलांच।
क्, यजु, साम, अथर्व हैं लोग जानते चार-
किन्तु महाभारत-सहित पूज्य वेद है पांच ।
नहीं सुने-देखे गये कहीं झूठ के पैर,
और कभी आयी नहीं सीत ! सांच पर आंच

संपर्क-गोला गोकर्णनाथ, खीरी, उत्तरप्रदेश

'हाइकू'

❑रमेशचन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

(1)प्रेम? स्वर्ग है
प्रेम ही प्रार्थना है
प्रेम ही प्रभु
(2) बड़ी अक्खड़
पाण्डित्य में ऐंठा है
भक्तों की हंसी
(3) अंधेरी रात्रि
पथ को प्रकाशित
प्रेमी-मुखड़ा
(4)दिन में त्यागी
रात्रि में रागी बने
शास्त्र कण्ठस्थ
(5)प्रकृति नष्ट
कृत्रिम जीवन है
विषाक्त गैस
(9)तीन पंक्तियां
विल्व-पत्र सी चढ़ें
हाइकू ! शिव

संपर्क : डी-4, उदय हाउसिंग, वैजतपुर, अहमदाबाद

हाइकू

❑शैल शिखर

(1) वट वृक्ष में
तोता दीखता नहीं
रव गूंजता।
(3) एक-दो-तीन
विहग गगन में,
हुआ विलीन।
(4) किरण आयी,
अर्णज उर खोला,
सुरभि दिया।
(5) रिक्शाकर्षक
धूप से अति गला
लोमहर्षक।
(6) बड़े ताव से
गद्दी पर जा बैठा
लुढ़क गया शैल
काल-कर्म के।
(7) तरु ने पाला
खा गया उसको ही
विद्वेष कीट।
(8) दुमहिलाया
पत्तल चाटकर
भूंकने लगा।

संपर्क-नीलम पथ, मुंगेर

मौन मुखर कविताओं का संवादः 'काला गुलाब'

❑ समीक्षकः परेश सिन्हा

"काला गुलाब" डॉ०शिवनारायण का प्रथम काव्य-संग्रह है, जिसमें विभिन्न मानभूमि की पैतालिस कविताएं संकलित हैं। शीर्षक-कविता **'काला गुलाब'** दक्षिण अफ्रीका की स्वाधीनता चेतना को उजागर करती हुई कवि की लोकतांत्रिक मूल्यों में आस्था का परिचय कराती हैं, किन्तु कुछ कविताएं ऐसी भी हैं जो विसंगतियों के संदर्भ में प्रतिक्रियात्मक रूप से हिंसा की पोषण करती-सी प्रतीत होती हैं। कुछ कविताएं दर्शन और प्रेम की हैं, परन्तु शिवनारायण की कविता का मूल स्वर मानवतावादी है जिसे शुभ सुखद माना जा सकता है।

दरअसल जितने भी प्रकार के सृजनात्मक प्रयत्न होते हैं, सभी के केन्द्र में मनुष्य होता है, किन्तु साहित्यिक सर्जना का क्षेत्र तो जड़-चेतन और काल सबको अपने में समेट कर अपनी निस्सीम व्याप्ति का प्रमाण प्रस्तुत करता है। जिसकी व्याप्ति जितनी बड़ी होती है, वह रचना भी उतनी ही अधिक महत्वपूर्ण और कालातीत होकर सामने आती है और चूंकि काव्य--सृजन का मूलाधार मानवीय सवेदनाओं से रचा-बुना होता है, इसलिए कभी-कभी कोई काव्य--रचना सार्वभौमिक आयाम ग्रहण कर लेती है। महत्व रूपाकार का नहीं होता, संवेदनाओं की तीव्रता का होता है, अभिव्यक्ति के सच का होता है। वह सच जो यथार्थ से पृथक होता है, शाश्वत होता है, मगर अंतिम नहीं होता, एक सुदूर सभ्य-सीमा में स्थाई होता है। यथार्थ की अभिव्यक्ति तात्कालिक संदर्भो में हथियार बन सकती है, जीवन-मूल्यों को स्थायित्व प्रदान नहीं कर सकती। द्वितीय सहस्त्राब्दी की यह जाती हुई सदी सभ्यता की कसौटी मानी जाएगी जिसमें दो-दो विश्वयुद्ध हुए और लाखों की संख्या में लोग मारे गए। परमाणु-विस्फोटों ने आदमी के आदमी होने पर प्रश्न-चिह्न लगा दिए, परन्तु कविता ने निरन्तर आदमी को बेहतर आदमी बनाने की टेक नहीं छोड़ी।

'काला गुलाब' के कवि डॉ०शिवनारायण पर फिलवक्त न तो कथित प्रगतिशील होने का ठप्पा लगा है और न यथास्थिति होने का इसलिए 'विचार' के अंधापन से ग्रस्त लोगों को इनकी रचनाएँ सार्थक नहीं भी लग सकती हैं, क्योंकि 'विचारों' की प्रतिबद्धता की ओट में आज विचारों का अंधापन अधिक प्रभावी दिखाई पड़ता है। एक पाठक के रूप में डॉ०शिवनारायण की कविताओं से गुजरते हुए मुझे विविध आयामी अभिव्यक्तियों का एक 'मोजाइक' दीख पड़ा है, जो इनके सहज संवेदनशील, विचारप्रज्ञ तथा प्रवहमान होने का प्रमाण है। वैचारिक दृष्टि से इनका युवा कवि-मन यह स्थिर कर पाने की बांछा रखते हुए भी स्वयं अपने लिए कोई दिशा निश्चित कर पाने में अभी तक कदाचित सफल नहीं हो पाया है। कहीं प्रेम की पीड़ा टीस भर देती है, तो कहीं दर्शन का भार बोझिल कर देता है। कहीं व्यवस्था की विसंगतियों के प्रति क्रोध का उबाल है तो कहीं आदर्श लोकतंत्र का सपना। यह सारा कुछ जीवन में है तो रचनाओं में भी रहेगा ही, परन्तु इनकी कविताओं के मुख्य स्वर की पहचान तो मनुष्य के लिए इनकी चिंता से ही संभव हो पाएगा।

'काला गुलाब' की निम्न पंक्तियों में विश्व स्तर पर स्वाधीनता की चेतना के विस्तार का प्रबल आग्रह दिखाई पड़ता है-

''मंडेला का प्रत्यारोपित बीज
पृथ्वी के कई हिस्सों में
काले गुलाब की शक्ल में
पुष्पित होने लगा है।''

यही भाव 'रक्तबीज' की इन पंक्तियों में भी है-

''उसका तन तो रावण का सिर है
एक काटोगे दूसरा उग आएगा
और रक्तबीज की तरह उगता ही रहेगा।''

ये पंक्तियां कवि-मन की अनास्था की अवस्था की भी द्योतक हैं। अंधेरा छंटेगा या नहीं का संशय कवि को परेशान करता दीखता है **'गदर'** शीर्षक कविता में कवि की लोकतंत्र में आस्था थोड़ी डगमगाती नजर आती है और इसकी कविता का विषय प्रतिक्रियात्मक हिंसा को रूपायित करता है-

''गहोशी पासवान का दिल गंगा की निर्मल धारा है, जिसमें पूरे गांव की धड़कन बहती है।'' तथा-

''अगली सुबह गांव में कुहराम मच गया कि गणेशी ने उस भूपति के सिर को धड़ से अलग कर दिया।''

इन पंक्तियों में एक विरोधाभास भी है। गंगा की निर्मल धारा में तो पूरे गांव को निर्मल करने की क्षमता होनी चाहिए। ऐसी ही कुछ पंक्तियाँ आतंकवाद और विघटन के संदर्भ में हैं-''अपना साम्राज्य/ स्थापित करने के उन्माद में/ अपने क्रूर डैने फैलाएगा/ और कालचक्र की गति/ फिर चन्द लम्हों को सहम जाएगी।'' (गिद्ध)

'यक्ष-प्रश्न' शीर्षक कविता की इन पंक्तियों में एक काल्पनिक भय की स्थिति है-''तब मुझे लगता अपने रक्तिम पंजों से/ मुझे खंड खंड उदरस्थ कर जाएगा / और मेरे सामने/ एक रिक्त सन्नाटा/ पसर जाता मील दर मील।''

'युद्ध' शीर्षक कविता में डॉ० शिवनारायण पुन: अपनी मानवीय चिंता को प्रखर रूप से स्थापित करते हैं-

''वह दिन कब आएगा
जब एक मानव
हां, एक मानव का
स्वतंत्र मूल्य स्थापित हो पाएगा।''

सामयिक परिस्थितियों का आकलन करते हुए कवि की यह अभिव्यक्ति ध्यातव्य है-''सच / एक मौसम के बदलने से/ कितना कुछ बदल जाता है। बदल जाती है शामों की खुशबू / मुट्ठी भर नजरों की प्यास।''(मौसम के बदलने से) विसंगतियों से जूझता कवि-मन **'फरवरी की सांझ'** शीर्षक कविता में सृष्टि की नैसर्गिक छटा का अवलोकन करता है-

"दूर पहाड़ी के अंचल से
पूर्वार्द्ध फरवरी की सांझ
स्वयं में सम्पूर्ण सृष्टि को समेटती
उतर रही है धीरे-धीरे-धीरे...!"

'मृत्यु से' की अंतिम पंक्तियां स्वयं कविता को आश्वस्त करती प्रतीत होती है-

"बस, पल दो उतरो मृत्यु
मुझे प्रतीक्षा कर लेने दो
मासूम किलकारियों की
चंदन सने पुष्पित-क्रन्दन की।"

इस कविता में डॉ. शिवनारायण का कवि-मन मासूम किलकारियों की प्रतीक्षा में है। यह जीवन के प्रति सम्पूर्ण आस्था का स्वर है, सृष्टि की निरन्तरता का परिचायक है, आमजन का गीत है और यह मनुष्य को मनुष्यता का गौरव प्रदान करता है। युवा कवि डॉ.शिवनारायण निस्संदेह इन पंक्तियों से पाठकों को रोमांचित कर देते हैं। इस संग्रह में विविध आयामी भावों की कविताओं में इस भावभूमि की अनेक रचनाएं हैं और इसीलिए यह विश्वास किया जाना चाहिए कि अपनी आगामी काव्य-पुस्तकों में डॉ. शिवनारायण निश्चित रूप से अधिक प्रौढ़, शिव तथा सुन्दर कवि के रूप में समक्ष होंगे। अपने इसी एकांत विश्वास के साथ में कवि को साधुवाद देता हूं!

संपर्कः 'संवाद', बुद्धनगर, पथ संख्या-3, पटना

समीक्ष्य : "काला गुलाब" (काव्य-संग्रह)
कवि - डॉ. शिवनारायण
प्रकाशक
अयन प्रकाशन,1/20 महरौली,नई दिल्ली
मूल्य-100 रुपये मात्र

अवचेतन की अमूर्त्त रचना की शब्दायित अभिव्यक्ति

समीक्षक : सत्यनारायण लाल

इस पत्रिका का नाम है ''राष्ट्रीय विचार पत्रिका'' और यह मुखपत्र है राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित मंच का। यह भी एक सुखद आश्चर्यप्रदायक नामकरण लगा।

पिछले कई वर्षों से मंचों का आकर्षण बहुत बढ़ गया है। गाँधी विचार-मंच, नेहरू विचार -मंच लोहिया विचार-मंच, कर्पूरी विचार-मंच इत्यादि, इत्यादि। इन महानुभावों ने समाज को बहुत-सारे कल्याणकारी ठोस विचार दिए हैं।

उनकी स्मृति की बारम्बारता भी समाज को सुखी बनाने में कारगर हो सकती है।

इनके विचारों में राष्ट्र हित के मूल तत्व भी मौजूद होते हैं। फिर भी, वे होते हैं व्यक्ति-केन्द्रित ही, और व्यक्ति कितना भी बड़ा क्यों न हो, वह राष्ट्र तो होता नहीं। राष्ट्र की कुछ अपनी समस्याएँ होती हैं, जिनके सुचिन्तित समाधान होते हैं। मेरे अवचेतन में किसी ऐसी संस्था की अमूर्त्त रचना होती रही हैं, जो समस्त राष्ट्र को केन्द्र में रखकर तत्संबंधी उपयोगी विचारों पर विचार करने के परिवेश का सृजन करे। अत: राष्ट्रीय विचार पत्रिका नाम देखकर मुझे ऐसा लगा कि यह पत्रिका प्रबुद्ध मानव-समाज के चिन्तन-मनन के लिए एक चिरापेक्षित क्षेत्र प्रस्तुत कर रही है। यदि मुझे बड़बोलेपन के लिए क्षमा मिलने का आश्वासन हो, तो मुझे यह कहने में भी संकोच नहीं होगा कि यह मेरे **अवचेतन की अमूर्त्त रचना की शब्दायित अभिव्यक्ति है।**

इस नाम का महत्व आज इसलिए भी बढ़ गया है कि क्षेत्रीयता की प्रतिदिन संबर्द्धित महिमा के आगे राष्ट्रीयता की भावना बहुत हद तक छोटी पड़ गई है। तो क्षेत्रीयता-अक्रान्त इस युग में राष्ट्रीयता की वकालत करने वाले तथा उसके लिए मंच की व्यवस्था करने वाले बन्धुओं को मेरी हजार-हजार बधाइयाँ।

कभी-कभी नाम बड़े और दर्शन थोड़े की आशंका भी मन में उभरती है। इससे निजात पाने के लिए मैंने पत्रिका में समाविष्ट कथ्यों-तथ्यों पर नजर दौड़ाई और मुझे यह कहने में भी किंचित् संकोच नहीं निर्मूल सिफ्रेसर कोर्स करने का आन्नद-लाभ। ऐसी सुचिन्तित सामग्री प्रस्तुत करने के लिए डा0 किशोर काबरा हार्दिक बधाई के अधिकारी है।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित दो कहानियाँ पाठकों के मनमोहन में सर्वाधिक समर्थ लगीं। वे हैं ''ड्योढ़ी'' और ''चूहे का शिकार''। दोनों ही ''साहित्य समाज का दर्पण है'' सिद्धांत के निर्विवाद उदाहरण हैं। दोनों ही में वर्णित सामयिक समस्याएँ पाठकों को बिल्कुल जानी-पहचानी लगती हैं। दोनों ही अपने-अपने ढंग से समस्याओं का समाधान भी कर देती हैं। ''ड्योढ़ी'' में लेखक ने वर्तमान युग की ज्वलन्त पारिवारिक समस्या, बुजुर्गों की सही देख-रेख, सेवा-शुश्रूषा पर कलम उठाई है। घटनाएँ इतनी आम-फहम हैं कि उनका जिक्र यहाँ अनावश्यक प्रतीत होता है। हाँ, कहानी का अंत बहुत ही सुखद है। अपनी ''ड्योढ़ी'' में मन-प्राणों से बंधे कामता बाबू उससे विलग होना नहीं चाहते, उधर बड़ा बेटा उनको घर पर अकेला छोड़ने के लिए कतई तैयार नहीं है। कामता बाबू उसका जी दुखाना नहीं चाहते। इसी दुविधा में पड़े कामता बाबू को उनकी बहन का पत्र मिल जाता है, जो इनके ही साथ रहने आ रही है। उनका मन उमंग से भर उठता है। वे बहन के रहने-ठहरने, खाने-पीने आदि के विषय में योजना बनाने में व्यस्त हो जाते हैं और ड्योढ़ी न छोड़ने के लिए एक स्वाभाविक आधार पर जाते हैं। आजकल कहानियाँ प्राय: समस्या-मूलक होती हैं। ऐसे में यह समस्या और उसका समाधान साथ-साथ देनेवाली कहानी पाठकों को उद्धिग्न नहीं करती, अपितु आश्वस्त करती है।

दूसरी कहानी ''**चूहे का शिकार**'' में भी अनेक मनमोहक तत्व है। इसका पूर्वांश, चूहे के बध तक की घटना, तो पूरा मौक-हिरोईक'' है। लगता है, कोई बहुत भंयकर खूंखार जानवर घर में घुस आया है, जिसको मारने के लिए पूरी तैयारी की जाती है। बीच-बीच में मानव-मन की कोमल भांवनाओं की भी झलक मिल जाती है, जो पाठकों का जायका बदलने के लिए जरूरी होती है। किन्तु, चूहे द्वारा पत्नी के अंगूठे को काटने की सुधि दिलाने पर पति का ''मर्द'' जग जाता है। इस स्थल का चित्रण बड़े ही स्वाभाविक ढंग से सरल, सुगम शैली में कुछ व्यंग्य का पुट देते हुए कहा गया है। पति-पत्नी का परस्पर एक-दूसरे के सहायक के रूप में भी बड़ा सुन्दर चित्रण है।

कहानी का उतरांश आजकल की एक खाहमख्वाह उपस्थित कर दी जाने वाली समस्या पर करारा व्यंग्य है। इस कहानी में ''न कुछ'' का सहारा लेकर हड़ताल, घटना, अनशन आदि करने वाले एक परजीवी व्यक्ति का चरित्र बहुत ही सहज रूप से उजागर किया गया है। उसके तिकड़मों और साजिशों को चिन्हित किया गया है। वह स्थिति समस्या उत्पन्न कर देती। किन्तु अनुभवी लेखक ने यहां भी एक बुद्धिमान मजिस्ट्रेट के प्रशासन-कौशल द्वारा समस्या का समाधान स्वाभाविक ढंग से करा दिया है, समाधान तलाशने के लिए भावुक पाठकों को परेशान होने से बचा लिया गया है। ऐसी हास्य-व्यंग्य तथा यथार्थ-संश्लिष्ट कहानी पाठकों के सामने परोसने के लिए लेखक धन्यवाद और बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के सरस स्तम्भ 'काव्य कुंज' का संचयन भी श्लाध्य हैं। ''नव नामकरण''का स्वाद तो अंतिम तीन पंक्तियों के पहले नहीं मिलता। हाँ, अन्तत: उसके निहितार्थ को समझ कर मन पुलक-पुलक उठता है। अन्य कविताओं में भी काव्य-तत्व प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं। कुछ (जैसे वृक्ष) के रूपक और अधिक स्पष्ट होते, तो और अधिक आनन्दप्रद होते।

''**राष्ट्रीय विचार पत्रिका**'' के इस ''जनवरी, मार्च,1999 के पहले का कोई अंक देखने का सौभाग्य मुझे नहीं मिला है। अत: मैं, इस संबंध में बहुत कुछ नहीं कह पाता। हाँ, जो सामने है वह श्लाध्य है, अनुकरणीय है।

ऐसी राष्ट्रीय विचार-प्रधान पत्रिका की कल्पना से लेकर प्रकाशन तक में सहयोग-सहायता देनेवाले सभी भविष्य-द्रष्टा मनस्वी सज्जन जिज्ञासु पाठकों के धन्यवाद के अधिकारी हैं। आशा है, यह पत्रिका क्रमश: विकास करती हुई राष्ट्र के नागरिकों को सद्भावना और सद्विचार से सुसज्जित करती रहेगी।

संपर्क-साधना-कुटीर, चौधरी टोला, महेन्दू, पटना-6

समीक्षा : सत्यनारायण लाल
समीक्ष्य : "राष्ट्रीय विचार पत्रिका"
प्रधान संपादक : श्री सिद्धेश्वर
प्रकाशक :
राष्ट्रीय विचार मंच, बसेरा, पुरन्दरपुर, पटना-1
मूल्य- 10 रुपये मात्र

रेणु की कथाओं में सामाजिक चेतना

❑ सिद्धेश्वर

विगत 7 मार्च, 1999 को अमरकथा शिल्पी फणिश्वर नाथ रेणु की 78 वीं जयन्ती के अवसर पर राष्ट्रीय विचार मंच की ओर से पटना में आयोजित साहित्यिक संगोष्टी में मंच के महसचिव श्री सिद्धेश्वर के द्वारा" रेणु की कथाओं में सामाजिक चेतना" विषय पर एक आलेख प्रस्तुत किया गया जिसके अंश यहां प्रकाशित कियए जा रहे हैं।

भारतीय समाज सदियों से सामंती संस्कारों और परम्पराओं का गढ़ है। बड़ी-बड़ी सामाजिक-धार्मिक रूढ़ियां और पाखंड भारत की इस धरती में शताब्दियों से पनपे और परवाण चढ़ते रहे खास कर हिन्दी क्षेत्रों में तो आजादी के पचास वर्षों बाद भी बजाय इसके की समाज के सामन्ती अवशेषों पर प्रहार होता, वर्ण तथा जाति चेतना की जड़ें कमजोर की जाती, राजनितिक सत्ता बनाये रखने की मोह के नाते उस सारे सामन्ती ठाट-बाट और विधि-विधानों को सामन्ती विचार धारा को संरक्षित और सम्वर्धित किया गया है। इसके परिणाम स्वरूप समाज के दलित उत्पीड़ित, उपेक्षित तथा पिछड़े वर्ग के उत्पीड़न में बृद्धि हुई उन्हें अधिकार से वंचित और निरीह बनाये रखने के प्रयास भी हुये। यही नहीं बल्कि सामाजिक विद्रूपताओं पर प्रहार करना तो दूर धार्मिक अंधविश्वास और पाखण्ड के कारण उन्हें बढ़ावा मिला। परम्परा से चल रहे धार्मिक अखाड़े तथा उसके ठेकेदार समाज की धार्मिक भावनाओं का इस्तेमाल अपने हित में करते रहे। किन्तु इस धरती पर समाज सुधारक रचनाकार, कलाकार, पत्रकार तथा चित्रकार ऐसे पैदा हुए जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक चेतना जागृत करने का सफल प्रयास किया। राजाराम मोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, महात्मा फूले, भीमराव अम्बेदकर, रामास्वामी नायकर, नारायण गुरू, प्रेमचन्द, शरद चन्द्र, बंकिमचन्द्र तथा फणिश्वरनाथ रेणु सरीखे हस्ताक्षरों ने अपने विचारों तथा अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक, धार्मिक रूढ़िवाद परम्परा के प्रति उसकी अन्धभक्ति, उसकी अशिक्षा अज्ञान सामाजिक भेदभाव, जातिवाद, ब्रह्मणवादी वर्चस्व, नारियों और उपेक्षितों के घोर उत्पीड़न के विरूद्ध अपनी आवाज उठाये और सामन्ती विचारों और संस्कारों की सड़ान्ध से समाज को मुक्त करने का संकल्प लेकर उसका नेतृत्व किया।

इसमें कतई संदेह नहीं की अनेक तरह के सुख-दुख, अभावों, भीतरी-बाहरी समस्याओं, सामाजिक कुप्रवृतियों के बोझ और त्रासदियों से लदे-खदे तथा अनेक स्तरों वाले इस विशाल भारतीय समाज का जटिल और प्रतिपल बदलता यथार्थ उनकी कहानियों में आया है। इतना साहित्य की किसी और विधा में नहीं। कहानियों को वस्तुत: भारतीय समाज का दस्तातेज कहा जा सकता है। जिसके सहारे अपनी समाज की जातीय पहचान और उसके बदलते हुए यथार्थ को कहीं अधिक करीब से जाना जा सिकता है। अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक चेतना जागृत करने का जो प्रयास अमर कथा शिल्पी फणिश्वरनाथ रेणु ने किया उसपर एक नजर डालना आज की समय की मांग है।

रेणु के समग्र कथा साहित्य में सामाजिक सांस्कृतिक गहराईयों की सुक्ष्मतम संवेदनाओं के बड़े ही स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं। उन्होंने धर्म की मान्यताओं और सामाजिक रूढ़ियों की भूल-भूलैया में अपनी स्मिता की तलाश करते हुए समाज के हासिये पर खड़े लोगों को मानवीयता के धरातल पर जांचा-परखा है और अपनी कथाओं में उसे अभिव्यक्त किया है। उन्होंने बड़ी सावधानी के साथ मकड़ी के उन जालों को रेशा-रेशा करके हटाया है जिन्होंने समाज के यर्थात को शदियों से आक्षादित कर रखा है। इन आक्षादनों की वजह से उन्हें आजीवन प्रताड़ित तिरस्कृत होती रहने के लिए अभिशप्त कर रखा है। यही उसकी स्थिति गति और नियति है। रेणु ने अपनी सभी कहानियों में कथा नायक नायिकाओं को तमाम बर्जनाओं और विपत्तियों से जूझ कर सम्मान पूर्वक जीने की राह बनाते हुए दर्शाया है। इनके पात्रों ने सम्मान की रक्षा के लिए न केवल सामन्त और शोषकों से संघर्ष किया है। बल्कि इनकी कहानियां उसके आत्मविश्वास, उसके स्वाभिमान और उसकी संकल्प शक्ति को पुष्ट करती हुई उसकी मानवीय गरिमा को बड़ी दृढ़ता के साथ स्थापित करती हैं। इनकी कहानियों के माध्यम से समाज और संस्कृति की अन्तरंग झलक मिलती है।

रेणु निम्न मध्यवर्गीय और सर्वहारा वर्ग की संपन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना को अपने कला केन्द्र में प्रतिष्ठित करते हैं। भयावह गरीबी, घृणास्पद वर्णवाद जहालत निरन्तर निरत होते हुए भी यांत्रिक और उपभोक्तावादी परिवेश के बराबर रेणु के कथा पात्र निर्मल मन और खुले कंठ से जीवन संगीत गुनगुनाते जाते हैं। जीवन के प्रति आस्था का यह अनन्य राग ही उन्हें हर मुसीबत से मुठभेड़ करने की शक्ति देता है। रेणु की कथा भूमि उनकी कलम के समस्पष्ट से अधिक उर्वरा हो गई है। यह नि:संकोच कहा जा सकता है कि हिन्दी में प्रेमचन्द के बाद रेणु ने ही अपनी गहरी मानवीय संवेदना से समाज के उपेक्षित, शोषित, दलित एवं पिछड़े समुदाय को संपूर्णता में चित्रित कर उन्हें सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान की है। यह कथा शिल्पी रेणु की सामाजिक चेतना और साधारण जन के प्रति उनकी गहरी समवेदना का परिचायक और प्रतिफल है। रेणु पूर्णियां के जिस **''औराही हिगना''** गांव के समाज में पैदा हुए थे, वह नितान्त पिछड़ा और दलित समाज है। रेणु ने इसी समाज में पल बढ़कर होश संम्हाला था। समाजिक घनिष्टता के कारण वे अपने समाज से अद्वैत भाव से जुड़ गये थे। शोषित पीड़ित के प्रति सम्वेदना के स्तर पर गहरे लगाव एवं चेतना से लैस रेणु जैसा आदमी समाजवादी विचार धारा का ध्वजावाहक बनकर साधारण की प्रतिष्ठा और उसके कष्ट निवारण के लिए संघर्ष एवं आन्दोलन में अगुआई करते हुए दिखाई पड़े।

रेणु को हिन्दी कथा-साहित्य में प्रतिष्ठित करने का श्रेय उनके चर्चित आंचलिक उपन्यास **''मैला आंचल''** को है। इनकी कहानियों का संसार आंचलिक भी हैं और शहराती भी हैं पर तथाकथित आधुनिकता से भिन्न उनका एक जातीय स्वरूप है। रेणु ने व्यक्तिगत चेतना के भीतर कतिपय स्थितियों को सहर्ष स्वीकारते और कुछ दूसरी भावनात्मक विडम्बनाओं को नकारते हुए अपनी कथाओं में एक निरन्तरता का निर्वाह किया है। यह निर्वाह एक सक्रियता, एक संर्घष है। ठुमरी की तमाम कहानियां किसी क्लासिकल या कालजयी रचना के बजाय लोकजीवन की स्वछन्दता और लोच प्रकट करती है। पर धीरे-धीरे **''अग्नि रेखा''** तक आकर यह स्वछन्दता और लय बदलकर तनाव में प्रकट होती है। ठुमरी संग्रह की पहली कहानी ''रसप्रिया '' एक व्यक्ति की अन्तर कथा मात्र नहीं है। वह एक पूरे एक समुदाय की संस्था का अन्त हैं -निरदंगिया एक व्यक्ति और एक संस्था है, तुम्हारी उंगली तो **''रसप्रिया बजाते हुए टेढ़ी हुई है न''** और इस प्रश्न के साथ उसका पूरा अतीत तनकर खड़ा हो जाता है। यही जीता जागता तनाव पूरी कहानी में व्याप्त है। इसी प्रकार **''अच्छे लोग''** कहानी में सम्पति के साथ अधिकार के सामाजिक रिस्ते का संबध है। ''मैला आंचल'' जहां ग्राम कथा है, वहां''परती परिकथा'' भूमि संबधों के अन्तर विरोध से आगे बढ़ी भूमि संघर्ष की कथा है। ''परती परिकथा'' को मूल अंतरविरोध सामन्तवादी भूमि व्यवस्था से नये किसान वर्ग का संघर्ष है। सामंती समाज में श्रम को उंची दृष्टि से नहीं देखा जाता। काम करने वाला कमीन हो जाता है। सामाजिक गैरबरागरी की स्थिति में आत्म निर्भरता के लिए जो थोड़ी आर्थिक सुविधाएं प्राप्त हुई हैं उन्हें सामाजिक दृष्टि ही तोड़ती है। **''दूर्धतपा''** में इसकी पृष्ठभूमि तैयार की गई है और उसके लिए एक उचित प्रामाणिक परिवेश भी चुना गया है।

इस प्रकार हम देखते है कि रेणु ने सामाजिक चेतना की कहानियों में नयी तलास की थी उसे प्रेरक कथाओं, लोक कथाओं, किंवदंतियों, विश्वासों और जनश्रुतियों से जोड़कर एक आकर्षक अंतरंग और परिचित स्केच में बदलने का कलात्मेक प्रयास किया था। इस अर्थ में रेणु का यथार्थवाद प्रेमचन्द के यथार्थवाद के निकट है। रेणु ने उसकी समकालीन पहचान में कुछ जोड़ने की भरसक चेष्टा की है। और उन्हें थोड़ी सफलता भी प्राप्त हुई है। अन्त में हम यह कहकर अपनी बात समाप्त करना चाहेंगे की प्रेमचन्द के बाद रेणु ने ही अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक चेतना जागृत करने का सफल प्रयास किया है।

विश्व के प्रमाणिक धर्मग्रंथों में श्राद्ध कर्म नहीं

❑ आचार्य बनारसी सिंह'विजयी'

विश्व में विभिन्न धर्मों/ सम्प्रदायों के जितने धर्मग्रन्थ हैं, जैसे-ईसाइयों के बाईबिल, इज्जिल, तौरात, मुसलमानों के कुरान, हदीश, आलइमरान, हिन्दुओं के रामायण, महाभारत, गीता, सुखसागर, पुराण आदि, उनके रचना-काल हमें ज्ञात हैं, परन्तु सम्पूर्ण विश्व में वेद ऐसा धर्मग्रन्थ है जिसकी रचना-काल का पता नहीं है और इसलिए सम्पूर्ण विश्व के लोग वेद को सबसे प्राचीन ग्रन्थ मानते हैं। विश्व में धर्म प्रचारक जितनी मिशनरियां हैं, उनमें सबसे सशक्त ईसाई मिशनरी है एवं दूसरे नम्बर पर सशक्त मिशनरी आर्य समाज है, जो किसी सम्प्रदाय/मजहब का प्रचारक नहीं है, बल्कि चारो वेदों, छः शस्त्रों एवं 11 उपनिष्दों को आर्षग्रन्थ मानकर उनका प्रचार करता है। आर्य समाजी अष्टांग योग के अुनसार अन्तर्चक्षु से ध्यान द्वारा निराकार मात्र एक ही परमेश्वर को भजता है, क्योंकि वाह्य इन्द्रियों (वाह्य चक्षु) से दिखनेवाली सारी चीजें-देवी-देवता, पेड़, फल-फूल आदि सभी नश्वर है और मृत्यु को प्राप्त होनेवाले है। आर्य समाज पौराणिक त्योहारों, व्रतों, तीर्थों, गंगा-स्नान, देवी-देवता आदि ब्राह्मणवादी व्यवस्था को अवैज्ञानिक एवं काल्पनिक मानकर उन्हें मान्यता नहीं देता है तथा सम्पूर्ण प्राणियों को मित्र मानता है।

यों तो 18 पुराण ही ऐसे अन्धविश्वासी ग्रन्थ हैं जिनमें अप्राकृतिक, अभौगोलिक, ज्ञान-विज्ञान विरोधी और ईश्वरीय नियमों के विरुद्ध काल्पनिक बातें भरी पड़ी हैं और उन्हीं 18 पुराणों में एक गरुड़ पुराण भी है। इसलिए सम्पूर्ण विश्व में किसी भी सम्प्रदाय / धर्म के लोग गरुड़ पुराण की मान्यताओं के अनुकूल श्राद्ध नहीं करते हैं। यह जानकर आश्चर्य होगा कि मात्र 5 प्रतिशत पौराणिक हिन्दुओं को छोड़कर 65 प्रतिशत विशाल हिन्दू समाज जैसे आर्य समाजी, कबीर पंथी, नानक पंथी, बौद्धिष्ठ, गायत्री परिवार,अर्जक संघी आदि गरुड़ पुराण को समाज के कुछ लोगों को मूर्ख बनाकर ठगने, निरादृत करने और निर्धन बनानेवाली काल्पनिक, अवैज्ञानिक अनार्षग्रन्थ मानकर इसके अनुसार श्राद्ध नहीं करता है। सम्पूर्ण विश्व में माता-पिता मिलकर बच्चे का जन्म देते हैं और सभी बच्चे अपने माता-पिता को स्वर्ग पहुँचाना चाहते हैं। यदि मरने के बाद पितरों को दूध, अन्न, जल, वस्त्र, बिछावन पहुँचाने की कोई वैज्ञानिक व्यवस्था होती तो विश्व में हिन्दुओं के अतिरिक्त ऐसे-ऐसे ज्ञानी एवं समृद्धिशाली लोग हैं, जो श्राद्धकर्म के माध्यम से करोड़ों-करोड़ की सामग्री मृतक पितरों को पहुंचा सकते थे परन्तु गरुड़ पुराण की मूर्खतापूर्ण व्यवस्था विश्व में कहीं भी लागू नहीं है।

शरीर का आरम्भ गर्भाधान से होता है तथा मृत शरीर को जला देने के साथ ही शरीर का अन्तिम कर्म समाप्त हो जाता है। पार्थिव शरीर के पांचों भूत 'तत्व' अपने पांच महातत्वों में विलीन हो जाते हैं। मनुष्य को उन्नत मानव बनाने के लिए ऋषियों ने 16 संस्कारों:- 1-गर्भाधान 2- पुंसवन 3- सीमान्तोन्नयन 4- जातकर्म 5- नामकरण 6- निष्क्रमण 7- अन्नप्राशन 8- चूड़ाकर्म 9- कर्णवेध 10- उपनयन 11- वेदारम्भ 12- समावर्तन 13- विवाह 14- वानप्रस्थ 15- सन्यास 16- अन्तयोष्टि (दाहकर्म) की वैज्ञानिक व्यवस्था की है। इनमें प्रथम 15 संस्कार निर्माणात्मक है और अंतिम संस्कार यानि शरीर को जला देना, गाड़ देना, जल में प्रवाह कर देना है। मृतक को जला देने के बाद शोक सभा, निर्धन को दान, सहभोज, स्मृति में स्मारक का निर्माण आदि कार्य तो लौकिक है और शरीर तथा उसकी आत्मा से इसका कोई संबंध नहीं होता है क्योंकि आत्मा तो अमर है और वह अपने पूर्व जन्म के कर्मों के संस्कार के अनुरूप 84 लाख जीवों में किसी एक जीव में जन्म लेता है।

वेद का आदेश है- भस्मान्त् शरीरम्-यजु० अ० 40 मंत्र 15। अर्थात् शरीर का अन्तिम संस्कार (कर्म)- शरीर भस्म करने (जलाने) तक है, इसके बाद उस शरीर/आत्मा का कोई कर्म शेष नहीं बचता है। इस प्रकार गरुड़ पुराण में दशगात्र, एकादशाह, द्वादशाह, सपिण्डी कर्म, मासिक/वार्षिक गया श्राद्ध आदि लिखी सभी व्यवस्थायें वेद विरुद्ध होने से असत्य हैं तथा मनुष्य को ठगने, निर्धन करने और निरादृत करने की है, जिसे विश्व को कोई भी प्रमाणिक ग्रन्थ मान्यता नहीं देता है। वेद के अनुसार जीवित माता-पिता एवं स्वजनों की प्रेम और निष्ठापूर्वक सेवा करना ही श्राद्ध (श्रद्धा) कहा गया है, क्योंकि श्रद्धा तो जीवित व्यक्ति की ही हो सकती है। श्राद्ध में हम गोदान , सेजदान एवं अन्य दान करते हैं और मृतक माता-पिता को खिलाने के नाम पर ढकना में अन्न-जल डालते हैं, जो कुत्ता , सियार, पक्षी को प्राप्त होता है। वेद ये सारे श्रद्धा कर्म माता-पिता-स्वजनों के जीवित रहते ही करने का आदेश देता है। बुढ़ापे में मुँह में दांत टूट जाते हैं, गले में टॉन्सिल आदि बीमारियां हो जाती हैं, उस समय जीवित माता पिता स्वजनों को मुलायम भोजन, खीर, खिचड़ी, तस्मई आदि देना है, जिसे मरने के बाद मृतक को ढकनी में परोसते हैं। बुढ़ापे में शरीर में मांस की कमी के कारण चौकी, खाट, चटाई गड़ता है, उस समय जीवित माता पिता को सुन्दर सेज, ओढ़न-विछावन देना है। बुढ़ापे में शरीर नाना प्रकार की बीमारियों से ग्रसित हो जाता है, उस समय माता पिता को दूध देना है, जो शरीर में अमृत का काम करता है और उन्हें स्वस्थ एवं दीर्घायु बनाता है। परिवार के जीवित व्यक्तियों को यदि श्रद्धा/ प्रेम पूर्वक भोजन, वस्त्र, बिछावन, मेवा, मिष्ठान आदि दिये जायं तो उनका आशीर्वाद / मंगलकामना हमें प्राप्त होती है। दुर्भाग्य है कि हम जीवित माता पिता स्वजनों की श्रद्धा एवं तर्पण (तृप्ति) नहीं करते हैं और गरूड़ पुराण के अनुसार मरने के बाद खेत मकान बेचकर श्राद्ध कर्म करते हैं। 'कर्म का फल' निश्चित रूप से भोगना है। यदि माता-पिता ने जीवन में अच्छा कर्म किया है, तो उन्हें दूसरे जन्म में स्वर्ग/ सुख प्राप्त होगा, भले ही उनका श्राद्ध कर्म नहीं हो। इसीलिए साधू-संतो, जिनका श्राद्ध कर्म नहीं होता, उनकी सदगति होती है और बुरे कर्म वालों की दुर्गति। पुनर्जन्म के सिद्धांत के अनुकूल भी हम यह निश्चित नहीं कर पाते कि मरने के बाद आत्मा ने कौन जीव (योनि) में नया जन्म लिया है फिर श्राद्ध किसका करें ? इन दोनों सिद्धान्तों पर भी गरूड़ पुराण का श्राद्ध कर्म गलत साबित होता है। सम्पूर्ण शरीर में बाल होते हैं। अतः केवल सिर में छूतका कैसे लगेगा। एक ही माता पिता से लड़का लड़की दोनों जन्म लेते हैं, फिर पुरुष के बाल में छूतका लगे और स्त्री को नहीं, यह कैसी मूर्खता है। अतः सिर मुंड़वाना गलत है। विश्व के लोगों के लिए एक नियम हो, उसे शास्वत नियम कहते हैं, परन्तु क्षौर कर्म और श्राद्ध कर्म तो विश्व में एकाध प्रतिशत लोगों का नियम है, अतः यह असत्य है।

गरूड़ पुराण द्वारा श्राद्ध कर्म एक सामाजिक कोढ़ है और आनेवाली पीढ़ी के साथ अन्याय है। अतः इसे अविलम्ब बन्द करना हितकारी है।

संपर्कः वैदिकाश्रम, शिवाजी पथ, यारपुर, पटना-1 दूरभाष-234040

कानून तोड़ने का कानून

❑ प्रो०राम भगवान सिंह

आज सबेरे-सबेरे मोनू ने चाय का कप तोड़ दिया और उसे पिटाई मिली। वह मुझसे पूछ रहा है, मामाजी, जब भैया ने विश्वविद्यालय का रेकार्ड तोड़ा था तो उसे पिटाई क्यों नहीं मिली, बल्कि उसे तो मिठाई मिली थी। अखबार में उसका फोटो छपा था, सबों ने उसकी प्रशंसा की थी। ऐसा भेदभाव क्यों ? क्या मैं छोटा हूं, इसलिए ? मैं तभी से सोच रहा हूं, कप तोड़ने वाले बच्चे को पिटाई और रेकार्ड तोड़ने वाले बच्चे को मिठाई क्यों ? और फिर दोनों एक ही घर के बच्चे हैं। क्या यही पारिवारिक न्याय है जहां दो भाइयों के बीच भेदभाव बढ़ता जाता है ? इस असामाजिक न्याय को उच्च न्यायालय में चुनौती देनी चाहिए। यह बालकों के अधिकार हनन का प्रश्न है। जब कोई बच्चा विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय का रेकार्ड बाइज्जत तोड़ सकता है तो वह घर में कप-प्लेट और खिलौने क्यों नहीं तोड़ सकता ? ऐसा पारिवारिक कानून काला कानून है। हर बच्चे को इसे तोड़ने का जन्म सिद्ध कानून होना ही चाहिए।

वास्तव में तोड़ना मर्दानगी की निशानी है। यह शक्ति और वीरता का प्रतीक है। रामचन्द्र जी ने इसी वीरता का प्रदर्शन करते हुए शिवजी का धनुष तोड़ा था और पुरस्कार–स्वरूप सीताजी को प्राप्त किया था। अतीत की बात जाने दीजिए। हाल ही में तथागत तुलसी ने नौ साल की उम्र में मैट्रिक की परीक्षा पास कर विश्व रेकार्ड तोड़ा और उसे हर तरफ वाहवाही मिल रही है। उत्तर प्रदेश के प्रताप गढ़ जिले के मसुरिया दीन ने साढ़े आठ फुट की मूंछें रखकर विश्व रेकार्ड तोड़ा और मूंछ-सम्राट बन बैठे। तमिलनाडू के एन० रवि ने चौंतीस घंटे एक पैर पर खड़े होकर विश्व रेकार्ड तोड़ा और आज उसकी प्रशंसा हो रही है। निष्कर्ष यह कि कुछ तोड़कर ही आदमी बहादुर और प्रतापी बनता है। गोंद लेकर फटे कागज-किताब जोड़नेवाले दफ्तरी को कोर्द याद नहीं करता। फेविकॉल से लकड़ी जोड़ने वाले को भी कोई नहीं जानता चाहे उसका जोड़ हाथी भी न तोड़ सके।

संसार में नाम होता है कुछ तोड़ने से, यश मिलता है कुछ तोड़ने से, धन मिलता है कुछ तोड़ने से। अपनी यदाश्त पर दो बूंदों वाली सफेदी डालिए और फिर कल की बातें फकाफक दिखाई देंगी। हमारे नेताओं ने नमक का कानून तोड़ा और आज राष्ट्रीय समारोहों के लिए उनके नाम स्थायी रूप से सुरक्षित हैं। अंग्रेजी सरकार का कानून तोड़ने वाले स्वतंत्रता सेनानियों को यश और पैसा दोनों मिल रहे हैं। अगर आज का उदाहरण चाहिए तो देखिए आयाराम ने अपनी पार्टी को तोड़ा और गयाराम के साथ मिलकर सरकारी सुख सागर में सुख लाभ कर रहा है। आप अपने मुहल्ले के मुंहलगे साहब सुखी राम को भूले न होंगे। सारे सरकारी नियम-कानून तोड़कर आज करोड़ पति हैं। इसीलिए मेरा बिन मांगा सुझाव है-कानून तोड़ो, पैसे जोड़ो। कानून तो मकड़ी का जाला है, जो तोड़े वह सिकन्दर और जो फंस जाए वह मकड़ी।

तोड़ना मानव का स्वभाव है और साथ ही यह प्रकृति का नियम भी है। जरा सोचिए, रात को सोने के बाद सबेरे अगर लोग नींद न तोड़ें तो क्या हो ? तब तो संसार की गाड़ी स्टार्ट ही न हो। कल्पना कीजिए, सभी लोग किसी दिन नींद न तोड़ने का संकल्प दिवस मनाएं तो अपने आप अभूतपूर्व विश्व बंद हो जाएगा। केवल मुर्गे बांग देंगे, कौवे कांव-कांव करेंगे, बिल्लियां म्याऊँ-म्याऊँ करेंगी, कुत्ते भौकेंगे, मवेशी रंभाएगें लेकिन सारी मानवीय क्रियाएं ठप हो जाएंगी। और हम इस दृश्य को देख-सुन नहीं सकेंगे क्योंकि हम तो नींद में बेहोश रहेंगे। लेकिन हमारा स्वभाव जो है, हम तो नींद तोड़ेंगे ही, कोई लाख रोके तब भी। हमारी दिन चर्च्या नींद तोड़ने से शुरू होती है फिर हम अपनी चुप्पी तोड़ते हैं, दस घंटे पूर्व रात के भोजन के बाद उपवास तोड़ते हैं, पड़ोसी के उद्यान से आंख बचाकर फूल तोड़तें हैं और चार सौ बीसवीं बार ईमानदारी का संकल्प तोड़ मंदिर जाकर फिर ईमानदार रहने का संकल्प लेते हैं।

प्रकृति की प्रकृति भी तोड़ने की पक्षधर है। वह तो स्वयं ही नटखट बालिका की तरह अपने पहाड़ और चट्टान सरीखे खिलौनों को तोड़ती रहती है। वह अपनी पनचक्की में चट्टानों को पीस-पीसकर बालू बनाती है जिससे नादान बच्चे और होशियार ठेकेदार बालू की दीवार बनाते हैं और बड़े-बूढ़े बालू पर अपने पैरों के अमिट निशान छोड़ अपना दम तोड़ देते हैं।

सच पूछिए तो तोड़ना एक अनिवार्यता है। महंगाई लोगों की कमर तोड़ती है। और टूटी कमरवाली विकलांग जनता की प्रदर्शनी लगाकर राजनीति की नौटंकी शुरू हो जाती है। पक्ष- विपक्ष के नेतागण टूटी कमरवाली के तेल मालिस में लग जाते हैं। टूटी कमरवाली जनता धन्य-धन्य हो जाती है। अगर उसके पास दूसरी कमर होती तो उसे तुड़वाने को सहर्ष तैयार हो जाती। राजनीति के लिए जनता की कमर टूटना उतना ही आवश्यक है जितना भाषा के शिक्षकों के लिए भाषा की टांग टूटना। हम धड़ल्ले से भाषा की टांग तोड़ते हैं, गोया भाषा न हुई शैतान की प्रतिमा हो गई कि हर कोई पत्थर मार इसे तोड़ रहा है। उधर भाषा के शिक्षक इसे अपना धंधा बना लेते हैं जैसे अंधे को साथ लेकर आंखवाला भीख मांगने को धंधा करता है। इस अंधी अबला को आपे बेधड़क उठाकर पटक सकते हैं, उसे झटक सकते हैं, उसे मसल सकते हैं, उसका आंचल मैला कर सकते हैं। यहां तक कि उसका गला घोंट सकते हैं। भाषा के साथ बलात्कार के मामले मे न कानून दखल देता है और न ही पुलिस। इसे तो नेता की सहानुभूति भी नहीं मिलती।

वादा तोड़ना साहित्य की अनिवार्यता है। प्रेमी-प्रेमिका यदि वादा न तोड़ें तो विरह-वियोग काव्य का गर्भपात हो जाएगा, प्रेम कहानियाँ एकांगी रह जाएंगी। आधे उपन्यासों को लकवा मार जाएगा। उनकी कहानियां बिना नमक और प्याज की सब्जी की तरह नीरस हो जाएंगी। प्रेमी अगर आसमान के तारे तोड़ने का वादा न करे तो प्रेम शीशे की तरह चटख जाएगा। पर आसमान का तारा तो टूटता नहीं, वादा जरूर टूट जाता है और उधर प्रेमी-प्रेमिका का दिल। तभी तो दु:खान्त कहानियों और नाटकों का जन्म होता है, दर्द भरे गीत पैदा होते हैं। दिल का टूटना साहित्य-सृजन के लिए वैसा ही है जैसा बिल्ली के लिए छींका टूटना। दिल के जितने अधिक टुकड़े होगें उससे निर्मित साहित्य में सितारों की जगह पिरोए हुए असली दिल के हीरे की तरह चमक पैदा करेंगे। हाथी मरने के बाद और दिल टूटने के बाद ज्यादा वेशकीमती हो जाती हैं।

तोड़ना आज का युगधर्म और पुण्य कर्म है। बढ़ते चलो, तोड़ते चलो। जोर से बोलो,'हमसे जो टकराएगा, चूर-चूर हो जाएगा'। तोड़ने वाले सड़क पर उतर चुके हैं। परन्तु तोड़ों जात-पात, तोड़ो थोथी परम्परा, तोड़ो घमण्ड, तोड़ो दांत, तोड़ो नाता, तोड़ो दोस्ती, तोड़ो बन्धन, तोड़ो आस और तोड़ो दम मगर प्यार से। रही बात कानून की। कानून तो स्वर्ग के सेब की तरह हमें ललचा रहा है, मानों कह रहा हो-मुझे तोड़ो न ? और सच, कानून न तोड़ो तो वकील क्या धूल फांकेगे ? जज और मजिस्ट्रेट की छंटनी हो जाएगी। कानून की पढ़ाई डायनासोर की प्रजाति की तरह लुप्त हो जाएगी। पर धन्य हैं आज के माफिया नामधारी धर्मात्मा ? उनका मोटो है,' खाओ और खाने दो, कानून को मर जाने दो'। वे कानून को उतने की टांग मुर्गे की टांग से ज्यादा रसदार और गूदेदार होती है। इसे खाते ही आदमी धनवान, बलवान, गुणवान, शीलवान, यशवान और पहलवान हो जाता है। तभी तो इस युग में कानून के शिकार पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है इस जंगल राज में भी। शिकारी एक हाथ में चारा और दूसरे हाथ में गन लिए अपनी मूछों पर ताव देता घूम रहा है और हरकारे डुगडुग्गी बजा रहे हैं। मेरा तो ख्याल है कि जनहित में सर्व सम्मति से हमें अपने संविधान में संशोधन कर कानून तोड़ने का कानून बना देना चाहिए ताकि समय पर काम आवे।

संपर्क: अंग्रजी विभागाध्यक्ष, बी०एस० कॉलेज, लोहरदगा- 835302(बिहार)

न्यायपालिका में कमजोर वर्गों के प्रतिनिधित्व का सवाल

❑ कामेश्वर मानव

गणतंत्र की पचासवीं वर्षगांठ पर भी वही प्रश्नचिन्ह लगा है कि पिछड़ों एवं दलितों का प्रतिनिधित्व न्यायपालिका में क्या है? पचास वर्ष पहले क्या था और आगे के पचास सौ वर्षों में क्या रहेगा? वस्तुत: जजों की नियुक्तियों को लेकर उठने वाले विवादों का एक मात्र मुख्य कारण न्यायपालिका में पिछड़ों एवं दलितों के प्रतिनिधित्व की नगण्यता और गहराती हमारी जातीय व्यवस्था है। सबके चेहरे पहचान में आ गये हैं जिसे आमजन जानबूझकर बेजान-सा भुगते जा रहे हैं जो हमारी आजादी के पचास वर्षों की कमाई मानी जा सकती है।

ध्यातव्य है कि न्यायपालिका ही ऐसा क्षेत्र है जहां जजों की नियुक्ति की प्रक्रिया बिना किसी परीक्षा या साक्षात्कार के पूरी की जाती है, जिसमें पिछड़ों एवं दलितों के प्रतिनिधित्व की शून्यता या नगण्यता अनजाने बनी हुई है या किसी विशेष योजना के तहत बहस का राष्ट्रीय मुद्दा है तथा नियुक्ति की यह प्रक्रिया जनतंत्र के लिए वरदान है या अभिशाप। हमारे देश के सामने एक बहुत बड़ा प्रश्न है कि क्या पिछड़ों-दलितों के भाग्य से जुड़ी बेचारगी के अलावे उन्हें और कुछ नहीं ही चाहिए? क्या किसी सामाजिक साजिश के तहत पिछड़ों-दलितों को न्यायपालिका में समुचित प्रतिनिधित्व नहीं मिल पा रहा है या सचमुच योग्यता के सभी प्रमाण-पत्र रखते हुए भी अयोग्य कहलाना उनके भाग्य से बांध दिया जाता है?

एक ओर आजादी की लड़ाई में पिछड़ों दलितों की भागीदारी को नकारा नहीं जा सकता, देश सबका है तथा नौकरियों में आरक्षण व्यवस्था को भी नकारा नहीं जा सकता। मण्डल कमीशन की सिफारिशों को लागू करने सम्बन्धी सर्वोच्च न्यायालय के फैसले को भी नकारा नहीं जा सकता, किन्तु उच्चत्तर न्यायिक सेवाओं में पिछड़ों-दलितों के आरक्षण की बात को सहजता से नकारते हुए सभी रिक्त पदों को तेजी से भरे जाने की जरूरत दिखायी जा रही है। मुकदमों के निपटारे तेजी से नहीं हो रहें हैं-इससे भी अधिक विचारणीय बात है कि मुकदमों के निपटारे किस ढंग से हो रहे है। क्या पिछड़ों, दलितों एवं शोषितों को समान परिस्थिति में समान आदेश एवं अनुतोष खोजने का भी अधिकार नहीं है? क्या प्रतिनधित्व की समानता के अभाव में इसमें सुधार या परिवर्तन संभव है? यह राष्ट्रीय स्तर पर बहस का मुद्दा है।

तेजी से हो रहे सत्ता एवं शक्ति के विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया के क्रम में भी सत्ताधारी वर्ग अपने व्यामोह के कारण सूई की नोक भर भी जमीन देने को तैयार नही है। अवसर की समानता के अभाव में पैरवी की प्रतियोगिता में समानता की बात बिल्कुल हास्यास्पद है वैसे ही-जैसे हथियारबन्द सिपाही के सामने निहत्था। यह ठीक है कि हमारा संविधान वर्गहीनता एवं बराबरी की सलाह देता है किन्तु हमारा समाज वर्गयुक्त है। सर्वत्र वर्ग बना हुआ है। सत्ताधारी या उच्चवर्गीय व्यक्ति के अनुकूल विधि-विधानों का निर्माण हो जाता है। हमारे प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को भी कहने की जरूरत पड़ गयी कि बाहर से देश जनतंत्र की मजबूती लिये है किन्तु **''एलेक्शन फार्स''** है! ऐसी स्थिति में स्पष्ट हैकि आमजन भेड़ बकरियों की तरह हांके जा रहे हैं जो उनकी नियति का अभिन्न बन चुका है।

कभी काम के अधिकार को मौलिक अधिकार में जोड़ने की चर्चा चली थी। इसी घोषणा पर जनता उन्हें सत्ता में लायी थी.....चर्चा पूरी भी नहीं हुई कि असंख्य घोटालों और उसपर लिपा पोती की वसूली नहीं हुई।चुनाव में अनाप-सनाप के खर्चों को समुचित ठहराने की प्रक्रिया में चुनावी खर्चों की बढ़ी हुई सीमा ने गरीबों, दलितों एवं शोषितों को राजनीति से काट दिया। अब चुनाव पूंजीपतियों का रह गया है जिसे चुनाव आयोग एवं न्यायपालिका के द्वारा भी देखा जा रहा है।

दूसरी ओर भारत के राष्ट्रपति श्री के.आर. नारायणन द्वारा पिछड़ों, दलितों एवं कमजोर वर्ग के लिए न्यायपालिका में आरक्षण दिये जाने की सलाह के विपरीत मुख्य न्यायाधीश ने न्यायपालिका में आरक्षण नहीं दिये जाने की बात कह डाली जो एक विचारणीय बिन्दु है। इससे न्यायविदों में मतैक्यता का अभाव है तो पिछड़ों एवं दलितों में विछोह उनकी रही-सही आशा पर पानी फिर गया और स्पष्ट हो गया कि अगले सौ वर्षों तक दलितों पिछड़ोंका उच्च न्यायपालिका में प्रतिनिधित्व की न्यूनता या शून्यता बनी रहेगी जो अभी करीब पांच सौ पचास हाईकोर्ट जजों में पिछड़ों एवं दलितों की संख्या करीब पच्चीस है जो पांच प्रतिशत से भी नीचे है।

विद्वानों ने जजों की नियुक्ति की प्रक्रिया को ही बदल डालने की जरूरत पर बल दिया है।

क्योंकि यह प्रक्रिया लोकतांत्रिक कम, साम्राज्य वादी एवं सामन्तवादी अधिक लगती है। दूसरी ओर उच्चत्तर न्यायिक सेवा के गठन के मामले को जानबूझकर संसद की फाईलों में दाबकर रखा जा रहा-हैं। विचारणीय है कि न्यायिक व्यवस्था एवं न्यायपालिका हमारी सामाजिक व्यवस्था का नियामक है।इसी कारण हीरे की चोरी और खीरे की चोरी में विवेक से फैसला होता है। विज्ञान के किसी फार्मूले की तरह नहीं । ऐसी स्थिति में बहुसंख्यक वर्ग को न्यायपालिका में प्रतिनिधित्व की समानता से नकारना षड्यंत्र-सा लगता है जो स्वाभाविक है। जिसके लिए लम्बे संघर्ष की जरूरत है।

हिन्दुस्तान टाइम्स के सम्पादकीय में राष्ट्रपति भवन के स्रोत से पिछड़ों-दलितों के न्यायपालिका में अपर्याप्त प्रतिनिधित्व या प्रतिनिधित्व के अभाव की ओर ध्यानाकर्षण की बात को प्रेसीडेन्सीयल एक्टीविज्म एवं अन्यायपूर्ण करार दिया है जो बिल्कुल गलत, भ्रामक एवं सामाजिक शालीनता के विपरीत है, क्योंकि देश के सर्वोच्च पद पर रहनेवाले को समय की मांग को नकारने की सीख देना यह अब तक हो रही अनदेखी षड्यंत्र में साथ देना आमजन की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करना है। प्रतिनिधित्व की समानता के अभाव में न्यायपालिका स्पष्टत: विकलांग दीख रही है और पिछड़ों-दलितों के प्रतिनिधित्व को न्यायपालिका में बढ़ाये जाने की वकालत समय की जरूरत है।

संपर्क-अधिवक्ता उच्च न्यायालय, पटना-1
दूरभाष-226441

भारत में नारी शोषण

❑डॉ०नारायण दास

भारत की स्थिति एक दीपक सी है। जैसे दीपक दूसरों को प्रकाश तो देता है परन्तु उसके पेंदी तले सदा अंधेरा ही रहता है। यह देश दूसरे देशों को मानवतावादी सिद्धांत का पाठ पढ़ाता है। इसका कहना है, भारत मानवता की प्रखर किरणों से सारे विश्व में प्रकाश बिखेरता रहेगा। परन्तु नारी शोषण से संबधित यहां ऐसी ऐसी घटनाएं होती रही है और हो रही है। कि इस देश के विद्वतजन अगर भारतीय सांस्कृतिक संपदा को दृष्टिगत करते हुए कुछ बातें करें तो उन्हें मुंह की खानी पड़ेगी।

भारत में आज से नहीं हजारों साल से नारी अपमानित और शाोषित होती आ रही है। इसके लिए यहां के धार्मिक ग्रंथ और पौराणिक इतिहास साक्षी हैं।

प्राचीन युग की घटना है चाहे यह कल्पित या सत्य कथा है कहा नहीं जा सकता। गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या का इन्द्र के द्वारा शीलहरण किया गया था। जिसे आज की भाषा में बलात्कार की संज्ञा दी जा सकती है। इसपर ऋषि ने अहिल्या और इन्द्र दोनों को श्राप दे दिया था। क्या यह घटना समाजिक न्याय के अन्तर्गत थी?

नारी सृष्टि की धात्री कही जाती है। आध्यात्मिक दृष्टिसे यह शक्ति स्वरूपा भी है। परन्तु आज इसकी दशा क्या है? यह पुरुष प्रधान देश रहा है। इस लिए पुरुष की तुलना में नारी निर्बल ही मानी जाती है। राज्य सत्ता की मर्यादा तथा रूढ़िवादितापूर्ण धर्माचरण, नारी भोग्या समझी जानेवाली, क्रीड़ा की वस्तु, अभागिन नारी के पुरुष अपने बराबरी का स्थान कहां तक देगा?

रामायण काल के पूर्व, राजा दुष्यन्त हस्तिनापुर के राजा थे। एक दिन वे आखेट में गये। मृगा की लालच में वे जंगल के रास्ते, बहुत दूर निकल गए। वापस लौटते समय वे थकान मिटाने के लिए ऋषि दूर्वाशा के आश्रम में ठहर गये। उनकी लड़की शकुन्तला अति रूपवती थी। शकुन्तला और दुष्यन्त प्रेम वन्धन में आवद्ध हो गए। दुष्यंत कुछ दिन वहीं ठहर गए थे। दोनों में गन्धर्व विवाह हो गया। विवाह के बाद उन्होंने लौट जाने की इच्छा व्यक्त की । शकुन्तला ने कहा मैं तो अब आपकी पत्नी हूं, मैं भी साथ चलूंगी। दुष्यन्त उसे एक अंगुठी पहना कर सांत्वना दी कि बाद में वह दरबार में पहुंच जायेगी तो वह ससम्मान पत्नी रूप में स्वीकार कर लेगा। समय पर जब वह उनके दरबार हस्तिनापुर पहुंची तो पहचानने से इन्कार कर दिया और तिरस्कृत कर उसे निकाल दिया जबकि वह गर्भवती थी। उसके साथ यह कैसी विडम्बना थी, नारी शोषण का यह कैसा अन्याय था। दूसरी घटना रामायण काल की है। लंका से रावण बध कर जब सीता को लंका ले आये, तो राम कुछ दिनों बाद एक प्रजा की पत्नी (धोबिन)ने आपसी विवाद में उस धोबन के क्षरा सीता के प्रति कुत्सित व्यंग्यमय उलाहना सुना गया। उस उलाहना को सुनकर, पुरुषोत्तम कहलाने वाले राम ने सीता को निकाल दिया। जब कि पवित्रता की साक्षी में उसकी अग्नि परीक्षा हो चुकी थी। उस समय वह भी गर्भवती थी। उसे अन्त में श्री वाल्मिकी जी के आश्रम में रहकर जीवनयापन करना पड़ा। कितना कष्ट हुआ होगा। नारी शोषन का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है।

तीसरी घटना महाभारत काल की है जो द्रौपदी के साथ घटी। पहली बात तो विचारणीय है कि द्रौपदी को एक पत्नी रहकर पाँच पत्तियों की सेवा अलग-अलग करनी पड़ती थी। दूसरी बात वे पांचों भाई जूआ के खेल में जब सब राज वैभव हार गए तो द्रौपदी को ही अन्त में दाँव पर लगा गए थे और हार भी गए। परिणाम स्वरूप द्रौपदी को नग्न करने के ख्याल से चीर-हरण अर्थात उनकी साड़ी खीचना प्रारंभ किया गया था। उस समय पांडवों का पुरुषार्थ कहां गायब हो गया था ? भले बाद में वे जो कुछ भी किये हो। वे पुरुषार्थी, निरीह निर्बल नारी को क्रीड़ा का माध्यम समझे हुए थे। क्या यह प्रमाण स्वरूप नारी शोषण है या नहीं ?

नारी को भोग्या समझा जाना धर्माचरण का आडम्बर ही कहा जा सकता है। उसे निकृष्ट, नरक तथा निर्बल समझा जाना ही पुरुषों के लिए नारी पुरुषों के लिए नारी शोषण का माध्यम बनी। हिन्दुओं के धर्म ग्रंथ रामायण में भी नारी को नीच और अधम समझ कर

ढोल गंवार शूद्र, पशु नारी,
ये सब ताड़न के अधिकारी।

लिख दिया गया है। यह पुरुषों के लिए साक्ष्य बन गया है। परन्तु लोगों को यह भी तो समझना चाहिये कि रामायण में यह भी लिख दिया गया है-

पर हित सरस धरम नहीं भाई,
पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।

यह किस लिए लिखा गया? पढ़कर समझने की सामर्थ्य प्राप्त करनी चाहिये।

नारी शोषण का दूसरा पहलू जाति वर्गीकरण है। दलित समाज की नारी कमजोर समझी जाती है क्योंकि निर्धन और अछूत होने की वजह से वे

तिरस्कृत हैं। इस लिए उनके पक्षधर समाज में शायद ही कोई मिले।

उदाहरण स्वरूप समस्तीपुर के निकट के गांवो में भुखली देवी और गायत्री देवी को निर्बल, गरीब अछूत समझ कर उन्हें नंगी कर पीटते हुए गांव में घुमाई गई। उस समय वहां की मानवता मर चुकी थी। यह पाखंडी समाज उस हश्र को कौतुहल से देख रहा था। इस प्रकार की घटनाएं-कानपुर, मेरठ, राजस्थान, इलाहाबाद, मध्य प्रदेश तथा महाराष्ट्र में भी घटी। सिर्फ दलित महिलाओं के साथ ही क्यों? क्या इसे रोकी नहीं जा सकती ?

दक्षिण भारत मे प्राचीन काल से ही धर्मान्धता से ग्रसित सवर्ण हिन्दु समाज भारतीय दलित नारियों को शोषण करता आ रहा हैै बंगाल का एक लेखक ताराचन्द्र चटोपाध्याय, हिन्दी में देवदासी किताब लिखकर प्रमाणित किया है कि वहां देवदासी नाम से मन्दिरों में झाड़ू-बहारू और वर्तन वासन की सफाई करती थी उन्हें मन्दिर प्रवेश निषेध था। परन्तु उनसे वेश्यावृत्ति भी करायी जाती थी।

आज भी कर्नाटक में देवदासी प्रथा की रोक के बाद भी प्रति वर्ष एक हजार के लगभग लड़कियां, देवी को चुपचाप समर्पित कर दी जाती हैं। भारत गरीब देश है। गरीबी की मार से मजदूर वर्ग के लोग त्राहिमाम कर रहे हैं। उनकी लड़कियाँ, पत्नियाँ और वे स्वयं भी मजदूरी करते हैं। उनके लिए-

टकाकर्त्ता टकाधर्त्ता टकामोक्ष प्रदायक:
जस्य गृहटका नास्ति, हाय टका टकटकायते।

वाली परिस्थिति होती है। इसलिए ये खेतों में, कोयला खानों में, राजमिस्त्रियों के साथ ईंट के भट्टीं में मजदूरी करनी पड़ती हैं, जहां उन्हें यौन उत्पीड़न का शिकार होना पड़ता है।

यहां निरक्षर निम्नश्रेणी के लोगों की बात तो दूर रही, शिक्षित सम्पन्न लोग भी नैतिक स्तर से गिर गये हैं। ये गरीब, दलित महिलाओं के साथ जबरन यौनाचार करते हैं। अपराधीकरण से ग्रसित महिलाएं अगर प्राथमिकी भी दर्ज कराने थाने जाती हैं तो पुलिस वाले उन्हें डांट कर भगा देते हैं। क्योंकि अपराधियों से उनकी मिली भगत होती है।

आज गरीब और निर्बल परिवार की लड़कियों की ऐसी दशा है कि वे भयभीत सी हैं।, जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये, के विचार अपना कर जी रही हैं। आखिर, इस स्थिति का दायित्व किस पर है? इन्हें अभय दान कौन दिलायेगा?

संपर्क: स्टेशन रोड, समस्तीपुर

'जाति धर्म सब एक समान'-युग शिल्पी का विरल विधान

❑ अशोक जोशी

इक्कीसवीं शताब्दी उज्ज्वल भविष्य लिये पधार रही है, जिसका स्वागत करने के लिए विश्व के विचारशील लोग उत्साही व उतावले हो रहे हैं। जबकि जन सामान्य के भीतर से प्रश्न उठ रहा है कि, कैसे होंगे आने वाले दिन ?

हम समझते हैं, विश्व के समस्त देश, विविध छोटे-मोटे राष्ट्र, जब मेल-मिलाप से रहेंगे, बांट कर खाएंगे, तरीके से पहनेंगे, फूलेंगे-फलेंगे तब संघर्ष की कोई बात ही नहीं रहेगी। **मानव में देवत्व व धरती पर स्वर्ग लाने हेतु, एक राष्ट्र-एक भाषा, एक धर्म-एक आशा के स्वर्णिम सूत्र को चरितार्थ करेंगे वे दिन !** और हम यह भी चाहते हैं, हंस हो या कौआ, शेर हो या बकरा, कोई किसी को देखकर न कतराएगा, न नाक-भौं सिकुड़ाएगा, या फिर न सहमता-डरता दिखेगा न तो दूम दबाये भाग खड़ा होगा। हम यहां हवाई बातों का या भविष्यवाणियों का जिक्र नहीं कर रहे हैं। जीवन भर एक नया युग लाने के लिए कार्यरत रहने वाले, तप करने वाले, नवयुग के न केवल दृष्टा, सृष्टा भी माने जानेवाले युग-शिल्पी, युगपुरुष का हम यहां परिचय देना चाहते हैं, स्मरण करना चाहते हैं, जिसे लोग परम पूज्य श्रीराम शर्मा आचार्य जी के नाम से जानते हैं। जिन्होंने सुयोग्य ब्राह्मण को भी दिया उचित सम्मान व दीन-हीन, दलित-पतित को भी गले लगाया। देव संस्कृति दिग्विजय हेतु आपने जनमानस परिष्कार का महायश चलाया।

ब्राह्मण या पुरोहित आपने उसे माना, जो राष्ट्रहित के लिए जागृत रह कर कष्ट उठाता हुआ आगे बढ़ता रहे। **'वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः'।** जो स्वयं कठोरता अपनाए, औरों के लिए कोमलता बटोरता-बिखेरता चले। जो सादा-संयमी-सात्त्विक जीवन जीता हुआ विश्व के लिए, दलित के लिए, तन-मन-धन की न्यौछावरी करता हुआ, लोक-शिक्षण का अविरत प्रसारण करता रहे। सच्चे सवर्ण, अच्छे पुरोहित को सदैव शुद्र याने सेवक बने रहना शोभा देता है, न कि शोषक, घमंडी, आडंबरी !

और दलित आपने उसे कहा जो सवर्णों सम्पन्नें-शोषकों द्वारा दबाया-कुचला-सताया गया है। आपने कहा कि मनुष्य होने के नाते, वह भी अन्य वर्गों-जातियों की तरह आगे बढ़ने-ऊंचे चढ़ने की तमाम साधन-सुविधाओं का अधिकारी है। आपने यह भी कहा, शुद्र दलित नहीं, श्रमजीवी बने। दासत्व नहीं सेवा अपनाए। बेअक्ली छोड़कर अक्ल की उपासना करे, अशिक्षा से बचकर शिक्षा का साथ निभाए। व्यसन-दूषण-कुरीतियों को छोड़कर अगर वह गंदी हरकतों से बाहर निकल सकें, तो वह भी सच्चाई-शुद्धता-सेवा-श्रम की यह चलकर सुखी-सम्पन्न बनेगा ही।

यह महापुरुष पुज्य श्रीरामशर्मा आचार्य जी, जिन्होंने जाति या धर्म के नाम पर समाज में प्रचलित ऊंच-नीच के भेद भावों का विरोध करते हुए 'जाति धर्म सब एक समान' का नारा लगबाया **'इक्कीसवीं' सदी उज्ज्वल भविष्य'** सूत्र भी दिया, जिससे फल करने हेतु और भी कई नारे देश भर में पोषित किये। यों तो राजकराणी लोग भी आये दिन तरह-तरह की नारेबाजी करने रहते हैं। वैसे 'गंगा गये गंगादास, जमना गये जमनादास' कहे जाने वाले नारेबाजों की तो बात ही अलग रहती है। नारों-सूत्रों मंत्रों के गुंजन-गान मात्र से क्या होगा? चमत्कार तभी दीखेगा,जब चेतना-चिंतन, चरित्र में मेल हो। सफलता तभी मिलेगी, जब विचार-वाणी-वर्तन में विभिन्नता न हो। जिस युग नेता की हम यहां बात कर रहे हैं, ऐसे-वैसे, ऐरे-गैरे नहीं थे। पहले स्वयं आचरण करते थे, तभी औरों को करते-करवाते थे। तपश्चर्यापूर्ण उनका पूरा जीवन इस बात का प्रमाण है। 'निज सुख की परवाह न करके जो औरों के हित जिए'। दूध-घी नहीं, सूखी रोटी खाते थे। स्वदेशी मोटा खद्दर पहनते थे।

पुराण कहते हैं कि, घोर कलिकाल के पाप-ताप नष्ट करके नयी व्यवस्था बनाने हेतु किसी सम्बलपुर में युगावतार का अवतरण होगा। हमारे इस युगशिल्पी ने भी चम्बल क्षेत्र से अनन्त दूर आंवल खेडा में जन्म लिया, यह क्षेत्र-खेडा भी उस पुराणेरत सम्बल का ही अपभ्रंश नया नाम लगता है, ऐसी श्रद्धावानों की एक मान्यता है। जो हो, आप असाधारण पुरुष थे एवं असाधारण युग-आंदोलन चला कर रख गये हैं, इसमें तो कोई सन्देह नहीं है। शेष समय आने पर ज्ञात होगा। वैसे किसी भी अवतार को उसके युग में, जनसामान्य द्वारा भली-भांति पहचानने में पर्याप्त देरी ही हुई है।

गायत्री महामंत्र जिसको जय कर देवत्व प्राप्त करने का अधिकार केवल वर्ग विशेष को ही है, ऐसी मान्यता का खंडन करते हुए पुज्य श्री राम शर्मा आचार्यजी ने **'मानव मात्र एक समान** कहते हुए, इस महामंत्र को हर किसी के लिए सुलभ बना दिया। मानव मात्र को देवत्व प्राप्ति का पथदर्शन करा दिया। जीवन को जो परिष्कृत कर ले, भाव-विचार-कर्म याने आत्मा-मस्तिष्क-देह जिनके सुयोग्य बनने लगे, वही उत्थान की पात्रता-योग्यता रखता है। अन्यथा उच्च कुल में जन्म होने मात्र से किसी को उच्चता नहीं मिल जाती।

अपने भारत की स्वतंत्रता के लिए, राष्ट्रसेवा के लिए, काम किया। इस हेतु जेल भी गये। हिमालय में बार-बार तपश्चर्या भी थी। अश्रव मर्यादिक यज्ञ करवाये। देश-विदेश में गायत्री-मंत्रों को गुंजान-फैलाते हुए, सर्वत्र कई शक्ति पीठों-प्रज्ञापीठों-गायत्री परिवार शाखाओं को कार्यरत किया। विविध भाषाओं में छपे लाखों पत्र-पत्रिका -ग्रंथ आदि के जरिये युगानुरूप नत विचार देव हुए नयी शताब्दी के साथ नवयुग का पथ प्रशस्त किया। गायत्री तपोभूमि, मथुरा(उ०प्र०), ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान, शांतिकुंज, हरिद्वार जैसे विश्व प्रसिद्ध युग परिवर्तनकारी आंदोलन के धाम आपने प्रस्थापित किये। जहां से युगनिर्माण योजना, विचार क्रान्ति अभियान, महिला जागृति अभियान की विश्ववयापी गतिविधियां चल रही हैं। ब्रह्मवर्चस प्रयोगशाला में अत्यंत आधुनिक यंत्रों कम्प्यूटरों के माध्यम से वे सब बातें सिद्ध-प्रमाणित की जाती हैं, जिनकी आज की दुनिया को परम आवश्यकता है। तर्क-तथ्य-विज्ञान युक्त पद्धतियों से प्रमाण मिलने के कारण, यहां, की रीति नीतियों के इन्कार की कोई गुंजाइश ही नहीं रह जाती।

अनास्था के असुर के हनन हेतु, परिष्कृत मानव-शक्ति द्वारा जीवन भर संघर्ष चलाने वाले, 'गुरुदेव' मानेजानेवाले, यह युगपुरुष आज हमारे साथ नहीं रहे हैं। देवदूत का आना और चला जाना कईयों को तो पता ही न चला। ऐसे महान युग-नेतृत्व के न रहते हुए भी, आज भी उनके चलाए हुए चक बराबर चल रहे हैं, उनके दिये हुए मंत्र-सूत्र नारे बराबर बुलन्द किये जाते हैं। आइए हम भी इन की गुंज की महिमा अनुभव करें..!!

'जाति धर्म सब एक समान'
'मानव मात्र एक समान'
'नया सबेरा नया उजाला इस धरती पर लाएंगे'
'नया समाज बनायेंगे, नया जमाना लायेंगे'

'प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो!' सावधान...युग बदल रहा है ! इक्कीसवीं'सदी उज्ज्वल भविष्य !!'

संपर्क- सम्पादक, 'युगचिन्तन', मजेवडी, जूनागढ़, गुजरात

पीलिया रोग का होमियोपैथी उपचार

❑ डॉ० चन्द्रेश्वर प्र० साह

पीलिया एक विषाणु रोग है। यकृत के अन्दर पित्ताशय का स्थान है। उसी पित्ताशय से निकला हुआ पित्त वर्णक इतना बढ़ जाता है कि यकृत कोषों द्वारा उसे ग्रहण नहीं किया जा सकता जिससे वह पित्त आंतों में नहीं जाकर रक्त-नलिकाओं में बिखर कर मिल जाता है। परिणामत: आंख, मुंह, हाथ, पैर, हाथ-पैरों के नाखून, समूचा शरीर पीला हो जाता है जिसे पीलिया, पाण्डु, कमलवाय और अंग्रेजी में जॉन्डिस रोग कहते हैं। इस रोग के आक्रमण से शरीर के लालरक्त कण क्षीण हो जाते हैं और **"बाइलीरूबिन"** नामक पीले पदार्थ की वृद्धि हो जाती है जिसका पता पैथोलोजिकल जांच से स्पष्ट दिखाई पड़ता है। जॉन्डिस रोग दो प्रकार का होता है-**हिपाटोजिनस** यानि यकृत जनित, हिमाटोजिनस।

कारण:- पीलिया रोग होने के कई कारण हैं- 1. पित्त में पथरी होने पर 2. पित्त की राह पर अर्बुद किसी बाहरी चीज का दबाव 3. पित्त नली के अन्दर कृमि का प्रवेश 4. अशुद्ध नल का पानी पीने पर 5. सड़ी-गली बासी एवं दूषित चीजें खानेपर 6. चूहे के मल या पेशाब, किसी बर्तन में पड़ जाने पर उस बर्तन में जल पीने से 7. घी, तेल, डालडा, लाल मिर्च, राई आदि उत्तेजक एवं गरिष्ठ भोजन अधिक करने पर 8.अन्धाधुन्ध शराब एवं मादक द्रव पीने पर 9. मन्दाग्नि 10. सर्दी लगकर पित्त नली श्लैश्मिक झिल्ली का प्रदाहित हो जाने पर। अन्तिम दोनों कारणों से होनेवाले पीलिया रोग को प्रदाहित अर्थात इन्फ्लामेटरी कैटरल जाण्डिस कहते हैं और यही ज्यादातर रोगियों में पाया जाता है।

लक्षण:- अधिक थकावट, भूख का खत्म हो जाना, चक्कर आना, कब्ज रहना, पेट फूलना, खट्टी डकारें, कभी-कभी जी मिचलाना नाखून, मूत्र पीला हो जाना और अन्त में शरीर भी पीला हो जाना, पसीना तक पीला निकलने लगना, पाखाना का रंग उजला हो जाना, बदबुदार चिपचिपा मल होना, नाड़ी की गति धीमी हो जाना, नींद नहीं आना, बहुत कमजोरी का अनुभव होना इत्यादि।

उपचार:- पीलिया रोग में शरीर का बहुत ही महत्वपूर्ण एवं आवश्यक हिस्सा यकृत (लीवर) आक्रान्त होता है इसलिए इस रोग के उपचार में यकृत पर नजर रखते हुए दवा का चुनाव करना पड़ता है। होमियोपैथी में रोग के नाम से दवा का सही चुनाव नहीं होता है बल्कि दवाओं के लक्षण तथा रोगी के लक्षण जब सम होंगे तभी दवा ठीक से काम करती है। इसी का नाम है सदृश विधान अर्थात सम: सम सममति जिनको होमियोपैथी का थोडा भी ज्ञान है वे जानते हैं कि सोरा एक सार्वभौम रोग विष नाशक दवाओं का सरताज सल्फर है। इसीलिए स्व०डॉ०राय बहादुर विश्वभंर दास के अनुसार **सल्फर 200** की शक्ति से पीलिया रोग की चिकित्सा शुरू की जाती है। दूसरे दिन से **चेलिडोनियम-6** हर तीन घंटे पर एक खुराक दवा दी जायेगी। इससे यह रोग छूट जायेगा और अन्त में सल्फर 200 एक खुराक देकर चिकित्सा बन्द की जा सकती है।

होमियोपैथी की तीसरी महत्वपूर्ण दवा **मर्कशौल** है। गाढ़ी मैल से भरी, मोटी थुलथुली जीभ, यकृत में खूब दर्द, दाहिनी ओर सीने मे दर्द, क्वीनाइन के दुषप्रयोग से पीलिया होने में

+ सेहत-सलाह

आप अपनी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का निदान राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हमारे स्वास्थ्य विशेषज्ञ डॉ०एस०एन० आर्य से पा सकते हैं।

समस्याएं निम्नलिखित पते पर भेजें।

डॉ०संतोष कुमार, प्रभारी,
सेहत सलाह, राष्ट्रीय विचार पत्रिका
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800001
दूरभाष : 228519

मर्कशौल अच्छा काम करता है।

नक्स भोमिका चौथी महत्वपूर्ण दवा है। शराब पीने वालों की पीलिया में कब्ज की हालत में या खैनी, बीड़ी सिगरेट अधिक पीने वालों कि लिए यह दवा रामवाण के समान काम करती है।

ब्रायोनिया पांचवी दवा है। यकृत में सूजन हिलने-डोलने पर तकलीफ बढ़ जल गर्मी या दबाव से आराम मालूम हो तो ब्रायोनिया उत्तम दवा है।

आर्सैनिक अल्ब छठी दवा है। पीलिया रोग में जब मलेरिया के ज्वर या सन्निपातिक (टाइफॉयड) ज्वर की स्थिति पायी जाय, अदम्य प्यास मगर थोड़ी-थोड़ी, घबराहट, बेचैनी हो तो आर्सेनिक दवा से पीलिया रोग छूट जाता है।

चायना सातवीं महत्वपूर्ण दवा है। यकृत एवं प्लीहा दोनों बढ़े हुए हों, भूख की बहुत कमी, कभी-कभी राक्षसी भूख, पेट फूला, डकार आनेपर भी आराम नहीं होने की स्थिति में इस दवा का प्रयोग करना चाहिए। हैनिमैन साहेब की यही प्रथम दवा हे जिसने इतने बड़े विज्ञान को जन्म दिया।

काईअस मेरि क्यू, कालमेघ क्यू, बेर्बरिसी भलगेरिस क्यू अर्थात मदर टिंकर का सादे का सादें वाली के साथ पीलिया रोग में इस्तेमाल करने पर बहुत फायदा करता है। मुंह का स्वाद तीता, मिचली, कै तथा यकृत में खून जमा हो जाय तो ये दवाएं विमेव फायदा करती हैं।

इन सभी दवाओं के अलावे लक्षणानुसार, **बेलाडोना, लाइकोपोडियम, हाइड्रैस्टीस, पोडो फाइलम, कल्केरिया कार्व, प्लम्बम, सिपिया इपिकाक, पापाया** इत्यादि भी काम करती है।

बिशेष तली हुई, डालडाा से युक्त, मसालेदार खट्टी चीजें, तेल एवं चर्बीयुक्त चीजे खाने पर तो यकृत के ऊपर बहुत दबाव पडता है तथा चिकनापन छा जाता है। इससे बचने के लिए ही फलों के रसों का प्रयोग किया जाता है। पीलिया रोग में सर्दी सूख जाती है, बल्कि ठंडे तथा चर्वी एवं तेल से पड़े वस्तुओं का इस्तेमाल भी इसीलिए किया जाता है कि सूखी हुई सर्दी वापस आ जाय तथा लीवर का फंसन शुरू हो जाय। सर्दी आ गई तो शुभ लक्षण मानना चाहिए। फलों में आंवला के रस के साथ शहद का प्रयोग से कोढा साफ रहता है। यकृत के सभी प्रकार की बीमारियों में इसका रस फायदे मन्द है।- अनार का रस आंत के सूखे मल को बाहर निकालता है। आलू बुखारा की चटनी पीलिया रोगी को बहुत आराम पहुंचाती है। ईख का रस ग्लूकोज देकर पीना चाहिए। इसके पाचन शक्ति में बल मिलता है। नारियल का डाभ पीना चाहिए। कागजी नींबू का रस को चीनी के शर्बत में मिलाकर पीना चाहिए। दूध का क्रीम हटाकर स्कीम्ड मिल्क लेना चाहिए। पका पपीता दिया जा सकता है। मूली का विशेष रूप से प्रयोग करना चाहिए। मूली के पत्ते के आधे पाव रस में चार-पांच चम्मच चीनी या मधु मिलाकर खाली पेट में पीने से आशातीत लाभ होता है।

मौसमी, मीठा संतरा, बेदाना इत्यादि के रस के सेवन से खास करके उसमें ग्लूकोज मिला देने से रोगी की पाचन शक्ति ठीक होती है, भूख लगती है तथा कमजोरी शीघ्र दूर होती है। रोगी को कड़ी चीजें खाने को नहीं देनी चाहिए। मासाला का प्रयोग एकदम बन्द होना चाहिए। उबाला हुआ भोजन ही फायदेमन्द होता है। खाने में रोटी, सूजी, रस, शर्बत इत्यादि का प्रयोग ही पीलिया रोगी के लिए सर्वोत्तम भोजन का काम करता है।

चिकित्सक की हैसियत से पीलिया के रोगी के सबसे महत्वपूर्ण सुझाव दवा के रूप में यही दिया जा सकता है कि वह वेड रेस्ट में कुछ दिनों तक रहे। आराम बहुत ही जरूरी उपचार है। अगर रोगी बीमारी की हालत में भी कुछ न कुछ करता रहे तो वही बीमारी मारान्तक यानि जानलेवा साबित हो सकती है। पानी का इस्तेमाल हमेशा उबालकर ठंढा करके करना चाहिए।

संपर्क: संजय गांधी नगर, हनुमाननगर
कंकड़बाग कॉलोनी पटना-20

हिन्दी में हाइकु लेखन और पतझर की सांझ पर विचार संगोष्ठी

प्रस्तुति-बिन्देश्वर प्रसाद गुप्ता

कविता की स्पन्दन शक्ति जो मनुष्य के प्राण में शक्ति भर देती है, वह किसी और दूसरे के माध्यम से नहीं संभव हो सकता है।

पिछले दिनों त्रिपुरा के राज्यपाल महामहिम प्रो०सिद्धेश्वर प्रसाद ने राष्ट्रीय विचार मंच के संस्थापक एवं महासचिव तथा राष्ट्रीय विचार पत्रिका (त्रैमासिक) के प्रधान संपादक श्री सिद्धेश्वर जी ने प्रकृति के चित्रों का समावेश अपनी हाइकू कविताओं में काफी सफलतापूर्वक किया है।

राज्यपाल सिद्धेश्वर प्रसाद ने बताया कि हमारे देश का अतीत जितना गौरवशाली रहा है उसका भविष्य उससे भी अधिक गौरवशाली होगा। यह शताब्दी एटमबम निर्माण एवं परीक्षण, हिंसा-विस्फोट की रही, अगली शताब्दी भारत की होगी। शांति, प्रेम, सद्भावना की होगी जिसकी जरुरत पूरे विश्व को है। हम नाम से छपे कवि की पुस्तक की चर्चा करते हुए उन्होंने भारतीय संस्कृति की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया।

उन्होंने कहा कि सिद्धेश्वर जी पटना विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष नहीं हैं, व्याख्याता नहीं है। सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों के केन्द्र में रहते हुए भी उन्होंने कवितााएं लिखी हैं। उन्होंने **पतझर की सांझ** के माध्यम से जो सदेंश दिया है उसका महत्व है। **कविता वही सराही जाती है जिसने आपके दिल में जगह बना ली हो।** कविता की स्पन्दन शक्ति जो मनुष्य के प्राण में शक्ति भर देती है, वह किसी दूसरे के माध्यम से संभव हो सकता है।अंत में उन्होंने अपने हृदयोदगार प्रकट करते हुए कहा कि कवि सिद्धेश्वर इससे भी अधिक उच्च कोटि की कविताएं लिखें ताकि प्राण से प्राण जोड़ने का अनुकूल वातावरण का निर्माण हो सके।

त्रिपुरा के राज्यपाल प्रो०सिद्धेश्वर प्रसाद कवि सिद्धेवर की रचना **"पतझर की सांझ"** का लोकार्पण करते हुए। खड़े हैं दांये से कवि **सिद्धेश्वर, श्री जियालाल आर्य, प्रो०सिद्धेश्वर प्र०, डॉ०कुमार विमल, प्रो०रामबुझाावन सिंह** तथा **श्री बी०पी०सिंहा**

लोकार्पण समारोह का आरंभ मंजु मल्लिक एवं साथी के राष्ट्रगान से हुआ। इसके पश्चात् महामहिम राज्यपाल सिद्धेश्वर प्रसाद ने देवी सरस्वती की तस्वीर पर माल्यार्पण किया तथा समारोह का उद्घाटन दीप, प्रज्जवलित कर किया। मंच के सदस्य डा०शिवनारायण ने **"हिन्दी में हाइकू लेखन और पतझर की सांझ"** पर अपने विचार व्यक्त किया। उन्होंने बताया कि हाइकू जापानी काव्य रूप है जिसका शाब्दिक अर्थ-नटभंगी या जल्दी की कविता होता है। आज हिन्दी ही नहीं बल्कि सभी भारतीय भाषाओं में हाइकू की अनुगूंज सुनाई पड़ रही है।

राष्ट्रीय विचार मंच के महासचिव तथा **"पतझर की सांझ"** के कवि सिद्धेश्वर ने "हाइकू" काव्य शैली में कविता करके अपनी मूलगत/मूलभूत भावनात्मक विचारों से आमजन को अवगत कराया। डा०सत्यभूषण वर्मा, अध्यक्ष, जापानी विभाग, जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय की प्रेरणा के लिए उन्होने उनके प्रति आभार व्यक्त किया। **"हाइकू भारती"** के संपादक **डा०भगवत शरण अग्रवाल** तथा **"गुंजन"** के संवादक **डा०लक्ष्मण प्रसाद नायक** की प्रेरणा इस हाइकु लेखन में काम आयी। उनकी हाइकू कविताएं सर्वप्रथम "गुंजन" में छपी। फिर पुस्तक के लिए आधुनिक कविता के समीक्षक **प्रो०नन्दकिशोर नवल** ने "दो शब्द" लिखे हैं उनके प्रति कवि सिद्धेश्वर ने आभार व्यक्त किये श्री सिद्धेश्वर ने इस वास्तविकता से परिचित कराया कि आज के इस भाग-दौड़ की जिन्दगी में, कसमकस माहौल में जब लोग लम्बी कविता-कहानी अथवा उपन्यास पढ़ने को समय नहीं निकाल पा रहे हैं, हाइकू की उनकी ये कविताएं संभवत: उनका ध्यान आकृष्ट कर उनके मन को जीतने का प्रयास करेगी।

पटना विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी प्राध्यापक **प्रो०बुझावन सिंह** ने कवि तथा लोकार्पणकर्त्ता के नामों की सार्थकता के परिप्रेक्ष्य में कहा कि **एक सिद्ध पुरुष की पुस्तक को दूसरा सिद्ध पुरुष की लोकार्पण कर रहा है। एक सिद्ध व्यक्ति ही दूसरा सिद्ध को पहचान सकता है।** हाइकू के संबंध में उन्होंने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा, भोजन करने वाले स्वाद बता सकते हैं, किन्तु स्वादिष्ट कैसे बना यह तो हलवाई ही बता सकता है। साहित्यकार की पूंजी संवेदना होती है। किसी भी कवि की कविता की सार्थकता तभी होती है जब वह कविता कवि से निकलकर पाठक के दिल में विराजमान हो जाती है। उन्होंने कहा कि कविता में संवेदना होती है। अंकों से बराबर खेलने वाले सिद्धेश्वर अक्षरों के पास कैसे पहुंचे। उन अंको के चट्टान से नीचे अक्षर के बीच जैसे पत्थरों को चीर कर ही निर्झर निकला करता है।

सौन्दर्यशास्त्र के मर्मज्ञ, विद्वानचिंतक एवं आलोचक **डा०कुमार विमल** ने कहा कि हिन्दी के कई विचारकों ने यह प्रश्न उठाया है, जिस हिन्दी साहित्य में गीतिकी, सवैये, सौरठे आदि पहले से मौजूद हैं, उसमें "हाइकू" जैसे जापानी काव्य शैली अपनाने का क्या प्रयोजन है? अंग्रेजी कविता के छंद जो भारतीय एशियाई छंद है, उसे क्यों नहीं स्वीकार किया गया ? देश को सांस्कृतिक परिपक्वता चाहिए

अमेरिका ने बहुत कुछ कर रखा है, इसके बावजूद लोगों का कहना है कि वहां सांस्कृतिक परिपक्वता नहीं है। यही **रवीन्द्र बाबू** कहा करते थे, **कुछ लेना हो तो पश्चिम की ओर क्यों ताकते हो, पूर्व की ओर ताको।** पूर्व में जापान भी आ जाता है।

डा०कुमार विमल ने बताया कि जापान में मुख्य चार छंद विधाये हैं- **लंका, हाइकू, सिनिरियों, सिनो कोरियाई** छंद है। सक्षिप्तता को लेकर चलने वाली हाइकू का मूल सूत्र यही हो कि जीवन में जो समग्र एवं समग्रता है, उसे व्यक्त कीजिए यदि कोई व्यक्ति जिन्दगी के अर्थ को समझ ले तो माना जायेगा कि उसने जिन्दगी और मौत की बातें समझ ली है।

राज्य निर्वाचन आयुक्त **श्री जियालाल आर्य** ने कहा कि कविता किसी भी विधा में लिखी जाय, सभी के मूल में एक ही बात रहती है-भाव। सभी में भाव एक ही होगी। इन छोटी-छोटी कविताओं में शब्दों का बड़ा खेल होता है। सिद्धेश्वर जी की कविताएं पढ़ने पर उसका असर दिल और दिमाग दोनों पर पड़ेगा यही कवि की सफलता है।

मंच के उपाध्यक्ष डा०एस०एफ०रब ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि भारत का अतीत बहुत गौरवमय रहा है और भविष्य भी गरिमामय रहेगा-इसी से देश को हमारा राष्ट्रीय विचार मंच दूर-दूर तक ले जायेगा।

इस अवसर पर मंच की संयुक्त सचिव (संस्कृति) मंजू मल्लिक एवं साथियों ने साम्प्रदायिकता एवं सद्भावना पर आधारित **"गुलशन"** नाटक का सशक्त मंचन किया जिसमें लगभग सभी कलाकारों न समान रूप से उत्कृष्ट एवं बेहतरीन अभिनय कर दर्शकों पर अपनी पहचान बनाने में सफल रहे। कलाकार थे-**सरूर अली अंसारी, मंजू मल्लिक, राजवल्लभ प्रसादविकल, कुमारी राधा, मुकेश कुमार, सुदर्शन कुमार, राजेश कुमार।** इस गीति नाट्य का सफल निर्देशन किया **श्री सरूर अली अंसारी** ने। **श्यामकांत दास** लिखित सरूर अली अंसारी अनुवादित एवं निर्देशित **"गुलशन"** हास्य के पुट से सराबोर था। संगीत **अरूण कुमार** का प्रभावपूर्ण था।

एक आलोचनात्मक पुस्तक का लोकार्पण

विगत 11-4-99 को देवघर (बिहार) स्थित **साहित्यकार संसद** के तत्वावधान में भा०प्र०से०के यशस्वी प्रशासक **श्री जियालाल आर्य** की पुस्तक **'दलित कहां जायें'** से सम्बद्ध विद्वानों के अभिमतों के संकलन ग्रन्थ **"दलित कहां जायें : एक आलोचनात्मक मूल्यांकन"** का लोकार्पण समारोह मित्रा इंटर स्तरीय विद्यालय के भव्य सभागार में सम्पन्न हुआ।

इस सारस्वत अनुष्ठान की अध्यक्षता प्रसिद्ध भाषाविद् एवं यशोधन साहित्यकार डा०डोमन साह'समीर' तथा उद्घाटन लोकनिष्ठ राजनेता कृष्णानन्द झा ने किया। पुस्तक के लोकार्पण में पं०झा ने श्री आर्य को एक आदर्श प्रशासक के रूप में रेखांकित करते हुए दलित समस्या पर अनेक कोनें से प्रकाश प्रक्षेपण किया तथा इस बात के लिए श्री आर्य की प्रभूत प्रशंसा की कि उनके लेखन में वैचारिक संकीर्णता एवं प्रतिगामी पूर्वाग्रह को कोई दूषण नहीं है।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि तथा "राजभाषा" पत्रिका के संपादक डॉ०कुणाल कुमार ने दलित समस्या पर श्री आर्य के चिंतनगत प्राखर्य एवं भाषीक वैशिष्ट पर सुविस्तृत विचार ज्ञापन के क्रम में श्री आर्य को एक महाचेता तेजस्वी साहित्यकार घोषित करते हुए इनकी बहुमुखी प्रतिभा को अत्यंत उत्प्रेरक उदघोष किया। डॉ०कुणाल ने कहा कि अधिकांशत: ऐसा होता है कि उचाईयों पर जाकर मनुष्य के व्यक्तित्व में एक विषैली विकृति आ जाती है और उसकी मानवता निस्पंद हो जाती है। शीर्षस्थ पदों पर समारूढ़ रहने के बावजूद श्री आर्य के शील अवदात्य तथा विनयशीलता में कोई गिरावट नहीं आई। फलत: इनकी सारस्वत साधना में सहजता की सूरसरी का कलकल निनाद प्रत्यक्षत: अनुध्वनित होता रहता है। 'दलित कहां जायें' शीर्षक अपने ग्रन्थ में श्री आर्य ने समस्याओं के साथ-साथ सम्यक-समाधान किया है।

समारोह को देवघर के उपायुक्त श्री अविनाश, डॉ०ताराचरण खावडे, प्रो०हेमजी ने भी सम्बोधित किया। समारोह का शुभारंभ प्रतिभाशाली नृत्य निपूण बेटी **सुश्री नेहा** के भाव नृत्य से हुआ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में **डॉ०डोमन साह 'समीर'** ने लोकार्पित ग्रन्थ में संकलित आलेखों पर अपनी सुक्ष्मेक्षिता दृष्टि से विचार किया और ग्रन्थ की उपादेयता को असंदिग्ध घोषित करते हुए श्री आर्य के लेखन-कौशल की सराहना की।

डॉ०हरिवंश तरूण, समस्तीपुर

सागर में राष्ट्रीय 'नवीन' जन्म शताब्दी सम्पन्न

म०प्र०के सागर नगर में अन्तर्राष्ट्रीय भारतीय भाषा तथा संस्कृति फाउण्डेशन के द्वारा राष्ट्रीय योद्धा पं०बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की द्वि-दिवसीय शतसम्वत्सरी समारोह मनाया गया जिसका केन्द्रीय विषय था: **पं०बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का हिन्दी साहित्य में योगदान।**

उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि सांसद पद्मश्री डा०सी०पी०ठाकुर थे। समारोह की अध्यक्षता प्रख्यात साहित्यकार आचार्य त्रिलोचन शास्त्री ने की। डा० ठाकुर ने हिन्दी को राजभाषा बनाने में 'नवीन' जी की भूमिका को रेखांकित किया। फाउण्डेशन के अध्यक्ष पद्मश्री डा०लक्ष्मीनारायण दुबे ने स्वागत भाषण दिया। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में लगभग पच्चीस शोधपत्र प्रस्तुत किए गए जिनके माध्यम से 'नवीन' जी का बहुआयामी व्यक्तित्व तथा कृतित्व उद्घाटित हुआ। राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात लेखिका डा०(श्रीमती) मीना पिम्पलापुरे ने की।

संपर्क: प्रो०नाथूराम, सागर-470004

साहित्यकार संसद द्वारा साहित्यसेवी सम्मानित

साहित्यकार संसद, समस्तीपुर के तत्वावधान में 24 साहित्य सेवियों को सम्मानित किया गया। संसद के संस्थापक-**अध्यक्ष डा०हरिवंश तरूण** के संचालन में आयोजित पुरस्कार वितरण-समारोह की अध्यक्षता **'प्रात:कमल'** दैनिक पत्र के संपादक श्री राधामोहन ठाकुर ने की।

पुरस्कार पानेवालों में थे सर्वश्री रामविलास रविदास(दुमका),डा०(श्रीमती) मंजु ज्योत्सना (रांची), श्री सियाराम प्रहरी (जमालपुर), रमेश कंवल(पीरो), रमेश नीलकमल (जमालपुर), धनेश्वर प्र०निरंजन(दरभंगा), डा०नरेश कुमार विकल (समस्तीपुर), डा०स्वामी श्यामानन्द सरस्वती रौशन (हरिद्वार), डा०सतीशराज पुष्करणा (पटना), तालिव शिमलवी(होशियारपुर), डॉ०हीरालाल सहनी (दरभंगा), डॉ०रामलखन राय, खुर्शीद आलम (पटना), दिनेशदीन, रामजपित राय, डा०आर.पी. मिश्रा (समस्तीपुर), रिजवान अहमद(पटना), रईस सिद्दकी(दिल्ली), शाहीद कलीम(आरा), डा०शाकिर खालिक (दरभंगा), जफर हाशमी(टाटानगर)। प्रारम्भ में अतिथियों एवं कवियों का स्वागत किया साहित्यकार संसद के महासचिव **श्री योगेन्द्र पोद्दार** ने अखिल भारतीय कवि एवं मुशायरा सम्मेलन की अध्यक्षता **स्वामी श्यामानंद सरस्वती रौशन** ने की। संचालन हास्य-व्यंग्य रचनाकार कवि तंग इनायतपुरी ने की। इस अवसर पर युवा चित्रकार **संतोषकुमार सहनी** एवं **निशीथ पांडेय** द्वारा साहित्यकारों की एक चित्र प्रदर्शनी भी लगायी गयी।

-डॉ०हीरालाल सहनी

चतुर्वेदी प्रतिभा मिश्र स्मृतिपर्व
बारह साहित्यकार सम्मानित

लोकभाषा,साहित्य और संस्कृति के संवाहक 'राष्ट्रवेणु', धरणी पट्टी (समस्तीपुर) ने लोक भाषाओं के लिए बहुश्रुत दधीचि चतुर्वेदी प्रतिभा मिश्र की पुण्य-तिथि पर विगत दिनों जी०एम० आर०डी०कॉलेज, मोहनपुर के विशाल सभागार में एक भव्य समारोह आयोजित कर छत्तीसगढ़ी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति पर सर्वाधिक कार्य करने एवं कराने तथा राष्ट्रीय क्षितिज में छत्तीसगढ़ी की सुवास को विकीर्णकरनेवाले **डॉ०विनय कुमार पाठक** को चतुर्वेदी प्रतिभा मिश्र शिखर सम्मान से सुशोभित किया गया। डॉ०विनय पाठक हिन्दी और भाषा विज्ञान के दो विषयों में पी०एच०डी० और डी०लिट० प्राप्त कर अखिल भारतीय स्तर पर कीर्तिमान स्थापित करनेवाले अकादमिक आचार्य, छत्तीसगढ़ी की प्राय:समस्त विधाओं के शब्दकार छत्तीसगढ़ के इनसाइक्लोपीडिया माने जाते हैं । इन्होंने छत्तीसगढ़ी गद्य व पद्य-दोनों विधाओं में-प्रवर्तन कर छत्तीसगढ़ी को अखिल भारतीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने का युगांतरकारी घटना का सूत्रपात किया है ।

डॉ०विनय पाठक के अतिरिक्त शैलेन्द्र सिंह 'राकेश' (वैशाली) को झड़ी पँडित संगीत शिखर सम्मान से सम्मानित किया गया तथा सर्वश्री राजनारायण चौधरी (हाजीपुर), डॉ०वीरेन्द्र कुमार दुबे, (जबलपुर), गिरीश पंकज (रायपुर), डॉ० रवीन्द्र राकेश, तिवारी (राँची) और योगी साहु 'किसलय' (समस्तीपुर) को विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य हेतु विशेष अलंकरण दिये गये। इस सम्मान सत्र के मुख्य अतिथि थे **श्री यागेन्द्र भक्त**, जबकि अध्यक्ष गीतकार **श्री राजमणि राय 'मणि'** थे। संस्था के निदेशक श्री अश्विनी कुमार आलोक ने संस्था की उपलब्धियों एवं योजनाओं की चर्चा की। कार्यक्रम का संचालन संयुक्त रूप से श्री संजीव प्रभाकर एवं श्री अनंत कुमार राय ने किया। इस अवसर पर मृदुल द्वारा संपादित बज्जिका पत्र 'लिखंत' का विमोचन भी हुआ।

प्रस्तुति: अश्विनी कुमार आलोक,
प्रभा निकेतन, धरणीपट्टी, समस्तीपुर

कलकत्ता में साहित्यिक संगोष्ठी

राष्ट्रीय विचार पत्रिका के संरक्षक **श्री रामरतन चौधरी** की अध्यक्षता में विगत 30 मई, 99 को हावड़ा (कलकत्ता)स्थित 545, जी.टी.रोड में प०बंग कू०क्ष० सभा की ओर से आयोजित साहित्यिक संगोष्ठी में उदीयमान साहित्यकार श्री राजकिशोर राजन के द्वारा कवि सिद्धेश्वर के हाइकु काव्य-संग्रह **पतझर की सांझ** की समीक्षा प्रस्तुत की गयी। श्री राजन ने उक्त पुस्तक की समीक्षा में कहा कि कवि ने हाइकु की मूल प्रकृति को समझा है और प्रकृति की विभिन्न स्थिति एवं उपादानों को केन्द्र में रखकर साढ़े छह सौ हाइकु लिखे हैं। कवि साहित्य से जुड़ा है इसलिए साहित्य, कविता, श्रृंगार, वेदना, राष्ट्र चेतना जैसे विषयों को उसने अपनी कविता के लिए चयन किया है। **पतझर की सांझ** का कवि को अहसास का कवि नहीं है वह यथार्थ के कठोर धरातल पर भी उसी गति से चलता है और महसूस करता है अपने गुजरते हर पल को-क्षण को। कवि की दृष्टि में धर्म-सम्प्रदाय एवं जात-पात से ऊपर है राष्ट्र। राष्ट्र के हित में किसी प्रकार का समझौता कवि को स्वीकार्य नहीं है।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित इस काव्य-संग्रह के कवि सिद्धेश्वर ने अपनी इस कृति के प्रेरकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए रचना की पृष्ठभूमि पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा आज के इस आपाधापी के युग में इसकी उपादेयता की चर्चा की।

प्रारम्भ में कविवर कमलेश कुमार ने इस संगोष्ठी की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर यमुना प्र०राय, चन्द्रशेखर राय, पी०के०सिंह, आनन्द पाण्डंय आदि ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कवि सिद्धेश्वर की कृति की सराहना की।

इस संगोष्ठी के अध्यक्ष श्री रामरतन चौधरी ने कवि सिद्धेश्वर के बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व की चर्चा करते हुए कहा कि वे समय-समय पर मौके के अनुसार न केवल अपने कर्तव्य का निर्वहन करते आए हैं बल्कि पाठक एवं सामान्य वर्ग को अपनी भावनाओं एवं रचनाओं के माध्यम से एक सार्थक दिशा निर्देश करते आ रहे हैं। अपनी इस कृति में उन्होंने बड़ी सहजता और सरलता से बोलचाल की आम भाषा में पाठकों को कई रसों का रसास्वादन कराया है। सामाजिक एवं साहित्यिक सरोकारों से जुड़े इस कवि को हार्दिक साधुवाद देते हुए उनके द्वारा चलाए जा रहे आन्दोलन में सहयोग करने का श्री चौधरी ने आश्वासन दिया। अन्त में अध्यक्ष **श्री रामरतन चौधरी** ने उपस्थित प्रबुद्धजनों के प्रति आभार व्यक्त किया।

हावड़ा रेल मंडल के सभाकक्ष में राजभाषा संगोष्ठी-

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, हावड़ा रेल मंडल, पूर्व रेलवे के तत्वावधान में विगत 31 मई, 99 को संध्या 4 बजे हावड़ा रेल मंडल के सभाकक्ष में एक राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन उपमुख्य राजभाषा अधिकारी **श्री रणजीत मित्र** की अध्यक्षता में किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के पद से रेलवे हिन्दी सलाहकार समिति, नई दिल्ली के सदस्य **श्री सिद्धेश्वर** ने राजभाषा हिन्दी के सरकारी कामकाज में प्रगामी प्रयोग की बाधाओं में मुख्य रूप से **'अंग्रेजियत'** मानसिकता को रेखांकित किया। राजभाषा पर अपने विचार व्यक्त करते हुए

इन्होंने कहा कि एक ओर जहां नौकरशाह विभाग में अपना वर्चस्व कायम रखने के लिए अंग्रेजी को कायम रखना चाहते हैं वहीं दूसरी ओर हिन्दी भाषी एवं अहिन्दी भाषी कर्मचारी/अधिकारी हीन भावना से ग्रस्त होने के कारण राजभाषा में काम करने में उन्हें हिचकिचाहट हो रही है। पर सच तो यह है कि हिन्दी का प्रयोग करने में उन्हें गर्व महसूस करना चाहिए।

संगोष्ठी के प्रारम्भ में केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् की हावड़ा रेल मंडल शाखा के संयोजक **श्री यमुना प्र०राय** ने उपस्थित अतिथियों एवं सुधी जनों का स्वागत किया तथा कलकत्ता में साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के केन्द्र कविवर कमलेश कुमार ने सुधी श्रोताओं एवं अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए संगोष्ठी के मुख्य अतिथि श्री सिद्धेश्वर जी के राजभाषा के उन्नयन एवं उसके प्रयोग को बढ़ावा देने में उनकी निष्ठा एवं योगदान की सराहना की।

उन्होंने कहा कि आज जिस तेजी से हमारे राष्ट्र में राष्ट्रीयता की भावना का निरन्तर ह्रास होता चला जा रहा है उसमें समाज के बुद्धिजीवियों का यह परम कर्त्तव्य बनता है कि वे इसकी ओर ध्यान दें तथा ऐसे मंच का गठन करें। **राष्ट्रीय विचार पत्रिका** में रचनात्मक सहयोग प्रदान कर राष्ट्रीयता की चेतना जागृत करने का काम किया जा सकता है।

बैठक में एक और प्रस्ताव पारित कर साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यकलापों में अगाध अभिरूचि रखने वाले कवि कमलेश कुमार को रा. वि.पत्रिका का प०बंगाल, कलकत्ता का प्रतिनिधि मनोनीत किया गया। बैठक में मंडल परिचालन प्रबंधक **श्री विप्लव कुमार, श्री रणविजय, श्रीवास्तव, राजभाषा अधिकारी श्री ब्रह्मनन्द चौबे,श्री अनिल सिंह पटेल, श्री चन्द्रशेखर राय** तथा**श्री राजेन्द्र राय** आदि प्रबुद्धजनों ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए मंच की कलकत्ता शाखा की आवश्कता बताई तथा अपने अपेक्षित सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया।

अन्त में राजभाषा से जुड़े **श्री रामेश्वर पाण्डेय** के धन्यवाद-ज्ञापन के पश्चात बैठक के अध्यक्ष कविवर **कमलेश कुमार** के द्वारा बैठक समाप्ति की घोषणा की गई। इस अवसर पर **योगेन्द्र ओझा, हरेन्द्र सिंह, ऋषिकेष राय, राजकिशोर राजन तथा जगदीश प्र०'वियोगी'** आदि भी उपस्थित थे।

प्रस्तुति : कमलेश कुमार तथा साथ में यमुना प्रसाद राय, हावड़ा से

बिहार आर्ट थियेटर का बहुभाषी नाट्योत्सव 99

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी रंगकर्म के प्रति पूर्ण समर्पित संस्था **बिहार आर्ट थियेटर** ने एकता मंच के सौजन्य से अपने संस्थापक-निदेशक स्व०अनिल कुमार मुखर्जी के 83वें जयन्ती समारोह के अवसर पर बहुभाषी नाटयोत्सव-99 का आयोजन किया। इसके अन्तर्गत कुल ग्यारह हिन्दी, उर्दू, भोजपुरी, मैथिली, मगही, नाटकों का मंचन किया गया जिसमें पटना के अतिरिक्त पूर्णिमा, मुजफ्फरपुर की नाट्य संस्थाओं ने भी भाग लिया।

बिहार आर्ट थियेटर के सचिव आर०पी०तरूण, अपर सचिव अजित गांगुली, अरूण कुमार सिन्हा तथा प्रदीप गांगुली के अथक प्रयास से यह नाटयोत्सव-99 सफल रहा।

ठहाका 99 का आयोजन

तीन बुलाये, तेरह आवै
रंग बिरंगा खेल दिखावै
महानगरी में करै धमाका,
का सखि, साजन नहीं, ''ठहाका''।

तनाव मुक्त समाज के निर्माण की दिशा में ''**ठहाका**'' भी एक वैसा ही प्रयास है। ''**ठहाका**'' कोई संस्था नहीं वरन् एक अभियान है- आपसी द्वेष, कलह एवं हिंसा को खत्म करने का और लोगों को प्रसन्नचित एवं स्वस्थ रखने का।

विगत् एक अप्रैल को ''**पटना लाफिंग क्लब**'' द्वारा आयोजित ''**ठहाका-99**'' का आयोजन स्थानीय समाज कल्याण समिति के सभागार में किया गया जहां राजधानी के प्राध्यापकों, साहित्यकारों, पत्रकारों, चिकित्सकों, वकीलों तथा विभिन्न पेशा के एक सौ बुद्धिजीवियों ने ''**ठहाकों**'' का भरपूर आनन्द लिया।

डॉ०एस०एन०आर्या सम्मानित

रा०वि०प्रतिनिधि

मैं तो यही कहूंगा कि पिछले दिनों देश के सुप्रतिष्ठित चिकित्सकों, डा०एस०एन०आर्या तथा डा० मंजुगीता मिश्रा को बी० सी० राय मेमोरियल अवार्ड से सम्मानित कर अवार्ड स्वयं सम्मानित हुआ है। इससे अवार्ड की गरिमा बढ़ी है। ये पंक्तियां हैं पटना मेडिकल कॉलेज के वरिष्ठ, प्राध्यापक एवं शिशु रोग विशेषज्ञ **डा०अरूण कुमार ठाकुर** के जिसे उन्होंने अपने वरीय चिकित्सक एवं प्राध्यापक **डा०एस०एन०आर्या** एवं **डा०मंजु गीता मिश्रा** को **बी०सी०राय मेमोरियल अवार्ड** से सम्मानित होने के अवसर पर आयोजित एक अभिनन्दन समारोह में अपने हृदयोद्गार प्रकट किया।

इस अवसर पर कई चिकित्सकों ने कहा कि दोनों चिकित्सक विद्धता में अद्धितीय हैं तथा सामाजिक सेवा के प्रति समर्पित हैं। उन्हें यह जो सम्मान मिला है, पूरे चिकित्सक समाज के लिए गौरव की बात है।

डा०आर्या ने आध्यात्मिक मानसिकता की ओर लोगों का ध्यान ले जाते हुए कहा कि उत्तर भारत में जहां भी जायें, एक शिवलिंग का मंदिर मिलता है क्योंकि शिव जी का दो स्वरूप है। पहला-तॉडिव नृत्य तथा दूसरा सृजनकर्त्ता के रूप में। तांडव नृत्य के कारण उनके भय से उनकी पूजा की जाती है किन्तु चिकित्सकों का जो सम्मान मिला है, उसमें ''भय'' का लेश मात्र भी स्थान नहीं।

कुरमाली भाषा के संवर्द्धन का आह्वान

प्रस्तुति: जीवाधन महतो

कुरमाली भाषा परिषद के अध्यक्ष **प्रो०राजाराम महतो** ने कुरमाली भाषा के विकास, संवर्द्धन एवं प्रचार के लिए आह्वान करते हुए कहा है कि कुरमाली भाषा भारत की प्राचीनतम पन्द्रह भाषाओं में से एक है।

प्रो०महतो सांस्कृतिक एवं सामाजिक संगठन **कुंजवन** द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करने के बाद मुख्य अतिथि पद से बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि कुरमाली भाषा का साहित्य उच्च कोटि का है और इस भाषा को बोलने वालों ने पूरे विश्व को मुखौटा नृत्य की मनभावन शैली प्रदान की। कुरमाली के लोक-गीत, नृत्य, संगीत भारत की प्रकृति में पनपे और पुष्पित-पल्लवित हुए। इस भाषा की लोक कथाएं राजस्थान की '**ख्यात**' कथाओं की तरह प्राचीन हैं।

प्रो. महतो ने कहा कि कुरमाली भाषियों ने भारतीय संस्कृति में बहुमूल्य एवं उल्लेखनीय योगदान दिया है। वैदिक काल से लेकर अब तक कुरमाली भाषियों नें कृषि वैज्ञानिकों की तरह कार्य किया है। किसी भी तरह की भूमि हो, उसे उपजाऊ बनाने तथा भूमि क्षरण रोकने के उपाय बताए। फलत: कुरमाली के कृषि-गीत बहुत ही ज्ञानकारी होते हैं। प्रो.महतो ने कहा कि वर्त्तमान काल में हमारी भाषा और साहित्य का विकास धीमा पड़ गया है। इसके पीछे अंग्रेजी मानसिकता से युक्त सत्ता दोषी है। लेकिन हम अपनी भाषा ओंर साहित्य के विकास के लिए सामाजिक-राजनैतिक स्तर पर सार्थक संघर्ष करेंगे।

प्रो०महतो ने समाज से नशाखोरी, नारी शोषण, कुरीतियों एवं कुप्रथाओं को समाप्त करने का आह्वान किया।

इस अवसर पर छोटानागपुर सांस्कृतिक विकास केन्द्र, बारूडीह-सोनाहातू के सचिव एवं प्रसिद्ध कलाकार सीदाम महतो ने अपने सहयोगी कलाकारों के साथ प्रसिद्ध कुरमाली रासलीला की प्रस्तुति की। इस रासलीला को आज अंतर्राष्ट्रीय ख्याति मिल चुकी है। डॉ०मानसिंह महतो और श्री नरहरि सिंह मुंडा, बिष्टु महतो, आदि ने अपने मधुर कुरमाली गीत-गायन से लोगों को मुग्ध किया। **श्री अश्विनी कुमार** ने नागपुरी गीत पेश कर तालियों बटोरी।

इस अवसर पर हरिपद महतो, जोति प्रसाद कुशवाहा, प्रयाग कोयरी, मित्रन महतो, उदय महतो, रंगलाल महतो, सुन्दर मिर्धा, दौलत महतो, धीरज महतो, दिलीप कुमार, इन्द्रदेव मिर्धा आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

सौजन्य-डॉ०एच०एन०सिंह, रांची वि०वि०
संपर्क : ग्राम- जुरामना (हरलाडीह), प्रखण्ड-नावाडीह जिला-बोकारो.

नेत्रहीन कलाकारों द्वारा रंगीन सांस्कृतिक कार्यक्रम

पिछले दिनों **बिहार नेत्रहीन परिषद्** के द्वारा नेत्रहीन बालिका विद्यालय, कुम्हरार के कल्याणार्थ आयोजित एक सांस्कृतिक समारोह में आकाशवाणी के कलाकार संत राज सिंह राजेश ने लोकगीत, योगेन्द्र सिंह अलबेला ने "चलल जाय चलल जाय रे हमार बैलगाड़ी", भोजपुरी गीत तथा मैथिली गीत के द्वारा श्रोताओं को सराबोर किया सीताराम सिंह की गज़ल की निम्न पंक्तियां सराही गई-

सबके दिल में रहता हूं, पर दिल का आंचल खाली है
खुशियां बांट रहा जग में, पर अपना दामन खाली है।

सांस्कृतिक समारोह का उद्घाटन वरिष्ठ पुलिस अधिकारी किशोर कुणाल ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बिहार नेत्रहीन परिषद के अध्यक्ष डा०अजीत सिन्हा, नेत्र बिशेषज्ञ ने की। इस अवसर पर महासचिव डा०नवल किशोर शर्मा(नेत्रहीन), राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कोषाध्यक्ष डा०शशि प्रभा, डा०रवीन्द्र नारायण सिंह तथा नवल किशोर ठाकुर आदि ने भी अपने-अपने हृदयोद्गार प्रकट किये।

कहना न होगा, इनके कार्यक्रम ने प्रमाणित कर दिया कि जिनके नेत्र में रोशनी नहीं होती, उनके दिलों में भावनाओं में, अर्थात् उनकी जिंदगी में भरपूर रंग-विरंगी रेशनी हो सकती है, साथ ही यह भी कि वे अपनी प्रतिभा के बल पर अपने स्वर के माध्यम से नेत्रयुक्त लोगों से किसी भी मायने में किसी भी क्षेत्र में कम नहीं हैं। यह राष्ट्र के लिए गौरव की बात है।

प्रस्तुति: विन्देश्वर प्र०गुप्ता, "रजिस्ट्रार हाउस", न्यू करविगहिया, पटना-1

मंच के कार्यकलाप : एक नजर

प्रस्तुति : मनोज कुमार

अमर कथाशिल्पी रेणु जयंती पर साहित्यिक संगोष्ठी

अमर कथाशिल्पी फणीश्वरनाथ रेणु की 78 वीं जयंती के अवसर पर विगत 7 मार्च, 99 के राष्ट्रीय विचार मंच की ओर से मंच के केन्द्रीय कार्यालय में एक साहित्यिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका विषय था- 'रेणु की कथाओं में सामाजिक चेतना'। इस गोष्ठी की अध्यक्षता मंच के अध्यक्ष श्री जिया लाल आर्य ने की।

श्रोताओं का स्वागत किया श्री कामेश्वर मानव ने। मंच के महासचिव श्री सिद्धेश्वर ने इस अवसर पर संगोष्ठी के विषय पर एक आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि रेणु की कथाओं में आंचलिकता के साथ-साथ गरीबों, दलितों एंव समाज के दबे कुचलों के संघर्ष की जो गाथा है वह निश्चय ही सामन्तवादी ताकतों से लड़ रहे आवाम के लिए प्रेरणा श्रोत है। उनकी कहानियों ने गरीबों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने की शिक्षा दी है।

इस संगोष्ठी में पटना के जाने-माने साहित्यकार तथा समाज सेवियों ने भी अपने विचार व्यक्त किए। धन्यवाद ज्ञापन किया मंच के संयुक्त सचिव शिव कुमार ने।

बाबा साहब अम्बेडकर की 107 वीं जयन्ती के अवसर पर विचार-संगोष्ठी

मंच के द्वारा संविधान निर्माता बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर की 107 वीं जयन्ती के अवसर पर विगत 20 अप्रैल, 99 को एक विचार संगोष्ठी का आयोजन स्थानीय सोन भवन के तृतीय मंजिल स्थित सभागार में किया गया। विचार संगोष्ठी का विषय था-'' आतंकवाद और राष्ट्रीय अखण्डता''। इस अवसर पर मंच के त्रैमासिक मुख-पत्र 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' के चौथे अंक का लोकापर्ण असम के राज्यपाल महामहिम ले०जे०एस०के०सिन्हा ने किया। इस समारोह की अध्यक्षता पटना उच्च न्यायालय के वरीय अधिवक्ता, विचारक एंव चिन्तक डा० उमाशंकर प्रसाद ने की।

समारोह के उद्घाटनकर्ता एंव मुख्य वक्ता असम के राज्यपाल ले०जनरल एस०के०सिन्हा ने संगोष्ठी के विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने असम, बिहार कश्मीर, पंजाब के आतंकवाद पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आतंकवाद ने कुछ समय के लिए जन मानस में भले ही आतंक का भय पैदा किया जो प्रगति तथा विकास के मार्ग में बाधक बनी परन्तु हाल के वर्षो में जब जनता ने आतंकवादियों से डरना छोड़ दिया और उनका असली रूप पहचान कर उनका मुकाबला किया तो कश्मीर, पंजाब तथा असम में शान्ति बहाल होने लगी है। यह सिद्ध हो गया है कि राष्ट्रीय अखण्डता, आतंकवाद से खण्डित नहीं हो सकती। श्री सिन्हा ने संगोष्ठी के बाद कई श्रोताओं के प्रश्नों का उत्तर भी दिया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि डा० वीरकेश्वर प्र०सिंह, अध्यक्ष, बैकिग भर्ती बोर्ड, पटना, ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि राजनीति सिद्धान्त में एक सिद्धान्त यह भी है कि सत्ता बन्दूक की नली से निकलती है, किन्तु इतिहास साक्षी है कि ऐसी सत्ता टिकाऊ नहीं होती।

मुख्य अतिथि के पद से अपने विचार व्यक्त करते हुए महालेखाकार श्री नन्दलाल ने कहा कि आतंकवाद के जन्म के पीछे कई कारण होता हैं। उन कारणों को दूर कर आतंकवाद समाप्त किया जा सकता है।

चिन्तक एवं विचारक तथा माले के नेता श्री विद्यानन्दन सहाय ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए मध्य बिहार में बढ़ते सामाजिक आतंकवाद पर चिंता प्रकट की।

'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' के चौथे अंक की समीक्षा आकाशवाणी पटना के पूर्व केन्द्र निदेशक श्री बांकेनन्दन प्र० सिन्हा ने की। उन्होंने पत्रिका के प्रधान संपादक श्री सिद्धेश्वर की निष्ठा एवं लगन की सराहना करते हुए कहा कि इतने कम दिनों में पत्रिका ने काफी लोकप्रियता हासिल की है तथा सीमित साधनों के बावजूद उत्तोत्तर अपनी स्तरीयता बनाए है। इस अवसर पर कार्यक्रम का संचालन कर रहे श्री सिद्धेश्वर ने सुधी श्रोताओं से आग्रह किया कि मंच के कार्यकलापों में तथा पत्रिका के विकास में अपना अमूल्य योगदान दें।

कार्यक्रम के अंत में मंच के संयुक्त सचिव श्री मनोज कुमार ने सुधी श्रोताओं अतिथियों, पत्रकारों तथा मीडिया के लोगों के प्रति तहे दिल से आभार व्यक्त किया।

बाल साहित्यकार राष्ट्रबंधु के सम्मान में काव्य संध्या

मंच के केन्द्रीय कार्यालय में कानपुर से पधारे बाल साहित्यकार राष्ट्रबंधु का सम्मान दिनांक 10 मई, 1999 को किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता की हाजीपुर के कविवर राजनारायण चौधरी ने इस अवसर पर पटना नगर के जिन कवियों ने अपनी कविताओं से सुधी श्रोताओं को सराबोर किया उनमें डा.मेहता नगेन्द्र सिंह, भगवती प्र०द्विवेदी, बलभद्र कल्याण, कामेश्वर मानव तथा राजेश चतुर्वेदी (मुख्य अतिथि)का नाम आदि प्रमुख है। कार्यक्रम के अंत में राष्ट्रीय विचार पत्रिका के सह संपादक कामेश्वर मानव ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

दलित उत्थान के पक्षधर श्री मैकू राम के निधन पर शोकसभा

राष्ट्रीय विचार मंच की दिनांक 8 मई, 1999 को संध्या 5 बजे सोनभवन, पटना में आयोजित शोकसभा दलितों और समाज के उपेक्षित लोगों के उत्थान के पक्षधर श्री मैकूराम के असामयिक निधन पर गहरा दुख प्रकट किया गया। मंच के सभी सदस्य इस दुखद समाचार से मर्माहत हैं आरक्षी विभाग, बिहार के विभिन्न पदों पर रहकर न केवल उन्होंने बिहार की सेवा की बल्कि अपने प्रगतिशील विचारों से अपनी एक अलग जहचान बनाई। सामाजिक न्याय को आधार मानकर उन्होंने अपने मौलिक अधिकार के लिए दलित, पीड़ित, शोषित तथा समाज के उपेक्षित लोगों को संघर्ष करने का आह्वान किया।

मंच के अध्यक्ष तथा बिहार के राज्य निर्वाचन आयुक्त श्री जियालाल आर्य ने स्व० राम के निधन पर दु:ख प्रकट करते हुए कहा कि वे आजीवन शोषित , पीड़ित एवं दलितों के उत्थान के लिए संघर्षरत रहे।

इस शोकसभा में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मंच के महासचिव श्री सिद्धेश्वर ने कहा कि श्री मैकू राम के निधन से उपेक्षित समाज का एक सच्चा हितैषी तथा एक कर्मठ कार्यकर्ता का अभाव खटकेगा।

इस अवसर पर श्री नृपेद्रनाथ गुप्त, डॉ०रंगी प्रसाद सिंह , शिववंश पाण्डे, कामेश्वर मानव, चिरंजीव तथा डॉ०शिवनारायण भी उपस्थित थे।

देश के शहीदों को श्रद्धांजलि व शत-शत नमन

कारगिल में पाकिस्तानी घुसपैठिए और उनकी मदद के लिए परोक्ष रूप से युद्ध करते पाकिस्तान सेना का दांत खट्टे करते हुए शहीद हुए सेनापतियों और उनके जवानो के बलिदानों के आगे आज सभी भारतीय एक-साथ नतमस्तक हैं।स्वाड्न लीडर अजय आहुआ, स्क्वड्न लीडर आर पुंडीर, फ्लाइट लेफ्टि, एस० मुहिलन, एसजीटी आर० के० साहू, एस०जी०पी० पीवीएन आर प्रसाद, मेजर परियप्पन सर्वणन, सिपाही अरविन्द कुमार पाडें, प्रमोद कुमार, नायक गणेश प्रसाद यादव और पचास से अधिक रहा। सिपाहियों का सीमा पर साहसिक कार्य हर भारतीयों को राष्ट्रप्रेम की प्रेरणा देता रहेगा।

अमर शहीद 36 वर्षीय स्क्वाड्न लीडर अजय आहुजा का जन्म 22 मई 1963 को राजस्थान के कोटा में हुआ था। आहूजा का 1982 में एनडीए में चयन हुआ और 1985 में भारतीय वायु सेना में कमीशन मिला।

बिहार रेजीमेन्ट का एक अफसर **मरियप्पन सर्वणन** भी पाकिस्तानी घुसपैठियों से मुकाबला करते हुए शहीद हुए। वे तमिलनाडु राज्य के रहनेवाले थे। 11 मार्च 1995 को को आफिसर्स एकेडमी मद्रास से पास करने के बाद वे बिहार रेजिमेंटल सेन्टर दानापुर की सबसे पुरानी प्रथम बिहार बटालियन में अपना योगदान दिया। शहीद होने के पूर्व मेजर सर्वणन ने चार पाकिस्तानी घुसपैठियों को मार गिराया था।

शहीद सिपाही, अरविन्द पाडें बिहार के भटिया ग्राम के निवासी थे। सेना में भर्ती होने के बाद उन्हें आतंकवादियों से मुकाबला करने के लिए काश्मीर भेजा गया था। एक वर्ष तक काश्मीर में आतंकवादियों के दांत खट्टे करनेवाले शहीद पाडें के अदम्य साहस को देखते हुए सेना के अफसरों ने उनकी कम्पनी को कारगिल में तैनात कर दिया। 24 जून,1999 को उनकी शादी हाने वाली थी, लेकिन शादी का सेहरा बंधने के पूर्व ही उनके माथे पर शहादत का सेहरा बंध गया। शहीद होने के पूर्व अरविन्द पाडें 16 हजार फुट की ऊचाई पर 28 दुश्मनो को मार गिराया था।

गत 30 मई को बिहार रेजीमेन्ट का ही शहीद हुआ एक जवान **प्र,मोद कुमार** मुजफ्फरपुर (बिहार) के ग्राम माध

ेपुर का निवासी था। उनका जन्म यहीं पर 20 जून 1977 को हुआ। वह 1993 में मैट्रिक पास किया तथा 1995 में इंटरमीडिएट पास किया। प्रमोद 16 नवम्बर 1996 को मुजफ्फरपुर सेना भर्ती कार्यालय से नियुक्त होकर बिहार रेजिमेंट दानापुर में प्रशिक्षण प्राप्त किया।

दुश्मनों को अपने दम दांत खट्टे करने के बाद शहीद होने वाले बिहार रेजिमेन्ट के नायक गणेश प्रसाद यादव, पटना जिले के ग्राम पांडेचक (बिन्दौल) के निवासी थे। नायक गणेश प्रसाद यादव 30 मई को दुश्मनों को मारने एवं काफी पीछे धकेलने के बाद वीरगति को प्राप्त की।

बिहार के आरा जिला के पनपुरा गांव निवासी लांश नायक शहीद विद्यानन्द सिंह, ने देश के सरहद के खातिर अपने प्राणों की आहूति दी। बिहार रेजमेन्ट सेन्टर के प्रथम बिहार बटालियन के दो और जांबाज तथा बलिया जिला के दुधिया सथुबाज (उ० प्र०) शत्रुधन सिंह एंव औरंगाबाद जिला के बंचार बंगरा निवासी शिवशंकर प्रसाद गुप्ता दुश्मनों से लड़ते हुए शहीद हुए।

महान लोक कवि काजी नजरूल इस्लाम की जन्मशती के अवसर पर रा०वि०मंच एवं पत्रिका की ओर से श्रद्धा-सुमन अर्पित

"मैं एकता के गीत गाता हूं-
जहां लोगों के जेहन पर
भेदभाव और बंधनों की ,जमी न हो धूल,
जहां हिन्दू, बौद्ध, मुस्लिम तथा ईसाई
सभी हों इक डाली के फूल
मैं एकता के गीत गाता हूं।"

-काजी नजरूल इस्लाम

विश्व विख्यात पहलवान कुश्ती प्रशिक्षक पद्मश्री गुरु हनुमान का सौ साल जीने का सपना काल के क्रूर हाथों ने पूरा नहीं होने दिया।

प्रधानमंत्री वाजपेयी जी ने गुरु हनुमान की मृत्यु पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि गुरु का नाम कुश्ती का प्रर्याय बन चुका था।

राष्ट्रीय विचार मंच की प०बंगाल, कलकत्ता शाखा का गठन:

विगत 31 मई, 99 की संध्या 5 बजे हावड़ा रेल मंडल के सभाकक्ष में मंच के महासचिव श्री सिद्धेश्वर जी की उपस्थिति में कलकत्ता एवं उसके आसपास के प्रबुद्धजनों, रचनाकारों, पत्रकारों, समाजसेवियों तथा रेलवे के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की एक बैठक में सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित कर राष्ट्रीय विचार मंच की प०बंगाल शाखा, कलकत्ता का गठन किया गया जिसके **संयोजक कविवर कमलेश कुमार** तथा दो **सहायक संयोजक श्री अनिल सिंह पटेल एवं श्री रणविजय** श्रीवास्तव निर्वाचित हुए। मंच की तदर्थ समिति के

अन्य सदस्यों में **सर्वश्री चन्द्रशेखर राय, राजेन्द्रराय, राजकिशोर राजन, विप्लव कुमार, रामेश्वर पाण्डेय, हरेन्द्र सिंह, ऋषिकेश राय तथा यमुना प्र०राय** का चयन किया गया। इस समिति को यह भी अधिकृत किया गया कि समिति अपनी इच्छानुसार अच्छी छवि एवं राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत प्रबुद्धजनों में से तीन-चार और लोगों को समिति का सदस्य मनोनीत कर सकती है।

प्रारम्भ में मंच के महासचिव श्री सिद्धेश्वर ने मंच तथा उसके त्रैमासिक मुख-पत्र **"राष्ट्रीय विचार पत्रिका "** के उद्देश्यों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित ऐसे मंच तथा पत्रिका के विस्तार तथा इसकी कलकत्ता शाखा के गठन पर बल दिया।

प्रस्तुति : कलकत्ता से कमलेश कुमार

बिहार में बहार नहीं

❑ रामसंजीवन शर्मा

हमलोग प्राय: कहा करते हैं कि हमारे पूर्वज हाथी पोसते थे। हथियार रखते थे। हाथी को दो मन अनाज खाने को देते थे। पालकी पर चढ़ते थे जिसको सोलह कहार ढोते थे। पर आज हमें बकरी पोसने का भी साहस नहीं हैं। फिर भी हम हाथी का सिक्कड़ अपने कंधों पर रखकर कहते चलते हैं कि हम हथियानसेन के बेटा-पोता हैं। अपने पूर्वजों का नाम बेचकर हम बड़ा बनना चाहते हैं। यह दुनिया इतिहास की दुहाई देकर जीने वालों की नहीं होती है। यह दुनियाँ कर्मवीरों की होती है, कर्महीनों की नहीं। यह दुनियां इतिहास बनाने वालों की होती है। जो राष्ट्र इतिहास की दुहार्द देकर जीना चाहता है वह नष्ट हो जाता है। गांधी जी का फोटो दफ्तर और घर में टांगने से काम नहीं चलेगा। गांधीजी की जिदंगी जीना होगा। आज के बिहारी नेता और बिहार के लोग अपने पूर्वजों का नाम बेचकर और उनके नाम का माला जपकर बिहार की इज्जत बढ़ाना चाहते हैं। वे हर सभा में कहते हैं कि हमारा बिहार बुद्ध, महावीर, अशोक, वीर कुवंर सिंह, डा०राजेन्द्र प्रसाद, जय प्रकाश नारायण, प्रो०अब्दुलबारी, बिरसा मुंडा आदि महापुरुषों की जन्मभूमि है।

इन महापुरुषों के नाम का माला जपना और काम इनके आदर्शों के ठीक उल्टा करना अपने आप को बेवकूफ बनाना और समाज को ठगना है। हम यह भी कहते चलते हैं कि बिहार में कोयला, अबरख, जस्ता, लोहा, प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। हमारे जंगलों में तरह-तरह की कीमती लकड़ियां पायी जाती हैं। नदियां सालों भर जलपूरित रहती हैं जिससे सिंचाई का काम अच्छी तरह हो सकता है।

गांधीजी बराबर कहा करते थे कि किसी भी देश की शक्ति वहाँ के लोग होते हैं। अगर आदमी ठीक है तो सारी चीजें आप से आप ठीक हो जायेंगी। अगर आदमी बेठीक है तो सारी चीजें अव्यवस्थित हो जाती हैं। यह बात सही है कि हमारे प्रांत में विकास के सारे साधन उपलब्ध हैं। लेकिन हम बिहारवासी खुद विकसित नहीं हैं। हमारे पास न राष्ट्रीयता है और न लोकहित की भावना। हम राष्ट्र की चिंता बिल्कुल नहीं करते। चिंता सिर्फ लुट-खसोट कर दौलत बटोरने की करते हैं। नैतिकता का सर्वथा अभाव है। नख से सिख तक हम भ्रष्टाचार की वैतरणी में डूबे हुए हैं। मंत्री से संतरी तक लूटेरा बना हुआ है। हमारे प्रांत की राजनीति भ्रष्टाचार की कर्मनाशा बनी हुई है। चाहे पदस्थापना हो या स्थानांतरण बिना दिए कोई काम नहीं होता है। जहां की राजनीति में भ्रष्टाचार घुसा है वहां की नौकरशाही तो भ्रष्ट होगी ही। कोई पूछने वाला है कि हमारा राजनेता मंत्री बनने के पहले कौड़ीपति था और जैसे ही विधानसभा, लोकसभा का सदस्य या मंत्री बनता है तो रातोंरात करोड़पति कैसे बन जाता है? क्या उसे इतना वेतन मिलता है कि लाखों रुपये प्रतिमाह बचा सके? बात साफ है कि वह अनैतिक रास्ता अपनाकर पैसा कमाता है। आप छोटा बड़ा किसी दफ्तर में चले जाइए बिना घुस दिए आपका काम नहीं बनेगा। आप किसी के पास शिकायत भी नहीं कर सकते हैं। क्योंकि सुनने वाला कौन है। नीचे से उपर तक सभी चोर हैं। कोई चोरी का छुटभैया है तो कोई बड़भैया।

"हर तरफ जल्लाद है तो जीना कैसा!
काजी ही गैर इंसाफ है तो फरियाद कैसा!!

विकास के नाम पर जो भी पैसा आवंटित होता है वह आम जानता के पास जाने के पहले ही लूट जाता है। पूर्व प्रधानमंत्री **राजीव गांधी** ने पटना की एक सभा में कहा था कि **"मैं जो एक रुपया दिल्ली से गांवों के विकास के लिए भेजता हूं, गांव वालों के पास पहुंचते-पहुंचते मात्र सोलह पैसा ही रह जाता है। चौरासी पैसे व्यवस्थापक रास्ते में ही शोख लेते हैं।"** अब आप ही कहें कि गांवों का विकास कैसे होगा। और गांवों का विकास नहीं होगा तो देश का भी विकास नहीं हो सकता है। क्योंकि भारत मूलत: गांवों का देश है।

हमारे देश के किसान और खासकर बिहार और पंजाब के किसान अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। बिहार कृषि प्रधान प्रांत है और यहां की आबादी कृषि पर ही निर्भर करती है। किंतु सबसे बड़ी बिडंबना यह है कि जोतने वाले के पास जमीन नहीं है और जिसके पास जमीन है वह जोत नहीं सकता। नतीजतन भूस्वामी और खेतिहर मजदूरों के बीच संघर्ष छिड़ जाता है। राजनीति की भाषा में ऐसे लड़ने वालों को उग्रवादी, नक्सलवादी, एम.सी. सी. आदि नामों से पुकारा जाता है। किंतु नैतिकता की भाषा में ये रोटीवादी हैं।ये रोटी की लड़ाई लड़ते हैं। इस लड़ाई का असर कृषि उत्पादन पर भी पड़ता है। नैतिकता का तकाजा यह है कि जमीन का मालिक वह हो जो जमीन को जोतता, कोड़ता-बोता है। बिहार प्रांत में किसानों की हालत बहुत बुरी है। नहर से पानी नहीं मिलता है। फिर भी पानी का रेंट किसानों को देना पड़ता है। आहर-पोखर के रूप में जितने पानी के भंडार थे सभी भर दिए गए हैं और उनपर अनाधिकार कब्जा कर लिया गया है। अधिकांश गांवों में बिजली की आपूर्ति नहीं हैं। इससे किसान बोरिंग कुंआ से खेत नहीं पटा सकते हैं। जहां पर बिजली की आपूर्ति है वहां भी बिजली के तार कटे रहते हैं और ट्रांसफार्मर खराब रहता है। अत: फसल को पानी नहीं मिल पाता है और उत्पादन कम हो जाता है। सिर्फ सिंचाई की सुविधा हो जाय तो अभी जितना उत्पादन हो रहा है उससे दोगुना अनाज का उत्पादन हो सकता है। किसानों को उन्नत बीज और खाद भी समय पर नहीं मिल पाता है। अगर मिलता भी है तो काफी मंहगा पड़ता है। फसल में बीमारी लगने पर दवा छिड़काव की कोई व्यवस्था नहीं है। अधिकतर सहकारी समितियों मृतप्राय हैं। वे किसानों को खेती के लिए कर्ज मुहैया नहीं कर पाती हैं। किसान अनाज का भंडारीकरण अपने स्तर से नहीं कर पाता है और न सभी जगह इसकी व्यवस्था है ऐसी स्थिति में किसान बहुत सस्ते दामों पर गल्ला महाजनों के हाथ बेच देते हैं। देखा जाय तो किसान गरीबी में पलते हैं और गरीबी में मर जाते हैं। शहरीकरण की वजह से गांवों में खेतीहर मजदूरों की कमी हो गई है। नतीजा यह होता है कि जोतनी, बोअनी, कटनी समय पर नहीं हो पाता है। इस तरह देखा जाय तो खेतीबारी का काम भी इस प्रांत में ठीक से नहीं हो रहा है। फिर भी हम कहते है कि **बिहार भारत का 'ग्रोनरी' है।**

अस्पताल इसलिए बना है कि वहां सरकारी खर्चे पर रोगियों का इलाज हो। पर अस्पताल में होता क्या है? सरकारी डाक्टर घर पर निजी अस्पताल खोले हुए हैं। निर्धारित समय पर वे अस्पताल नहीं जाते हैं। उनके कनीय डाक्टर या अस्पताल के अनुभवहीन विद्यार्थी मरीज देखते हैं। यह भी सुना जाता है कि सरकारी अस्पताल के डाक्टर एजेंट रखते हैं जो रेलवे स्टेशन तथा बस पड़ाव से मरीजों को भूलावा देकर उनके क्लिीनिक ले जाते हैं। आप अस्पताल में भर्ती होते हैं तो आप को सूई दिलाने के लिए सूई खरीदनी पड़ती है और बैंडेज कराने के लिए रूई

और बैंडेज का कपड़ा खरीदना पड़ता है। दवा तो शत-प्रतिशत बाजार से खरीदनी पड़ती है। तरह-तरह की जांच भी रोगियों को निजी जांच घर में कराना पडता है। गरीब मरीजों को भोजन, दूध, फल देने का प्रावधान सरकारी अस्पताल में है। पर क्या व्यवहार में ऐसा है? इस मद का पैसा अस्पताल के अधिकारी और कर्मचारी चाट जाते हैं। बिस्तर पर साफ चादर तक नहीं रहती है। किसी-किसी अस्पताल में तो मरीजों की सीट पर कुते आराम फरमाते दिखाई पड़ते हैं। नर्स तथा दाई तो अस्पताल में दिखाई पड़ती हैं पर डाक्टरों का आना-जाना उनकी मर्जी और फूर्सत पर है। अपनी इच्छानुसार अस्पताल आते जाते हैं। समाज को दो प्रतिशत मरीजों का भी इलाज अस्पतालो में नहीं होता है। आजकल तो लोग आम तौर से कहते रहते हैं कि सरकारी अस्पताल में रोगी इलाज कराने के लिए नहीं बल्कि मरने के लिए जाता है। फिर भी हम यह कहते नहीं थकते हैं कि करूणा के अवतार भगवान बुद्ध के धरती में हम बसते हैं।

शिक्षा की स्थिति स्वास्थ्य से कम बदतर नहीं है। प्रोफेसर, शिक्षक घर पर ट्युशन करते हैं। निजी कोचिंग केन्द्र चलाते हैं। हमलोगों के जमाने में कोचिंग नाम की कोई चीज नहीं थी। परीक्षा भवन में चोरी की बात कोई सोच भी नहीं सकता था। आज पैसे के बल पर अयोग्य छात्र को अधिक अंक मिल जाता है और योग्य छात्र जो अपनी योग्यता के अनुसार उत्तर देता है वह मारा जाता है।

"पैसा गर पास है तो पढ़ना जरूरी नहीं,
कोरी भी कॉपी तो नम्बर मिल जाता है।
पैसे ने तोड़ दिया शिक्षा के मंदिर को,
झुठी पढ़ाई और झूठी परीक्षा है।"

आज तो परीक्षार्थी प्रश्नपत्र लेकर घर चले जाते हैं। और संध्या समय परीक्षा भवन में उत्तर पुस्तिका वीक्षक को लौटा देते हैं। ऐसा गोरखधंधा लोकसेवा आयोग की परीक्षा में भी होता है। वहां भी चोरी, घुसखोरी और भाई-भतीजावाद चलता हैं नतीजतन योग्य और मेधावी छात्र नौकरी में नहीं आते हैं। और बौने कद के लोग येन-केन प्रकारेण प्रशासन में प्रवेश पा जाते हैं। फलत: प्रशासन की गरिमा-क्षमता नष्ट हो जाती है। जहां की नौकरशाही क्षमताहीन होगी वहां सरकार ठीक से नहीं चल सकती है। कायदा-कानून को ठीक से समझना और तदनुसार राज संचालन करना नौकरशाही का प्रमुख काम है। जब दबाव से या मनमाना ढंग से काम होगा तब सरकारी निर्णय नियमानुसार नहीं होगा और सरकारी व्यवस्था भी ठीक नहीं होगी। सरकारी व्यवस्था भी ठीक नहीं होगी। सरकार की नीति जब ढुलमुल होती है तब कोई भी विकास या कल्याण का काम नहीं हो सकता। आज जो भी अधिकारी कायदा-कानून से काम करता है, पैरवी नहीं सुनता है और गलत काम का विरोध करता है उसको प्रताड़ित किया जाता है। उसे कार्यालय में घुस कर मारा जाता है। मैंने तो यहां तक देखा है कि जो अधिकारी राजनीतिज्ञों की बात नहीं सुनता है और उसके गलत काम में साथ नहीं देता है उसका अपहरण तक कर लिया जाता है। जहां की पुलिस और प्रशासक दवाब में आकर काम करने लगते हैं वहां आम लोगों को सामाजिक न्याय नहीं मिल सकता है और न लोकहित का काम हो सकता है। प्रशासक को न डरना चाहिए और न हीन भावना से ग्रसित होना चाहिए। उसे निर्भिक होकर नियमानुसार काम करने की छूट मिलनी चाहिए। ऐसा यहां कहा होता है? यहां तो उच्चपदस्थ अधिकाररियों को भी डराया-धमकाया जाता है। ऐसी स्थिति में नौकरशाहों से स्वस्थ तथा स्वच्छ प्रशासन की उम्मीद नहीं की जा सकती है।

किसी भी देश तथा किसी भी स्थान में विकास का काम तबतक नहीं हो सकता है जबतक वहां शांति न हो। अशांत वातावरण में कल्याण तथा लोकहित का काम हो नहीं सकता। आज पूरे बिहार में अशांति ही अशांति है अपराध कर्मियों का बोलबाला है। चोरी-डकैती, अपहरण-राहजनी छूटकर हो रहा है। एक तरह से यहां जंगलराज है। गंदे लोग आज राजनीति में प्रवेश कर गए हैं। समाज तथा राजनीति दोनों का अपराधी करण हो गया है। लठैतों और गुंडो के बल पर चुनाव जीता जाता है। और संदिग्ध चरित्रवाले लोकसभा और विधानसभा के माननीय सदस्य बन जाते हैं। इस तरह के रंगदार लोग प्रत्येक दल में हैं। आज पुलिस अपराधियों से निपटने में अपने को पूर्णत: असमर्थ पा रही हैं। जिस प्रांत का आरक्षी महानिराक्षक यह कहता है कि राजनीतिज्ञों के दखलंदाजी से पुलिस अपना काम ठीक से नहीं कर पाती है उस प्रांत का भला भगवान भी नहीं कर सकता है। थानेदार यहां राजनीतिज्ञों के इशारे पर अपना काम करते हैं। कुछ दिनो पहले अपराध पर नियंत्रण के लिए सभी राजनीतिक दलों की एक बैठक हुई थी। उसमें यह पाया था कि राजनीति को अपराधीकरण से रोका जाय। किंतु परिणाम सबके सामने है। यह तबतक संभव नहीं है जबतक निर्वाचन नियमावली में संशोधन नहीं किया जाय। अपराधी प्रवृति के लोग जबतक चुनाव लड़ेगे और चुनाव में सक्रिय सहयोग देंगे तबतक राजनीति का अपराधीकरण होता रहेगा। जिस प्रकार अपराधी प्रवृति के लोगों को सरकारी नौकरी में प्रवेश पर प्रतिबंध है उसी तरह अपराधी प्रवृति के लोगों पर भी संसद, विधानसभा में जाने पर रोक लगाना चाहिए। आज कमजोर मतदाताओं को मत देने से रोकना, बूथ कब्जा करना, मतपत्रों को फ़ाड़ना और मतपेंटियों को लूटने को काम कोई शरीफ आदमी नहीं करता। यह काम राजनेता गुंडों से करवाते हैं। जबतक यह काम नहीं रूकेगा तबतक चुनाव सिर्फ मजाक बनकर रह जाएगा और अपराधकर्मी संसद और विधान सभा में जाते रहेंगे।

किसी भी देश या प्रांत की तरक्की तबतक नहीं हो सकती है जबतक महिलाओं की भागीदारी सकारात्मक रूप से नहीं हो। आज हमारे प्रांत की नारी शक्ति का उपयोग रचनात्मक नहीं हो रहा है। महिलाएं कुंठित अवस्था में जी रही हैं। न राजनीति में और न प्रशासन में उनको सम्मानजनक स्थान मिल रहा है। वे पुरुष प्रधान समाज में उपेक्षित तथा प्रताड़ित होकर जी रही हैं। जहां की मां शिक्षित नहीं हैं वहां के बच्चे कभी भी अच्छे नागरिक नहीं बन सकते हैं। नैतिकता और नागरिकता की प्रारंभिक शिक्षा मां के आंचल में मिलती है।

अंत में मेरा कहना है कि सभी कर्मो का कर्त्ता-धर्त्ता मनुष्य है। अगर वह ठीक है तो उसके द्वारा किया गया सभी कार्य ठीक होगा। चाकु से एक डाक्टर जख्म को चीरता है और उसी चाकू से एक अपराधी किसी की हत्या कर देता हैं इसमें दोष गुण चाकू का नहीं है। दोष-गुण तो उस चाकू को इस्तेमाल करने वाले का है। भौतिक विकास और वैज्ञानिक प्रवृति का लाभ मनुष्य को तबतक नहीं मिलेगा जबतक मनुष्य संवेदनशील और चरित्रवान नहीं होगा। अत: आदमी को ठीक होना विकास की पहली और आखिरी शस्त्र है। काश ! हमारा बिहार इस कसौटी पर खरा उतरता।

संपर्क-वित्त विभाग कॉलोनी-2,
खाजपुरा, मौर्यपथ, पटना-14

बिहार की खोई प्रतिष्ठा वापस लाने का प्रयास

रा०वि०प्रतिनिधि

विगत एक दशक की अवधि में चारा, अलकतरा, भूमि, मेधा आदि घोटाले तथा विभिन्न क्षेत्रों में आये दिन हो रहे नरसंहार, बलात्कार, हिंसा एव अपहरण की घटनाओं से बिहार की प्रतिष्ठा गिरी है, इसमें कतई संदेह नहीं। यही नहीं केन्द्र सरकार द्वारा प्रायोजित योजनाओं के क्रियान्वयन में न केवल शिथिलता बरती गई है बल्कि बिहार सरकार के द्वारा अरबों रुपये बिना उपयोग किए जाने के परिणामस्वरूप **'सरेन्डर'** किए जा चुके हैं। बिहार का विकास अबरूद्ध है, इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता। किन्तु ऐसे समय में भी यहां के मंत्रियों द्वारा ऐसे कार्य हो रहे हैं जिनसे यह आशा बंधी है कि बिहार की खोई प्रतिष्ठा वापस आ सकती है। भारत सरकार के रेल एवं भूतल परिवहन मंत्री श्री नीतीश कुमार के द्वारा पूरे देश के साथ साथ बिहार राज्य में रेल तथा राष्ट्रीय राजमार्गो के जाल बिछाने के प्रयास का उल्लेख करना गैर मुनासिब नहीं होगा। आप इस बात से अवगत हैं कि पिछले दिनों राष्ट्रपति शासन लागू किए जाने की 25 दिनों की अवधि में केन्द्र सरकार के द्वारा बिहार की विभिन्न योजनाओं के मद के लिए तकरीबन 25000 करोड़ रुपये की स्वीकृति मिली जिनमें बाढ़ तथा हजारीबाग के दो-दो हजार थर्मल पावर स्टेशन का निर्माण तथा राजगीर में आयुध कारखाने की आधारशिलाा उल्लेखनीय है। इसी प्रकार फतुहा-इसलामपुर तथा आरा-सासाराम बड़ी रेल लाइन के निर्माण की दिशा में उठाए गए कदम सराहनीय हैं। इसके हजारीबाग-रांची रेलवे के निर्माण तथा बिहार शरीफ से शेखपुरा तक रेलवे निर्माण कार्य सर्वेक्षाण कराये जाने की खबर से उपेक्षित क्षेत्रें के लोग स्वभावत: प्रसन्न हैं। इसी प्रकार पटना-गया रेलवे लाइन के दोहरीकरण से लेकर राजगीर को गया से रेलवे से जोड़ने तथा उत्तरी बिहार में रेल की अनेकों नई परियोजनाओं का कार्यान्वयन इस बात का गवाह है कि हमारे जन-प्रतिनिधि बिहार की प्रगति के लिए पर्यत्नशील हैं।

हाल ही में भागलपुर में रोड ओवरब्रिज का शिलान्यास तथा वहां मंडल रेल कार्यालय खोलने का रेलमंत्री के आश्वासन से बिहार की जनता आशान्वित है। इसके पूर्व भूतल परिवहन मंत्री बनने पर श्री नीतीश कुमार के द्वारा साढ़े चार सौ किलोमीटर से भी अधिक बिहार में राष्ट्रीय राजमार्ग के निर्माण की स्वीकृति उल्लेखनीय है। फतुहा-दनियावां-चंडी-हरनौत-बाढ़ तथा मोकामा-सरमेरा-बरबिघा-बिहारशरीफ रोड को राष्ट्रीय राजमार्ग में शामिल करने की योजना बनाकर श्री नीतीश कुमार यहां की जनता की नजर में ऊपर उठे हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि जिन क्षेत्रों में रेलवे लाइन तथा भूतल परिवहन के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग बनाने का कार्यक्रम रेल एवं भूतल परिवहन मंत्री के द्वारा बनाया गया है वे क्षेत्र निश्चित तौर पर पिछले कई दशक से उपेक्षित तथा विकास की योजनाओं से वंचित थें।

बिहार के तथागत का कमाल

सबसे कम उम्र में मैट्रिक, इंटर तथा स्नातक(प्रतिष्ठा) की डिग्री प्राप्त कर **ग्रिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकर्डस** में अपना नाम दर्ज करा चुके **साढ़े ग्यारह वर्षीय तथागत अवतार तुलसी** अब अपनी मौलिक खोज के लिए एक बार फिर सुर्खियों में आ गया है। भूगर्भशास्त्र में अपनी इस मौलिक खोज से न केवल भूगर्भवेत्ताओं को हैरत में डाल दिया है बल्कि उसने बिहार का नाम सारी दुनिया में रौशन किया है। पटना के बी०एन०कॉलेज, भूगर्भविज्ञान के अध्यक्ष **डॉ०एस०एन०सिन्हा** ने तथागत को इस संबंध में मार्गदर्शन के लिए बुलावा भेजा है। उल्लेखनीय है कि तथागत ने गया जिले में एक विशेष किस्म के पत्थर व बराबर पहाड़ी पर अनुसंधान किया है।

भूगर्भशास्त्री तथा पुरातत्ववेत्ताओं का मानना है कि तथागत की इस खोज से दिल्ली के कुतुबमीनार परिसर स्थित लौह-स्तंभ की अनबुझ पहेली भी सुलझा सकेगी।

रा०वि०पत्रिका की ओर से तथागत को हार्दिक बधाई।

रा०वि०संवाददाता

बिहार के स्वतंत्रता सेनानी पर एक नई पुस्तक

महात्मा गांधी की कर्मभूमि चम्पारण के स्वतंत्रता सेनानी स्व०विपिन बिहारी वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर डॉ०शिवनारायण लिखित पुस्तक **'' चम्पारण के स्वतंत्रता सेनानी: विपिन बिहारी वर्मा''** विगत दिनों उपराष्ट्रपति के आवासीय सभागार में आयोजित एक समारोह में उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकांत को भेंट की।

उक्त अवसर पर बौद्ध दर्शन के ख्यातिलब्ध विशेषज्ञ एवं लेखक **श्री रोमेल वर्मा** ने स्व०वर्मा के सार्वजनिक जीवन में सक्रिय होने की प्रेरणा के बारे में रोचक एवं शोधात्मक जानकारी दी।

आरम्भ में अतिथियों का स्वागत करते हुए बिहार के पूर्व मंत्री श्री उमेश प्रसाद वर्मा ने कहा कि स्व० विपिन बाबू पूज्य गोंधी जी के दिशा-निर्देश में राष्ट्र-सेवा का व्रत लेते हुए जीवनपर्यन्त सामाजिक एवं राजनीतिक सेवा में सक्रिय रहे, जिसमें उनके लगभग 25 वर्षो का संसदीय जीवन भी शामिल है।

पुस्तक-लेखक डॉ० शिवनारायण ने अपने भाषण में कहा कि जीवन के प्राय: सभी क्षेत्रों में मूल्य-स्खलन के जिस संक्रमण दौर से वर्तमान पीढ़ी गुजर रही है, उसमें विपिन बाबू जैसे एकांत राष्ट्रभक्त की जीवनी देशप्रेम एवं मूल्यों के प्रति हमारी आस्था को दृढ़ करेगी।

इस सारस्वत समारोह में योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री के०सी० पंत, वित्तमंत्री श्री यशवंत सिन्हा, पूर्व रेलमंत्री श्री रामविलास पासवान, पूर्व केन्द्रीय मंत्री कैप्टन जयनारायण प्रसाद निषाद, **''नई धारा''** के सम्पादक श्री उदयराज सिंह, प्रसिद्ध पत्रकार **श्री खुशवंत सिंह, श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा**, सुलभ इन्टरनेशनल के अध्यक्ष **डॉ०विन्देश्वर पाठक, डॉ०वैद्यनाथ शर्मा**, राजद नेत्री **प्रो०नीलम नीलकमल, प्रो०निशांतकेतु** सहित बड़ी संख्या में राजनेता, लेखक, बुद्धिजीवी एवं हिन्दी सेवी उपस्थित थे।

पूर्व सांसद **श्री धर्मेश प्रसाद वर्मा** के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही समारोह सम्पन्न हुआ।

प्रस्तुति:डॉ०शिवनारायण,1सी०,अशोकनगर,पटना

बिहार की विभूति अमेरिका की चुनौती बनी :

अमेरिका के मेडिकल साहित्यकार : डा०विजय कुमार मेहता

❑पद्मश्री डा० लक्ष्मीनारायण दूबे

डा० विजय कुमार मेहता अमेरिका के प्रख्यात हृदय रोग विशेषज्ञ हैं और साहित्य की सृजनधर्मिता के साथ अपने हृदय की सम्वेदना को दूसरों की हृदयस्पर्शिता बना रहे हैं। जहां भागीरथी को बिहार में जाह्नवी का रूप मिला-उसी भागलपुर जिले की एक साहित्यिक प्रतिभा ने बिहार के आचार्य शिवपूजन सहाय, रामधारी सिंह 'दिनकर' तथा रामवृक्ष बेनीपुरी की धरती से जुड़कर, न्यूयार्क की भागमभाग वाली दुनिया में अपना स्थान बना लिया। भीखनपुर ग्राम का एक बालक, सुरसागर तथा कामायनी जैसी रचनाओं से प्रभावित होकर, चिकित्सक की भावना को बलवती करते हुए, परिवेश के प्रभाव के कारण साहित्य-जगत का भी चिकित्साविद् बन गया। विगत तीन दशकों से रचनाधर्मिता के साथ प्रतिबद्ध डा०विजय कुमार मेहता ने हिन्दी वांगमय को दो सुन्दर एवम् श्रेष्ठ कृतियां प्रदान की हैं। 5 जनवरी, 1944 को जन्में तथा 1967 में अमेरिका आए डा० विजय कुमार मेहता अमेरिका के सामाजिक, सांस्कृतिक एवम् साहित्यिक संस्थाओं से सम्प्रक्त होकर अमेरिका में मधुमास ले आए-

मधु मास के है फूल सुरभित,
मधुरिमा के उन क्षणों के
कुछ ही कणों को है बचाया
मधुमास के उस फूल को
कुछ गीत ने मैंने सजाया

<u>और</u>

आज क्या मैं गीत गाऊं?
दूर है मधुमास की छवि
उर कोकिला अब सो रहा है
श्याम नीजनी में कुमुदिनी
चांदनी बिन रो रही है।

'मधुमास के फूल' (1995) की यात्रा की सफल परिणति उनकी द्वितीय काव्यकृति 'पुष्पाजंलि' (1997) में होती है। वसंत के पुष्प अंजलि में जाकर साहित्य देवता के चरणों में बिखर पड़ते हैं-

अर्चना के पुष्प मेरे
ज्ञान, दर्शन, काव्य का
व्योम फैला है अपरिमित,
लघु विहग में पंख जर्जर,
है नयन की दृष्टि सीमित
भावना के लघु सुमन ये,
हैं समर्पित चरण तेरे
अर्चना के पुष्प मेरे।।

इन दो काव्यकृतियों के प्रकाशन में विश्व हिन्दी समिति का सहयोग सराहनीय रहा।

डा०विजयकुमार मेहता का प्रथम काव्य-संग्रह **'मधुमास के फूल'** मूलत: प्रकृति-प्रणय एवम् श्रृंगार रस की सफल-सार्थक अभिव्यक्ति है। इसमें कवि का ताारूण्य एवम् यौवन बिखर गया है। गेयता तथा रसानुभूति की दृष्टि से यह उत्तम काव्य है। इसमें बिहार तथा न्यूयार्क की सम्मिलित भावनाएं गुम्फित है। बिहार का युवक, बिहार की पुनीत तथा मादक स्मृतियों में तल्लीन हो जाता है-

मंदिर की पुण्य विमल प्रतिमा
गंगा की उज्ज्वल सलिल लहर
मंत्रों का मधुमय गान विमल
शैशव का उज्ज्वल सकल प्रहर
अति सुरभि से बिखर बिखर।।

'पुष्पाजंलि' का नयी दिल्ली में भारत के वर्तमान प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने लोकार्पण किया। इस संकलन में 43 कविताएं हैं। इनमें सरस्वती, भगवान शिव, प्रकृति, सृष्टि तथा राम के पुन: धरती पर अवतरण को रेखांकित किया गया है। कतिपय कविताएं वर्तमान संस्कृति के कटु सत्य को भी उद्घाटित करती हैं। डा० विजय कुमार मेहता की अभिव्यक्ति में कर्म एवम् काव्य तथा अध्यात्म एवम् भौतिकवाद का अनूठा संगम हैं। गंगा पुत्र विजय कुमार मेहता गंगा का स्तवन करना भी विस्मरण नहीं करते हैं।

डा०विजय कुमार मेहता के पेशे तथा रचनाधर्मिता में समानता की भूमिका न होने पर भी मानवता के कल्याण में उनके व्यक्तित्व के
दोनों आयामों को सफलता तथा साकारत्व मिला है। इसमें गीति-विधान को प्रमुखता मिली है। उनका रचनाकर्मी एक वैज्ञानिक कवि के अर्न्तद्वन्द्व तथा चिकित्सक की आत्मानुभूति को उद्घाटित करता है। उनमें अध्यात्म एवम् लौकिकता का संघर्ष दृष्टिगोचर होता है। वे आत्मा तथा परमात्मा की ओर भी संकेत करते हैं। डा०मेहता की कविताओं में अन्तर्मन के विविध आयामों तथा उनकी अनुभूतियों को उकेरा गया है। उनके गीत आनंदानुभूति प्रदान करते हैं।

डा०मेहता के गीत भाषा, शैली तथा काव्य-शिल्प की दृष्टि से अत्यंत रोचक, सरस, प्रभावोत्पादक एवम् सहज हैं। मधुमास की सुगंध से ओतप्रोत ये रचनाएं हमारे हृदय पक्ष को सम्वर्द्धित कर देती हैं। आत्म-विभोरता इनकी अप्रतिम विशेषता है। उनमें प्रौढ़ता के साथ-साथ सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की लक्ष्यभेदी प्रवृति है। उनमें आशावादिता तथा सुन्दर कल्पना-नीड़ की संस्थिति है। भाषा की परिपक्वता, प्रांजलता तथा उभर के साथ ही साथ नवीन उपमाओं तथा परिष्कृत कल्पनाओं का मोहक संसार भी इनमें रचा-बसा है। वे मूलत: प्रकृति तथा श्रृंगार के रचयिता है। डा० मेहता हृदय के साथ सांगोपांग रूप में औचित्यपूर्ण न्याय कर रहे हैं क्योंकि उसकी चिकित्सा के साथ उसकी अभिव्यंजना भी प्रस्तुत कर रहे हैं । यहां आकर एक नव तरुण वैज्ञानिक का स्वरूप धारण कर, आत्मानुभूति को प्रतिबिम्बित कर रहा है। इन कविताओं में देश, काल तथा युगधर्म की वाणी सस्वर हो गयी है।

डा०विजय कुमार मेहता की भूमिका अत्यंत प्रौढ़ तथा चिंतनपरक है। अमेरिका में हिन्दी के प्रचार-प्रसार तथा उसे विश्वभाषा बनाने में डा० मेहता की भी सक्रिय भूमिका कार्यरत है। एक वैज्ञानिक की **'विज्ञान'** के प्रति सोच को यह कविता मार्मिकता प्रदान करती है-

युगों युगों की घोर साधना,
चिर अर्चन का यह वरदान,
अर्थदायिनी शक्तिदायिनी,
प्राणदायिनी यह विज्ञान,

यदि जयशंकर प्रसाद गाते हैं **'बीती विभावरी जाग री'** तो डा०मेहता भी कहते हैं-

रस की गागर लेकर आयी,
मधु कुसुम-कली अति मतवाली,
रजनी की मादक बेला में,
पी-पीकर मदिरा मस्त हुई।
नवयौवन की मधुरिमा बाला,
झूम झूम मदमस्त हुई।।

महादेवी वर्मा गाती हैं 'मधुर मधुर मेरे दीपक जल' तो डा० मेहता कहते हैं-

नवप्रभात में अभी देर है,
ज्योर्तिमय लघु दीपक जल।
अम्बर तक फैली यह रजनी,
तू लघु किरण-बहरन बन जा,
आमावस के गहन तिमिर में,

प्रिय, तू चंद किरण बन जा।
आलोक मधुर बिखराओ प्रतिपल

प्रकृति प्रेम तथा सांस्कृतिक विरासत के इस प्रौढ़ रचनाकर्मी से हिन्दी वाङ्मय को अभी अनेक आशा-अपेक्षाएं है।

डा०मेहता की धर्मपत्नी भी चिकित्सक और स्त्री रोग विशेषज्ञ हैं। डा०मेहता सम्प्रति ईसा पूर्व छठी शताब्दी को केन्द्र में रखकर एक प्रबंधकाव्य लिख रहे हैं जिसमें बिहार को प्रमुखता मिली है। उनका गृह राज्य बिहार उनके काव्य का मूल विषय बनेगा। मगध साम्राज्य के सम्राट् बिम्बसार, भगवान गौतम बुद्ध, अजात शत्रु, वैशाली की नगर वधू, आम्रपाली, लोकतंत्र का उद्भव, उदयन आदि के पात्र इसमें प्रधानता प्राप्त कर सकेंगे।

डा०मेहता का अभिमत है कि भारत में सर्वप्रथम देश को एक सूत्र में जोड़ने की अवधारणा बिहार से आयी और इसमें तथागत तथा बिम्बसार की महत्वपूर्ण तथा सक्रिय भूमिका रही। डा०विजय मेहता के इस महाकाव्य का हिन्दी जगत को विशेष प्रतीक्षा है ताकि पुरातन भारत की गरिमा एवम् भव्यता उद्घाटित हो सके।

संपर्क- 'लक्ष्मीकांतम' रोड नं०-2,
आनंदनगर, मकरोनिया सागर (म०प्र०)

शताब्दी का आखिरी मिस यूनीवर्स
मिस बोत्सवाना म्पुले क्वेलागोबे

इस शताब्दी की आखिरी मिस यूनीवर्स **उन्नीस वर्षीय म्पुले क्वेलागोबे** चुनी गयी हैं जो दक्षिण **अफीकी देश बोत्सवाना** की ओर से पहली बार इस सौन्दर्य प्रतियोगिता में हिस्सा लिया।

अंतिम राउंड में उससे पूछा गया कि **क्या मिस यूनीवर्स को गर्भवती बनने के बाद इस उपाधि को छोड़ देना चाहिए।** उसने जवाब दिया-**'मैं व्यक्तिगत रूप से सोचता हूं कि यह उसके कार्यो की राह में आड़े नहीं आना चाहिये। उसे अपने स्त्रीत्व पर गौरव होना चाहिए।** क्वेलागोवे के इस जवाब पर दर्शकों ने जबरदस्त तालियां बजाकर उसकी सराहना की । दूसरा स्थान फिलिपींस की **23 वर्षीय मिरियम क्वायंबाओं** को मिला। **24 वर्षीय मिस स्पेन आयना नोग्वेरिया** तीसरे स्थान पर रही। **मिस प्यूटोरिको ब्रेंडा लिज लोपेज** को **मिस फोटोजेनिक** और पुर्तगाल की **मारिसा फरेरा** को सर्वश्रेष्ठ व्यवहार का पुरस्कार दिया गया।

शिवाजी जन्मोत्सव समारोह

छत्रपति शिवाजी महाराज के जन्मोत्सव के अवसर पर विगत 30 मई, 1999 को अपराह्न दो बजे **कलकत्ता** के नन्दो मल्लिक लेन स्थित **ओसवाल भवन** में आयोजित **अंतर्राष्ट्रीय कूर्मिक्षत्रिय महासंघ** के प्रथम वार्षिकोत्सव में प०बंगाल के राहत मंत्री माननीय सत्यरंजन महतो ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज के विषाक्त वातावरण तथा जात-पात के माहौल में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय एकता तथा एकबद्धता स्थापित करने को महासंघ का यह प्रयास सराहनीय है। राष्ट्रीय विचार मंच के महासचिव श्री सिद्धेश्वर ने प्रारंभ में दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह का उद्घाटन किया। प०बंगाल, बिहार, असम तथा पूर्वोतर राज्यों के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे प्रतिनिधियों एवं उपस्थित जनों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि पूरे समाज को कूर्मी समाज के सदस्यों से बहुत बड़ी अपेक्षाएं हैं, क्योंकि उसके सदस्यों ने विगत कई वर्षों में अपने आचरण, चरित्र एवं कार्यकलापों के जरिए देश के समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। बिहार में सत्ता की चुनौती स्वीकार कर उस समाज ने न केवल भ्रष्टाचार के विरूद्ध एक अभियान छेड़ा है बल्कि राष्ट्रीय एकता कायम करने में अपनी अहम भूमिका निभाई है। इसके पूर्व श्री सिद्धेश्वर जी ने इस अवसर पर प्रकाशित कूर्मि क्षत्रिय संदेश परिचय पुस्तिका(सचित्र) का लोकार्पण करते हुए इसे एक अनुकरणीय पहल बताया।

प्रारम्भ में स्वागताध्यक्ष श्री राजेन्द्र राय के द्वारा आगत अतिथियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया गया तथा महासंघ के अध्यक्ष एवं सुप्रसिद्ध रंगकर्मी **आत्मानन्द सिंह** ने समारोह की अध्यक्षता की। मंच का संचालन कर रहे महासंघ के महामंत्री श्री अरुण कुमार सिंह ने महासंघ के प्रतिवेदन में उसके उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर राहतमंत्री श्री सत्यरंजन महतो को जहां राजनैतिक एवं सामाजिक योगदान के लिए एक प्रतीक चिन्ह भेंट कर उन्हें सम्मानित किया गया वहीं महासंघ के कार्यकलापों को गति प्रदान करने हेतु **आत्मानन्द सिंह, अरुण कुमार सिंह, किशोर मंडल, राजेन्द्र राय** आदि के अतिरिक्त समाज में अमूल्य योगदान के लिए **श्री रामरतन चौधरी** को भी सम्मानित किया गया।

इस समारोह को **शब्द-कर्म** के संपादक **प्रो०हितेन्द्र पटेल** संबोधित करते हुए समाज के सभी सदस्यों से अपनी एकजूटता का परिचय देकर राष्ट्र के नवनिर्माण में जुट जाने का उन्होंने आह्वान किया।

प्रस्तुति :कमलेश कुमार,कलकत्ता

भारतीय मूल के व्यक्ति को विश्व का सबसे बड़ा पर्यावरण पुरस्कार

विश्व का सबसे बड़ा पर्यावरण पुरस्कार इस वर्ष अमरीकी अर्थशास्त्र के प्रो०तथा पिछले 25 वर्ष से समुद्री संपदा के संरक्षण का अभियान चला रहे एक भारतीय को संयुक्त रूप से दिया गया है। मेरीलैंड विश्वविद्यालय के हरमन डेली और भारतीय थामस कोचरी को कल एक लाख डालर का सोफी पुरस्कार प्रदान किया गया। नार्वे के जोस्टीन गार्डर ने इस पुरस्कार की स्थापना की थी। गार्डर विश्व विख्यात पुस्तक 'सोफीज वर्ल्ड' के रचयिता हैं जिसे दर्शन के इतिहास का गाइड माना जाता है।

पंचायती राज परियोजना को उत्कृष्टता पुरस्कार

इदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नु) के **प्रो०एम०असलम** द्वारा दूर शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत तैयार की गयी **पंचायती राज परियोजना** को **अंतर्राष्ट्रीय कामनवेल्थ ऑफ लर्निंग के अध्यक्ष का उत्कृष्टता पुरस्कार** प्रदान किया गया है। 'इग्नु' की पिछले दिनों यहां जारी विज्ञप्ति के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय निर्णायक समिति ने कार्यक्रम को जपनकारी के माध्यम से ग्रामीण जनसमूह को शक्ति संपन्न बनाने वाला अद्वितीय पाठ्यक्रम स्वीकार किया है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य स्वशासन की प्रक्रिया में प्रभावी सहभागिता के लिए चुने गये कार्यकर्ताओं के माध्यम से जनसमूह को शक्ति संपन्न बनाना है।

पाक प्रधानमंत्री का नापाक इरादा

नवाजशरीफ का भ्रष्टाचारं एक फिल्म में उजागर

बी०बी०सी०के **"कोरेसपोंडेंट"** कार्यक्रम के तहत बने **"फ्रौम पाकिस्तान टू पार्कलैंड भाया एल्फोर्ड"** शीर्षक एक वृतचित्र में पाक प्रधानमंत्री **नवाज शरीफ** और उनके परिवार के सदस्यों पर जाली खातों के जरिये धन का हेर-फेर करने का आरोप लगा है।

इस विवादास्पद फिल्म की सुटिंग के चलते पाक सरकार ने स्थानीय मीडिया के लोगों के खिलाफ कारवाई की थी। कार्यक्रम में बताया गया है कि शरीफ परिवार ने अपनी विदेशी खातों में हजारों डालर स्थानांतरित करने के लिए छद्म नामों से पाकिस्तान के बैंक खातों का उपयोग किया था।

रा०वि०संवाददाता

सातवां विश्वकप और भारत से उम्मीदें समाप्त

❑ प्रभात कुमार सिंह

सचिन तेंदुलकर

शताब्दी का अंतिम क्रिकेट महाकुंभ **'सातवां विश्व कप'** इंगलैण्ड में 14 मई से शुरू हुआ, जो अब तक हुए विश्व कपों के मुकाबले कहीं ज्यादा व्यापक, आधुनिक और रोमांचकारी होगा। 38 दिनों तक चलने वाला यह विश्वकप 16 साल तक कई देशों का भ्रमण करने के बाद अपने मूल स्थान इंगलैंड लौटा है और इंगलैण्ड रिकार्ड चौथी बार विश्व कप की मेजबानी कर रहा है। इसमें 42 मैच होगें। इस विश्व कप में अब तक की सर्वाधिक पुरस्कार राशि 10 लाख अमरीकी डालर रखी गयी है जिसमें विजेता को तीन लाख डालर मिलेंगे। यह विश्व कप कई मायनों में रिकार्ड भेदी विश्व कप साबित होगा जिसमें कई रिकार्ड टूटेंगे और कई नये रिकार्ड बनेंगे। गेंदबाजी में विश्वकप में धुरंधर खिलाड़ियों की कमी नहीं है। आस्ट्रेलिया का ग्लेन मैकग्राथ, डेमियन फ्लेमिंग और शेन वार्न, दक्षिण अफ्रीका का एलन डोनाल्ड, शान पोलम और जैक्स कैलिस, भारत का जवागल श्रीनाथ और अनिल कुम्बले, पाकिस्तान का वसीम अकरम, शोयेब अख्तर और सकलैन मुश्ताक, श्रीलंका का प्रमोदया विक्रमसिघे और मुथैया मुरलीधरन, वेस्टइंडीज का कोर्टनी वाल्श और कर्टली एम्ब्रोज, इंग्लैंड का डेरेन गॉफ और एलन मुलाली, न्यूजीलैंड का साइमन डूल और क्रेग मैकमिलन तथा जिम्बावे का एडो ब्रैन्डस और दक्षिण अफ्रीका का हैन्सी क्रोन्ये।आस्ट्रेलिया का स्टीव वॉ, पाकिस्तान का वसीम अकरम, श्रीलंका का अर्जुन रणतुंगा, इंग्लैंड का एलेक स्टीवर्ट और भारत का मोहम्मद अजहरुद्दीन ऐसे कप्तान हैं जो अपने प्रदर्शन और नेतृत्व से टीम को सही दिशा प्रदान करेंगे। इन मशहूर खिलाड़ियों का यह शायद आखिरी विश्व कप होगा।

वैसे तो इस विश्व कप में महत्वपूर्ण टीमों में **आस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रिका तथा पाकिस्तान** का नाम लिया जा रहा है। लेकिन **भारत की दावेदारी** भी किसी से कम नहीं प्रतीत होता है। भारतीय टीम में प्रतिभासम्पन्न खिलाड़ियों की कमी नहीं है। हमारे बल्लेबाज **'मास्टर ब्लास्टर' तेंदुलकर** का करिश्मा तो **केन्या** के विरूद्ध देख हीं चुके हैं। तेंदुलकर भारत का पहला ऐसा खिलाड़ी है जिसे अमेरिका की टाइम पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर कवर ड्राइव लगाते हुए दिखाया गया है जो भारत के लिए गर्व की बात है तथा जिसकी तुलना फुटबॉल के महान खिलाड़ी मैरोडोना से किया गया है। टीम में प्रतिभासंपन्न खिलाड़ियों की कमी नहीं है। **सबसे भरोसेमंद खिलाड़ी राहुल द्रविड़ है।** राहुल द्रविड़ तथा सौरभ गांगुली का धुंआधार बल्लेबाजी तो श्री लंका के विरूद्ध देखने को मिला जो किसी भी प्रकार के आक्रमण को धज्जियां उड़ा सकता है। अजहर आज विश्व में सबसे अधिक वन डे खेलने वाले तथा सबसे अधिक रन बनाने वाले खिलाड़ी है, फिर अजहर का इंगलैंड में रिकार्ड बहुत ही अच्छा है। अजय जडेजा एक ऐसे खिलाड़ी हैं जो मूड में हों तो किसी भी आक्रमण की धज्जियां उड़ा सकता है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण तो सुपर सिक्स मुकाबले में आस्ट्रेलिया के विरूद्ध देखने को मिला।

अगरकर में विकेट लेने की क्षमता है, जो विश्व में सबसे कम वन डे मैचों में 50 विकेट लेने का रिकार्ड बना चुका है। **देवाशीष मोंहती की स्विंग गेंदबाजी इंगलैंड के भारी मौसम में काफी प्रभावशाली साबित हो रही है।** कुंबले की स्पिन गेंदबाजी के बारे में कौन नहीं जानता है जो हाल ही में दिल्ली टेस्ट की एक पारी की सभी विकटों को लेकर "जिम लेकर" के रिकार्ड की बराबरी की है। ऐसा कारनामा विश्व क्रिकेट में सिर्फ दूसरी बार हुआ है। हमारी क्षेत्ररक्षण थोड़ा कमजोर है, लेकिन इंगलैंड के छोटे मैदानों को देखते हुए यह कोई समस्या है। अत: सब मिलाकर भारतीय टीम के विश्व कप जीतने की प्रबल संभावना है।

पूर्व भारतीय टेस्ट खिलाड़ी **अशोक मांकड़** ने भारतीय खिलाड़ियों के विषय में कहा कि सबसे पहले उन्हें अपने आपको विपरीत स्थितियों में खेलने के अनुरूप बनाना होगा। **दिलीप सरदेसाई** ने कहा कि दक्षिण अफ्रीका की गेंदबाजी घातक है। साथ ही उनकी क्षेत्ररक्षण पर भी पकड़ है। इसकी बदौलत वे मैच के परिणाम को अपने पक्ष में मोड़ सकते है। **नरेन तम्हाणे** ने कहा कि जो टीम दक्षिण अफ्रीका को हरायेगी, वही टीम विश्व कप जीतेगी।

प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने लंदन में भारतीय क्रिकेट टीम के **कप्तान मोहम्मद अजहरूद्दीन, उपकप्तान अजय जडेजा, मैनेजर ब्रजेश पटेल** और **कोच अंशुमन गायकवाड** से वीडियो कांफ्रेंस के जरिये बातचीत कर उनका उत्साह बढ़ाया। उन्होंने कहा कि **'सारा देश लंदन से शुभ समाचार का इंतजार कर रहा है।** सौ करोड़ लोग आपसे ऊंची उम्मीद लगाये हुए है। आप इसे अपने ऊपर बोझ की तरह न लें बल्कि इससे प्रेरणा लें। अपने ऊपर दबाव मत आने दें और ठंडे दिमाग से खेंले जीत हमारी होगी।'

अब जबकि भारत सुपर सिक्स मुकाबले में पाकिस्तान को हरा चुका है तथा दक्षिण अफ्रीका न्यूजीलैंड को हरा चुका है तो भारत को विश्व कप क्रिकेट सेमीफाइनल मे अपना स्थान बनाने के लिए जिम्बावे की पाकिस्तान पर जीत की उम्मीद कर रहा है ताकि आगे के मैचों को जीतकर वह सेमीफाइनल में अपना स्थान बना ले।

मार्क वॉ

संभावनाएं ऐसी है कि अब भारत की उम्मीदें **"हम जीतें, वो हारें, इस भरोसे टिकी है "**

विश्व कप के अम्पायरों के नाम:-

1.डेविड शेफर्ड(इंगलैंड)2.स्टीव बकनर (वेस्टइंडीज)3.श्री निवास बेंकटराघवन(भारत) 4.पीटर विली(इंगलैंड) 5.डारेल हेयर (आस्ट्रेलिया)6. इयान रॉबिन्सन (जिम्बावे)7.के० टी०फ्रांसिस(श्रीलंका)8.स्टीव डन (न्यूजीलैंड) 10.रूडी कोएर्टजन (दक्षिण अफ्रीका)11.जावेद अख्तर (पाकिस्तान)12.डेव आर्कार्ड (दक्षिण अफ्रीका)13.डग कोवी (न्यूजीलैंड)

भारतीय क्रिकेट टीम का नाम:-

1.अजहरूद्दीन 2.तेंदुलकर 3. गांगुली 4. जडेजा 5. श्रीनाथ 6. अगरकर 7.रोबिन सिंह 8.राहुल द्रविड़ 9.नयन मोंगिया 10.निखिल चोपड़ा 11.वेंकटेश प्रसाद 12.एस०रमेश 13.अभय सुरसिया 14.कुम्बले 15.देवाशीष मोहंती

संपर्क : श्री सुभाष प्रसाद सिंह, ग्रा-मई, पत्रा०-फरीदा, थाना-रहूई, नालन्दा

पेस-भूपति की जोड़ी ने पहली बार फ्रेंच ओपेन ग्रैंड स्लैम खिताब जीत इतिहास रचा

शीर्ष वरीयता प्राप्त जोड़ी फाइनल में क्रोएशिया के इवानिसेविच तथा अमरीका के जेफ तरांगो की जोड़ी को 6-2, 7-5 से पराजित कर इतिहास रचा। फ्रेंच ओपेन के बाद युगल की नयी वरयता सूची में भारतीय जोड़ी विश्व में

शीर्ष स्थान पर होगी। इस खिताबी जीत से पेस व भूपति को 276,660 अमरीकी डालर (लगभग एक करोड़ 16 लाख रुपये) का पुरस्कार मिला। पराजित इवानिसेविच व तरांमो की जोड़ी को 138,330डालर का पुरस्कार मिला।

प्रस्तुति : दिलीप कुमार सिन्हा

काजोल की शादी से दूसरी अभिनेत्रियां काफी खुश

'प्यार किया तो डरना क्या', 'दुश्मन', 'प्यार तो होना ही था', 'कुछ कुछ होता है' जबरदस्त रूप से हिट हुई तो काजोल ने अब तक के सारे कीर्तिमान बुरी तरह ध्वस्त कर दिए। स्वाभाविक था कि काजोल की इस सफलता के बाद माधुरी, मनीषा, करिश्मा और तब्बू जैसे तमाम अभिनेत्रियां पूरी तरह ठंडी पड़ चुकी थी। उन्हें काजोल की मौजूदगी में उभरने का मौका ही नहीं मिल पा रहा था लेकिन जैसे ही गत माह काजोल ने अजय देवगन के साथ शादी की, दूसरी तमाम अभिनेत्रियां काफी खुशियां मना रही हैं। उनका ख्याल है कि जैसा कि आमतौर पर होता आया है, काजोल भी शादी के बाद फिल्मों से संन्यास ले लेगी लेकिन काजोल ने इस प्रकार की अभी तक कोई घोषणा नहीं की है। हो सकता है कि दूसरी अभिनेत्रियों की यह खुशी क्षणिक साबित हो और काजोल हनीमून मनाने के बाद दुगुने जोश-खरोश के साथ इंडस्ट्री में दुबारा लौट आए।

असलम साबरी: कब्बाली गायिकी में एक मशहुर नाम

सहारनपुर जिले के अम्बेटा कस्बे में जन्में असलम साबरी का नाम कव्वाली गायिकी में अनजान नहीं। साबरी साहब देश-विदेश में अपने कला का प्रदर्शन कर चुके हैं तथा कव्वाली में उन्होंने अपनी एक पहचान बना ली है।

राष्ट्रीय विचार पत्रिका के एक प्रतिनिधि से हुई एक बातचीत में उन्होंने कहा कि कव्वाली की हरविद्या से वे प्रभावित हैं। कव्वाली की कई विधाओं में से बंदिश और खानकाही में उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बनाई है। उल्लेख्य है कि बंदिश विधा में शायर के कलाम पर मिसरे जोड़े जाते है। पर खानकाही तकरार के साथ गाया जा सकता है। और इसमें उन मिसरों पर अधिकजोर दिया जाता है जिनमें रूहा नियत ज्यादा होती है।

पत्रिका के प्रतिनिधि को इन्होंने बताया कि उनकी दृष्टि में एक फनकार की समाज में एक उपदेशक और समाज-सुधारक के रूप में लिया जाता है। यह पूछने पर कि आपको किस सख्शियत ने आपको सबसे अधिक प्रभावित किया उन्होंने फनकार मेहदी हसन, बेगम अख्तर और नुसरत फतेह अली खां का नाम लिया।

दुनिया असफलता याद रखती है-नाना पाटेकर

नाना पाटेकर ने फिल्म जगत में अपनी एक अलग पहचान बनायी है। उन्होंने अपना मुकाम **'तिरंगा', 'क्रान्तिवीर, 'अग्निसाक्षी'** आदि फिल्मों से बना लिया है। हालांकि इधर उनकी कुछ फिल्में असफल रहीं, इन असफलता से वे पीड़ित हैं मगर उनके उत्साह और हौसले कमजोर नहीं हुए हैं।

उनसे बातचीत का एक अंश-

'फिल्म 'वजूद' की असफलता के क्या कारण हैं?

पता नहीं। असफलता की चर्चा में वक्त खराब होता है। जो हो गया-हो गया, जो खो गया-खो गया। आगे क्या कुछ बेहतर हो सकता है, वही मुझे करना है। उसकी चर्चा करें।

असफलता से घबराहट होती है ?

माना फ्लॉप कई फिल्में हुई हैं पर कुछ सफल भी तो हुई हैं। मगर उनकी चर्चा से प्रोत्साहित करने के बजाय असफलता दिखाकर हतोत्साहित करने की कोशिश अच्छी नहीं लगती। दुनिया असफलता याद रखती है, सफलता भूल जाती हैं बड़ी बेदर्द है यह। असफलता से आदमी सतर्क और शक्तिशाली होता हे, मगर लोग कुछ और ही सोचते हैं।

स्व.मजहर खान की फिल्म 'गैंग' से कितने उम्मीदें हैं ?

फिल्म काफी अच्छी है। आतंकवाद पर आधारित है। समाज की काली कारगुजारियों को उजागर किया गया है। फिर वही न्याय-इंसाफ का संघर्ष। मजहर खान की महत्वाकांक्षा सराहनीय हैं वे एक काबिल निर्देशक थे, जाहिर होता है।

मेहुल कुमार जैसे फ्लॉप निर्देशक की 'कोहराम' से कितनी आशा हे?

'मृत्युदाता' की असफलता से मेहुल कुमार एक फ्लॉप निर्देशक हो गये, यह बात ठीक नहीं है। उन्होंने **'तिरंगा** और **'क्रांतिवीर'** जैसी ऐतिहासिक फिल्में इंडस्ट्री को दी हैं। उन्हें एक कामयाब निर्देशक माना जाता है **'मृत्युदाता'** लोगों को पसंद नहीं आयी वह अलग बात है लेकिन 'कोहराम' उससे अलग तरह की फिल्म है। मुझे उम्मीद है कि यह फिल्म लोगों को पसंद आयेगी।

इस उम्मीद की वजह यह तो नहीं कि आप उनके चहेते स्टार हैं?

ऐसी बात नहीं है। पूरी इंडस्ट्री मेहुल की कायल है। मेहुल **'कोहराम'** पेश कर रहें हैं जो फिर एक बेहतरीन फिल्म साबित होगी और उनकी पहचान और पुख्ता होगी। देशभक्ति के संदर्भ में यह फिल्म मील का पत्थर साबित होगी। फिर अमितजी भी दमदार कैरेक्टर में हैं।

अमितजी भी तो फ्लॉप साबित हो चुके हैं?

अमिताभ जैसे अभिनेता फ्लॉप नहीं हुआ करते, फिल्म फ्लॉप होती हैं। लोगों के चाहने, न चाहने से अभिनय फ्लॉप थोड़े ही होता है। व्यावसायिक स्तर पर अभिनय कला को तौलने लगते हैं लोग, यह मूल्यांकन बिलकुल गलत है। अमिताभ जी 'कोहराम' में बहुत खूबियां लेकर आ रहे हैं।

उनके साथ आप पहली बार काम कर रहें हैं, कैसा लगा?

बहुत सधे-सुलझे इंसान व कलाकार हैं वे। समयनिष्ठता और व्यवहार कुशलता नये कलाकारों को उनसे सीखनी चाहिये।

आपको लोग सनकी मानते हैं, इस बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?

सनकी माना जाता हूं तो मैं इस बारे में क्या कहूं। मैं मूडी जरूर हूं। गलत बातें-व्यवहार मुझे पसंद नहीं। मैं हर मामले में गंभीरता-कर्तव्यनिष्ठता पसंद करता हूं। समर्पण हर क्षेत्र में जरुरी है जो मुझे सख्ती से पसंद है।

आप तो निर्देशन में भी दक्ष हैं। 'प्रहार' के बाद आपकी महत्वाकांक्षी फिल्म 'यज्ञ' का क्या हुआ ?

फिल्म काफी लेट हो गयी पर प्रोसेस जारी है।मौका आते ही वह काम भी करुंगा। मगर अभी निर्देशन पर ध्यान नहीं है। कुछ और फिल्में हैं जिन्हें बेहतर अंजाम देना है। फिर सोचा जायेगा..।

स्टेज से लेकर फिल्मों तक काफी अनुभव रहे हैं आपके, फिल्मवाले आपको कैसे लगते हैं?

मेरी दृष्टि से अधिकांश फिल्मवाले मतलबपरस्त, मौकापरस्त हैं। यहां सच्चे, ईमानदार लोग ढूंढ़ने से नहीं मिलते, शायद कभी कोई मिल गया तो मिल गया।

आप खुद को सच्चा-ईमानदार मानते हैं?

बिल्कुल, तभी तो शिकायत कर रहा हूं।

रा०वि०प्रतिनिधि, मुम्बई

महंगाई + भत्ता = महंगाई

❑सुभाष अखिल

बहुत दिनों के बाद पंडित जी की दुकान पर जाना हुआ। लगातार बढ़ती महंगाई की मार जब घर के बजट पर पड़ी, तब पत्नी ने घरेलू अध्यादेश जारी करते हुए तत्काल प्रभाव से हमारे सारे वित्तीय अधिकार अपने हाथ में ले लिए। इसके बाद, जो आम आदमी के भाग्य में होता है, वही हुआ। उन्होंने जब अपने घर का बजट सदन में रखा, तो पान के बीड़े पर वित्तमंत्री के से शायराना अंदाज में कहा, 'क्यूं खाए सैंया पान, तेरे होंठ तो यूं ही लाल !'

सो, पहला कहर हमारे पान पर गिरा। दूसरी शायराना टिप्पणी उन्होंने हमारे बेफिक्री वाले स्वभाव पर की, 'हर फिक्र को धुएं में उड़ाता चला गया. ....' और इस तरह हमारे ये दोनों ही शौक विलासिता की श्रेणी में रख दिये जाने के कारण उन्होंने अपने बजट में इसके लिए कोई प्रावधान नहीं रखा। लिहाजा, पान वाले पंडित रमाशंकर पांडे से हमारी दूर की राम-राम रह गई।

वो तो भगवान भला करें सरकार का कि पे कमीशन की रिपोर्ट आ गई और वेतन में कुछ इजाफा हो जाने के बाद हमारे पान और सिगरेट की मद से भी कुछ पैसा सैंक्शन कर दिया गया। इस तरह पंडित जी भी पिछले कुछ दिनों से हमें फिर अपने काम का आदमी समझने लगे हैं और गाहे-बगाहे हमें कुछ काम की बातें समझाने लगे हैं। वरना हम तो पंडित जी के पान और ज्ञान दोनों से ही वंचित हो गये थे।

इस बार जब हम पंडित जी की दुकान पर पहुंचे, तो वे सरकार की तरह पान के पत्ते को आम नागरिक समझ कर चूना लगा रहे थे। हमने लटके हुए मुंह को किसी तरह ऊपर उठाकर कहा, 'लगा दीजिए पंडित जी, एक हमारा भी लगा दीजिए.... .पता नहीं इस बार कितने दिनों तक हमारा-आपका साथ चले.....'

'क्यों भाई साहब, ऐसी भला क्या बात हो गई? यहां से कहीं और छोड़कर जा रहे हैं?'

'नहीं, वो बात नहीं। दो पैसे हमारे क्या बढ़ गए, किसी को फूटी आंख नहीं सुहा रहे। बाजार में आलू-प्याज के दाम देखिए, आसमान छूने लगे थे। सब्जी वाले से कहा कि भैया बढ़ा दिए तो बोला-आपके भी तो बढ़े हैं। हमने कहा-महंगाई बढ़ गई थी, हमारे तो इसीलिए बढ़े हैं, तो बोला-जी, हमने भी इसीलिए बढ़ाए हैं....'

गहरी सांस लेकर हमने फिर कहा, 'वो कुछ काबू में हुए तो सरकार ने गेहूं चावल के दाम बढ़ा दिए, गैस महंगी कर दी.....यह सब तो बजट से पहले ही हो गया था।

बजट पर जो मार पड़ी, वह तो आपने देखा ही। आखिर आपको भी सिगरेट-पान के दाम बढ़ाने ही पड़े....अब जैसे-तैसे बजट का बोझ झेलने को तैयार हो रहे थे, तो टेलीफोन की सेवाओं में मूल्य वृद्धि की आहट के बाद तो जो आवाज कभी कभार रिसीवर में ही आ जाती थी और अच्छी भी लगती थी, यह भी अब कान फोड़ती सी सुनाई देती है। यदि बजट के आगे पीछे भी चीजों के दाम बढ़ने ही हैं, तो फिर भला इस बजट का क्या मतलब रह गया?.....'

दिल के फफोले फोड़ते हुए हमने आखिरी आह भरी, "यदि यही हाल रहा तो फिर इसकी गाज हमारे पान-सिगरेट पर ही पड़ेगी। आखिर सरकार ने भी हद कर दी, जो पैसो बढ़ाए , वे महंगाई और इनकम टैक्स के रूप में वापिस वसूल लिए.....'

पंडित जी ने जब मुंह में भरी पीक को उगला, तब हमें समझ में आया कि वे इतनी देर तक हमारी कैसे सुन ले गए। गला खंखार कर बोले, पिछले महीने आपका महंगाई भत्ता बढ़ा था.....वो किसलिए बढ़ा था, इसीलिए तो बढ़ा था कि महंगाई बढ़ी है. .....अब जब भत्ता बढ़ गया,भला महंगाई क्यों नहीं बढ़ेगी.....और यदि महंगाई बढ़ेगी, महंगाई भत्ता भी बढ़ेगा..... आप तो खामहखा परेशान हो रहे हैं भाई साहब ! लीजिए बीड़ा चबाइए और अपने मुंह का जायका सुधारिए..... 'हमने पान मुंह के हवाले किया और सोचते हुए चल दिए कि महंगाई बढ़ने से महंगाई भत्ता बढ़ता है....या महंगाई भत्ता बढ़ने से महंगाई बढ़ती है.....

साभार : राष्ट्रीय सहारा

दिल्ली जाकर हिन्दी भूल गया

एक भारतीय नेता ने मास्को में एक भव्य भवन को देखकर अंग्रेजी में पूछा,-यह क्या है?'

'यही विश्व विख्यात क्रेमलीन है।' रूसी मार्ग दर्शक ने हिन्दी में उत्तर दिया।

'क्या आप हिन्दी जानते हैं?'

'श्रीमान....., जानता था। पर दिल्ली जाकर भूल गयां' दुखी मेन से रूसी नेकहा।

मार्गदर्शक थे रूस भारत मैत्री संघ के मंत्री जिजिन । उनका कहना था जब कोई विदेशी घोर परिश्रम से हिन्दी सीख कर दिल्ली जाता है तो यह देखकर दुख होता है कि दिल्ली में भारतीय भी अंग्रेजी में बातें करते हैं।

शहीद - पहेलियां

1. काशी की कली,
   बिठुर में खिली।
   झांसी की बली,
   लश्कर में थली।
2. अश्व की सवारी,
   भाला ले भारी।
   घास रोटी खाई,
   जारी रखी लड़ाई।
3. आजादी का दीवाना,
   देता मूंछों पर ताव,
   जनमा हड़आ उन्नाव।
4. देकर एक झटका,
   फांसी पर लटका।
   इन्कलाब शोला,
   जिन्दाबाद बोला।
5. स्वदंश के लिये,
   जो मरे वे जिये।
   अंधेरी रात के,
   जगमग बने दिये।
   भई, किन लोगों ने,
   ऐसे काम किये?

उत्तर: 1. झांसी की रानी लक्ष्मीबाई 2. महाराणा प्रताप 3. चन्द्रशेखर आजाद 4. सरदार भगत सिंह 5. भारत के अमर शहीद

ज्ञान पहेली

1. किस देश के झण्डेपर उस देश का मानचित्र बना होता है?
2. किस देश का झण्डा वर्गाकार है?
3. पाकिस्तान के अतिरिक्त किस देश के झण्डे चांद-तारा अंकित है?
4. किन दो देशों के झण्डों पर केवल लाल रंग का गोला बना होता है?
5. संयुक्त राज्य अमेरिका के झण्डे में कितने तारे दिखाये गये है?
6. जलती हुई मशाल किस देश के झण्डे पर अंकित है?
7. किस देश का झण्डा न तो आयताकार है और न ही वर्गाकार?
8. दो आयाताकार पट्टियों से बना झण्डा किस देश का है?
9. किस देश के झण्डे पर शेर बना होता है?
10. इंग्लैण्ड के झण्डे पर बना 'क्रास मार्क' और किन देशों के झण्डों पर अंकित है?

उत्तर- 1. साइप्रस, 2. स्विटजरलैण्ड, 3. तुर्की 4. जापान, बंगलादेश, 5. पचास, 6.जैरे, 7. नेपाल, 8. इण्डोनेशिया, 9.श्रीलंका और 10. आस्ट्रेलिया,न्यूजीलैण्ड।

दिमागी-कसरत

मैकमिलन ने एक युक्ति बनाई,
दो पहियों पर सैर कराई ।1।
एडीसन ने कमाल दिखाए
चलते फिरते चित्र दिखाये ।2।
जिसने एक बटन दबाया,
फोटो खिंचकर सामने आया ।3।
सिर है, दुम है, मगर पांव नहीं
पेट है, आंख है,मगर कान नहीं।4।

उत्तर: 1.साइकिल 2.सिनेमा 3.कैमरा 4.सांप।

प्रस्तुति : कुसुम व अंजली

DENSA

PHARMACEUTICALS PVT. LTD.

8954777 (O)
544471 (R)

Office :
Anurag Mansion, Shiv Vallabh Road
Ashok Van, Dahisar (East, Mumbai - 400 068

Factory :
Plot No. 10, Dewan & Sons, Udyog Nagar, Palghat, Distt. - Thane
Mumbai (Maharashtra)

त्रिमूर्ति अलंकार

त्रिमूर्ति पैलेस (रूपक सिनेमा के पूर्व)
बाकर गंज, पटना-८०० ००४
दूरभाष : ६६२८३७

त्रिमूर्ति ज्वेलर्स

बाईपास रोड, चास (बोकारो)
दूरभाष : ६५७६९, फैक्स : ६५१२३

आधुनिक आभूषण के निर्माता
नए डिजाइन, शुद्ध सोने चाँदी तथा
हीरे के गहनों का प्रमुख प्रतिष्ठान

परीक्षा प्रार्थनीय
सुरेश, राजीव एवं सूनील

GOLDEN POLYMEX (INDIA) LIMITED

Regd. Office :
Uma Shanker Lane, Mogalpura, Patna City-800008
Ph. : 640212, 640015, Fax : 0612-644525

Mfrs. Of :

High Barrier - Extruded Multilayar Films
H.M., LLDPE, LDPE Bags, Gravure
&
Flexo Printing etc.

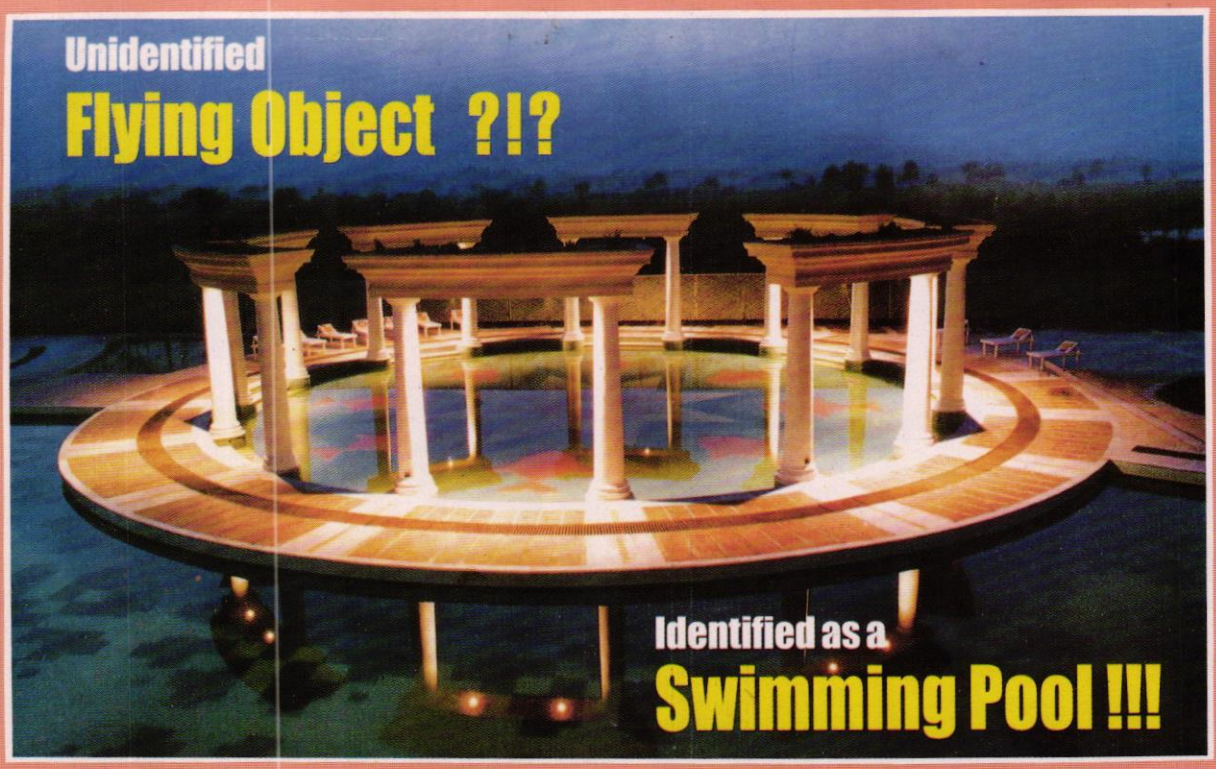

Yes, you are looking of a tiny portion of the magnificent state-of-the-art over 12,000 sft. Swimming Pool complex of the Lake Land Country Club.

Membership	Valid for life in case of an individual and 25 years for Corporate members. Not transferable for individual members but transferable for Corporate members within the corporate body.
Additional Membership	Children above 18 years of age and the dependent parents of the member are eligible for additional membership.
Annual Subscription	A subscription of Rs. 150/- per month will be charged from members and will be payable on an annualised basis from April 1, 1998.
Accommodation	2 nights free accommodation per year, life long for members and family. Discount and attractive schemes on room and food & beverages for the member and the family.
Sports Leisure Facilities	The following sports and leisure facilities will be available for the member and their guests • Department Store • Cards Room • Snookers • Library • Video Room • Fully Equipped health Club/gymnasium • Carrom • Table Tennis • Squash • Badminton • Golf with 18 hole putting green • Cycling • Jogging trail • Horse Riding • Childrens Park • Arts & Crafts Village • Forest Area • Comping Tents • Picnic Kiosks • Fishing Beach Area • Complete Aqua-park with Swimming Pool, Speed Boats, Water Scooters etc. and many more...
Food Beverages	Two restaurants with bars and a pool-side bar.
Conference facilities	Full-fledged conference facilities will be enjoyed by the members on a special discount.
Executive Business Centre	Equipped with all modern communication and business facilities with independent cabins and board rooms for meetings. The members will enjoy special discounts on usage of these facilities.
Health Club	Modern spa with locker rooms, sauna, steam, jacuzzi, fitness room, fully equipped gymnasium, aerobic room, yoga, health food boutique & restaurants, beauty parlour, crech-all will be available to the members at a special discounted rate.
Additional facilities	The club will continuously add new facilities for the use of the members. Members will be kept informed about additions to the club and other news of the club through its quarterly Club Newsletter, 'The lake Land News.

The list of facilities may be changed from time to time and it is at the discretion of the management to do so. The Club is operational and more than 1500 satisfied and happy members are enjoying it. Why don't you come over and have a look and feel the ambience? You would love to be proud member of the Lake Land Country Club.

A brand owned by Country Hospitality Corporation, USA, a part of Carlson Hospitality Group which also owns major hospitality brands like Raddisson Hotels Worldwide, Regeant Hotels & TGI Fridays.

COUNTRY INN & SUITES BY CARLSON

A Cozy Stay At A Comfortable Price®

The Lake Land® COUNTRY CLUB

P.O.& Vill. Munshidanga, Off Kona Expressway, Dist. Howrah 711 403 W.B.

A gentleman's club, as well as the gracious lady's.

Developers :

Panchwati Holiday Resorts Limited

Marketing Office : 27 Shakespeare Sarani 5th Floor Calcutta 700 017 Phone : 2405981 2805703/3419 Fax : 2409822/0168